25TH
रजत जयंती अंक

ऋतम्भरा

अंक - 25 शैक्षिक सत्र 2021-22

D.P.B.S. (P.G.) COLLEGE
तमसो माँ ज्योतिर्गमय
स्थापित 1965
ANOOPSHAHR-203390 (U.P.)

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह (पी.जी.) कॉलेज

अनूपशहर–203390 (बुलन्दशहर) उ.प्र.
(सम्बद्ध – चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
(NAAC ACCREDITED COLLEGE WITH CGPA 2.71)
www.dpbspgcollege.in | dpbsprincipal@gmail.com | Ph. 7895005734

ऋतम्भरा

अंक - 25 शैक्षिक सत्र 2021-22

वन्दना

हे हंस वाहिनी ज्ञान-दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे।।
जग सिरमौर बनायें भारत,
वह बल विक्रम दे, अम्ब विमल-मति दे।।
साहस शील हृदय में भर दे,
जीवन त्याग तपोमय कर दे।।
संयम सत्य स्नेह का वर दे,
स्वाभिमान भर दे, अम्ब विमल-मति दे।।
लव-कुश ध्रुव प्रहलाद बनें हम।
मानवता का त्रास हरें हम।
सीता सावित्री दुर्गा माँ,
फिर घर घर भर दें, अम्ब विमल-मति दे।।
हे हंस वाहिनी ज्ञान-दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे।।

सम्पादक मण्डल

बाँये से दांये (बैठे हुए) : डॉ. भुवनेश कुमार, डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह, डॉ. चन्द्रावती, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य), डॉ. सीमान्त कुमार दुबे, श्री लक्ष्मण सिंह

बाँये से दांये (खड़े हुए) : नेहा (बी.कॉम. द्वितीय वर्ष), मोनिका सिंह (बी.ए. द्वितीय वर्ष), खुशबू शर्मा (बी.एस-सी. तृतीय वर्ष)

ISBN : 978-81-956074-5-7

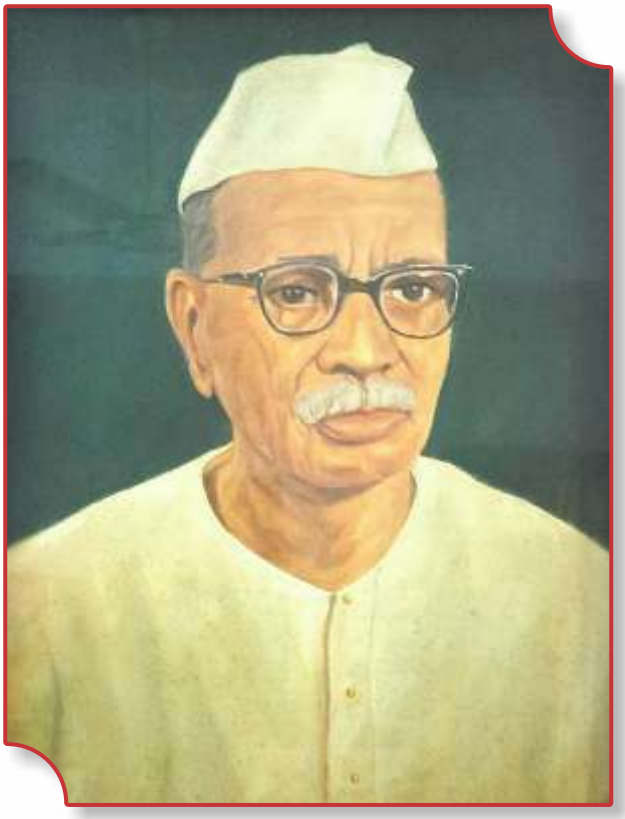

श्रद्धेय स्मृतिशेष श्री दुर्गा प्रसाद जी

श्रद्धेय स्मृतिशेष श्री बलजीत सिंह जी

श्रद्धेय स्मृतिशेष श्री भगवती प्रसाद गर्ग

हे कर्मनिष्ठ, हे धर्मनिष्ठ
तुम शासन प्रिय हे सेनानी,
तुम सदा कर्म में लीन रहे,
सबके हित के तुम कल्याणी।
तुम मरकर भी हो अमर सदा,
जन-जन के हो तुम महाप्राण,
हम श्रद्धांजलि करते हैं अर्पित,
शत-शत नमन, शत-शत प्रणाम।

A source of Eternal Inspiration
Shri Jaiprakash Gaur Ji,
Founder Chairman, Jaypee Group
Managing Trustee, Jaiprakash Sewa Sansthan
President, Anglo Vedic Educational Association

On the path of progress, education is the medium that can allow our country to not only conserve its culture but also ignites the minds of our young countrymen and empowering them to be at par with the citizens of other developed countries. Science & Technology in the 21st Century will unleash a revaluation of progress that is beyond our imagination today and which will transcend the limits of planet Earth to enable human beings to begin their tryst with the infinite universe.

We are determined to provide quality education to our students through the most modern educational institutions to make them financially empowered while shaping them into self reliant and confident citizens of modern India.

These institutions would strive to inculcate discipline and character building along with serious pursuit of knowledge, utilizing the most advanced teaching practices and high moral standards so that our teachers and students can stride forward and see the transformation of their country into an advanced nation within their lifetime.

Ja Prakash Gaur

Jaiprakash Gaur

महाविद्यालय प्रबन्ध कार्यकारिणी

श्री अजय गर्ग
(अध्यक्ष)

डॉ. सुधीर कुमार
(उपाध्यक्ष)

श्री एस.पी.एस. तौमर
(सचिव)

श्री सुनील कुमार गुप्ता
(संयुक्त सचिव)

श्री के.पी. सिंह
(कोषाध्यक्ष)

श्री राजीव कुमार अग्रवाल
(आन्तरिक लेखा परीक्षक)

डॉ. के.पी. सिंह
(सदस्य)

कमा. एस.जे. सिंह
(सदस्य)

श्रीमती मनिका गौड़
(सदस्या)

प्रो. गिरीश कुमार सिंह
प्राचार्य (पदेन)

श्री यजवेन्द्र कुमार
(शिक्षक प्रतिनिधि)

श्री लक्ष्मण सिंह
(तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि)

सत्यमेव जयते

भारत के उपराष्ट्रपति
Vice President of India

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश द्वारा अपनी स्थापना का 56वां वर्ष मना रहा है, तथा इस अवसर की अमिट स्मृतियों को संजोने के उद्देश्य से अपनी वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के 'रजत जयंती अंक' (2021–22) का प्रकाशन भी किया जा रहा है, जो कि एक सराहनीय प्रयास है।

वस्तुतः विनय की दात्री शिक्षा, मानव के विकास की प्रथम साधिका है। यह साधन अन्यतम है व इसका कोई विकल्प विद्यमान नहीं होता। मानव को मानव की संज्ञा का आधार शिक्षा ही है। यद्यपि शिक्षा के आयाम अनन्त हैं, तथापि किसी विशेष कौशल की अवाप्ति स्वयं में शिक्षा की एक विशिष्ट उपलब्धि होती है।

अत एव मैं दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश के समस्त पदाधिकारियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ तथा इस प्रकाश्यमान वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के **'रजत जयंती अंक'** हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

नई दिल्ली,
07 दिसम्बर, 2021

(एम. वेंकैया नायडु)

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ – 226 027

09 दिसम्बर, 2021

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर अपनी वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के रजत जयंती अंक का प्रकाशन कर रहा है।

महाविद्यालय पत्र–पत्रिकाएँ विद्यार्थियों की साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने के उद्देश्य से प्रकाशित की जाती हैं। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में विद्यार्थियों के ज्ञानोपयोगी तथा शोध परक ऐसे लेखों का प्रकाशन किया जायेगा जो छात्र–छात्राओं तथा अन्य जनमानस के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522–2236497 फैक्स : 0522–2239488 ईमेल : hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

MANOJ GAUR
Executive Chairman

JAIPRAKASH
ASSOCIATES LIMITED

31 जनवरी, 2022

सन्देश

माँ गंगा के पावन तट पर स्थित अनूपशहर प्राचीन समय से ही शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। नगर में 1965 से स्थापित दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय अपनी उत्कृष्ट शैक्षिक परंपरा के अनुरूप इस वर्ष वार्षिक पत्रिका **ऋतंभरा** का रजत जयंती अंक प्रकाशित कर रहा है। विगत लगभग दो वर्षो से संपूर्ण विश्व कोरोना की विभीषिका से भयाक्रांत है, ऐसे में हम सभी को उत्कष्ट एवं प्रेरित करने वाले विचार, व्यक्तित्व, साहित्य एवं घटनाऐं ही सबल प्रदान करती हैं। यह पत्रिका भी जीवन में सकारात्मकता की उत्तरोत्तर वृद्धि करने वाले ज्ञानवर्धक आलेखों, रचनाओं एवं समसामयिक घटनाओं को अपने में समाहित किए होगी, जिससे यह पत्रिका विद्यार्थियों के लिए ही नहीं वरन समाज के लिए भी पथ प्रदर्शक का एक साधन बन सकेगी।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पूर्व के अंकों की तरह यह रजत जयंती अंक भी अपने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होगा। मैं इस अवसर पर प्राचार्य, संपादक मंडल, शिक्षकों, शिक्षणोत्तर कर्मचारियों एंव छात्र छात्राओं को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अग्रिम शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

सधन्यवाद।

मनोज गौड

प्राचार्य
दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अनूपशहर, जिला–बुलन्दशहर

JAYPEE GROUP

Regd. Office : Sector-128, Noida - 201304 Uttar Pradesh (India)
Ph. : +91 (120) 4963100 Fax : +91 (120) 4972777, 4972160
Corporate Office : 'JA House', 63, Basant Lok, Vasant Vihar, New Delhi - 110 057 (India)
Ph. : +91 (11) 49828500 Fax : +91 (11) 26145389
CIN : L14106UP1995PLC019017 Website : www.jalindia.com

धर्मेन्द्र प्रधान
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

मंत्री
शिक्षा कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश शैक्षणिक क्षेत्र में सक्रियता से कार्य करते हुए अपनी वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** का रजत जयंती अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर, आत्मज्ञान, आत्मसंयम और आत्मत्याग के गुणों से सम्पन्न नौजवान पीढ़ी की रचनात्मक ऊर्जा को यदि देश की तरक्की की दिशा में लगाया जाए तो राष्ट्र को एक नए मुकाम तक पहुंचाया जा सकता है। युवावस्था ही वह समय है जब योजनाओं और विकास कार्यों को युवाओं द्वारा ही सर्वोत्तम रूप से लागू किया जा सकता है। उत्साही और ऊर्जावान युवा न केवल आज के साथी हैं बल्कि भविष्य के नेता भी हैं। ये सीखने, कार्य करने और प्रगति करने के लिए ऊर्जा और उत्साह से भरे हैं। युवा वास्तव में सामाजिक अभिनेता हैं जो समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन और सुधार ला सकते है। यदि हम विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वित्त, स्वास्थ्य एवं नवाचार के क्षेत्रों में प्रगति हासिल करना चाहते हैं तो युवाओं की उत्साही और ईमानदारी भागीदारी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जीं गरिमामयी नेतृत्व एवं सुचिंतित मार्गदर्शन में हम एक ऐसे नये भारत का निर्माण करने के लिए कृत–संकल्पित हैं जो स्वच्छ, स्वस्थ, सुशिक्षित, श्रेष्ठ एवं आत्मनिर्भर भारत हो तथा ऐसे भारत की आधारशिला के रूप में हमने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' को संस्तुति प्रदान की है। माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व एवं सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ही.के. कस्तूरीरंगन जी के मार्गदर्शन में 34 वर्षों के लम्बे अंतराल के बाद आई हमारी नई शिक्षा नीति को शिक्षक से लेकर शिक्षाविद् तक तथा छात्र से लेकर अभिभावक तक एक अद्भुत स्वीकार्यता मिली है, जो इसे 21वीं सदी के नाए भारत के 'विजन डॉक्यूमेंट' के रूप में स्थापित करती है। इस नीति में हर भारतीय की आकांक्षाएँ हैं, स्वप्न हैं और एक दूरगामी सोच है जो हिंदुस्तान को विश्व पटल पर 'ज्ञान की महाशक्ति' के रूप में स्थापित करेगी।

मुझे आशा है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलंदशहर की वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** विद्यार्थियों की रचनात्मकता को एक बेहतरीन मंच प्रदान करेगी। मैं पत्रिका के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के प्रशासन, सम्मिलित रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह
अध्यक्ष
Prof. D. P. Singh
Chairman

सत्यमेव जयते

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
शिक्ष मंत्रालय, भारत सरकार
University Grants Commission
Ministry of Education, Govt. of India

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश सत्र 2021–22 में अपनी वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** का पच्चीसवाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

वार्षिक पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय के विद्यार्थियों को अपनी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही महाविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों और उपलब्धियों का भी इस पत्रिका में समावेश किया जायेगा। मैं आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक विद्यार्थी एवं शिक्षकगण इसमें अपनी सहभागिता सुनिश्चित करेंगे तथा अपने विचारों से समाज व राष्ट्र को नई दिशा देने में अग्रणी भूमिका निभाएंगे।

इस अवसर पर मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ. जी.के. सिंह, प्रबंधन के सदस्यों, शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों तथा सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

06 दिसम्बर, 2021

(धीरेन्द्र पाल सिंह)

चन्द्र प्रकाश सिंह
आई.ए.एस.
जिलाधिकारी/जिला मजिस्ट्रेट
बुलन्दशहर

उत्तर प्रदेश सरकार

(कार्या.) : 05732–280351
(आ.) : 05732–231343
(फैक्स) : 05732–280298
(मोबाइल) : 9454417563
(ई–मेल) : dmbul@nic.in
जिलाधिकारी कार्यालय
बुलन्दशहर–203001 (उ.प्र.)
अ.शा.प.सं.: 1085/ST. DM
दिनांक : 27–11–2021

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश अपनी वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' के रजत जयंती अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि महाविद्यालय स्थापना के रजत जयंती के अवसर पर इस पत्रिका का अंक विशिष्ट होगा। वस्तुतः महाविद्यालय पत्रिका महाविद्यालय की एक जीवन्त दस्तावेज़ होती है, जिसमें प्रगामी शैक्षिक–सत्र की विविध गतिविधियाँ, स्मृतियाँ एवं रचनाधर्मिता न केवल शब्दों, अपितु सचित्र रूप में संचित होती हैं। मुझे आशा है कि यह पत्रिका महाविद्यालय की नवोदित प्रतिभागों को उनकी साहित्यिक अभिरूचि की अभिव्यक्ति का सुअवसर प्रदान करेगी तथा सभी के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं संग्रहणीय सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. जी.के. सिंह (प्राचार्य)
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर–203390

(चन्द्र प्रकाश सिंह)

(05734) 275450

Durga Prasad Baljeet Singh (P.G.) College

Mahashay Durga Prasad Marg. ANOOPSHAHR (Bulandshahr) U.P. 203390

Website : www.dpbscollegeanoopshahr.org Email : mails_principaldpbs@rediffmail.com

N A A C Certification Grade- B (CGPA 2.71)

15-12-2021

अजय गर्ग

अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

संदेश

मैं महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के रजत जयंती संस्करण के लिए महाविद्यालय परिवार को कोटि– कोटि शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ। आत्मीय बंधुओं यह अवसर हमारी गौरवमयी शैक्षणिक परम्परा को आगे बढ़ाते हुए समाज की प्रगति में योगदान देने का है। हमें यह समझना आवश्यक है कि जीवन का वर्तमान समय अनेक संघर्षों और चुनौतियों से भरा हुआ है। भारत के जिम्मेदार नागरिक होने के कारण हमें अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए आशा भरी निगाहों से देख रहे सम्पूर्ण विश्व को राह दिखानी होगी। अतः मैं महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों से आह्वान करता हूँ कि वे सभी उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे, जिससे महाविद्यालय नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा। मैं पत्रिका के रजत जयंती संस्करण की सफलता के लिए सम्पादक मण्डल को अनंत शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

Ajay Garg

(अजय गर्ग)

डॉ. के. पी. सिंह

सचिव, प्रबन्ध समिति

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर इस वर्ष अपनी वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** का रजत जयंती अंक (पच्चीसवां अंक) प्रकाशित कर रहा है। महाविद्यालय द्वारा छात्र/छात्राओं को मानसिक एवं बौद्धिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु किया जा रहा प्रयास सराहनीय है। मुझे पूर्ण आशा है कि इस विशेष अंक में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा रचित लेखों के साथ–साथ उनके द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्यो का विवरण भी प्रस्तुत किया जायेगा, जिससे यह पत्रिका ज्ञानवर्धक, रोचक के साथ मनोरंजक भी होगी।

राष्ट्र के सशक्तिकरण में उच्च शिक्षा का विषेश महत्व है। हमारा महाविद्यालय उच्च शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय अपने दायित्व का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी व लगन से करता रहेगा।

मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों, कर्मचारियों व विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

28-12-2021

(डॉ. के.पी. सिंह)

प्राचार्य का उद्‌बोधन

हम सभी को अपनी विश्वबंधुत्व इत्यादि उदात्त भावनाओं से सम्पूर्ण विश्व में अग्रणी, ऋषियों द्वारा प्रदत्त सार्वकालिक और सार्वभौमिक परंपराओं को सहेजते हुए, भारतवर्ष के गुण गौरव और ज्ञान–विज्ञान की सम्वृद्धि हेतु प्रयास करना चाहिए। वर्तमान समय में प्राणिमात्र के जीवन की समस्याओं, चुनौतियों और संकटों के समाधान हेतु भारतीय जीवन शैली के अंग यथा योग, आयुर्वेद और स्थानापन्न जीवन शैली इत्यादि को समस्त विश्व ने सहर्ष स्वीकार किया है। आज इन क्षेत्रों में निरंतर अनुसंधानात्मक दृष्टिकोण की महती आवश्यकता दृष्टिगोचर हुई है। महाविद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने के बाद यह अनुभव हुआ कि विद्यार्थी अपने गुरुजनों के मार्गदर्शन में अनुशासन का पालन करते हुए जीवन में आने वाली ऐसी चुनौतियों का समाधान करने में तुलनात्मक रूप से अधिक सक्षम हैं। यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि विद्यार्थी, माता–पिता और गुरुजनों का आदर करते हुए धैर्य– विवेक और दृढ़ इच्छाशक्ति जैसे सद्‌गुणों से युक्त होकर, भविष्य में अच्छे समाज का निर्माण करते हुए भारत देश की प्रगति में सहायक होंगे।

मैं महाविद्यालय परिवार के सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का आभारी हूँ, जिन्होंने कोरोना महामारी जैसी विषम परिस्थितियों में भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन हेतु ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यमों से अध्ययन–अध्यापन और शिक्षण–प्रशिक्षण की प्रक्रिया को जारी रखा। महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना और राष्ट्रीय कैडेट कोर इकाई के सभी स्वयंसेवकों/कैडिटों को, सरकार की ओर से चलाये गए विभिन्न कार्यक्रमों/अभियानों का सफलतापूर्वक संचालन करके जन जागरूकता लाने के लिए, हृदय से बधाई देता हूँ। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'ऋतंभरा'** के रजत जयंती संस्करण के लिए महाविद्यालय परिवार और सभी सम्बद्ध जनों को कोटि कोटि शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ ।पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को अग्रिम अनंत अशेष मंगलकामनाएँ।

(प्रो. गिरीश कुमार सिंह)
प्राचार्य

प्रधान सम्पादिका की कलम से...

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका **'ऋतंभरा'** का रजत जयंती संस्करण आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए सुखद अनुभूति का अनुभव कर रहा है। यह पत्रिका महाविद्यालय के छात्रों और प्राध्यापकों को बौद्धिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हुए उनके आलेखों, कृतियों, ज्ञान, प्रतिभा और विचारों को समाज तक पहुंचाने का अवसर प्रदान करती है। पिछले दो वर्षों में कोरोना महामारी के दौरान मैंने अनुभव किया कि भारत के युवाओं में रोजगार प्राप्ति की दृष्टि से बड़ी निराशाजनक स्थिति उत्पन्न हो गई है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए आज समाज को गरीब परिवार से निकले लाल बहादुर शास्त्री और अब्दुल कलाम जैसे परिश्रमी, दूरदृष्टा और देश के लिए समर्पित सोच रखने वाले लोगों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है, जिससे आशावादी लेखन और सकारात्मक दृष्टिकोण से समाज की नकारात्मकता खत्म हो। आज भूमंडलीकरण के युग में हमें अपने व्यक्तित्व और शिक्षा के स्तर को विश्वस्तरीय बनाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का सही क्रियान्वयन ईमानदारी, पूर्ण लगन और निष्पक्षता से किया गया तो यह भारत की प्रतिभाओं को निखारने की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होगी। प्राचार्य प्रोफेसर जी.के. सिंह के मार्गदर्शन में सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार सीमित संसाधनों के होने पर भी पूर्ण मनोयोग, निष्ठा और लगन से राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सफलता के लिए प्रयासरत है। वर्ष भर की शैक्षणिक व सहशैक्षणिक गतिविधियों और उपलब्धियों की स्मृतियों को चित्रों के रूप में और प्राध्यापकों व विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धक और मनोरंजक लेखों से अन्वित **'ऋतम्भरा'** का यह रजत जयंती संस्करण निश्चित रूप से अद्वितीय और अनुपम रहेगा।

यह रजत जयंती संस्करण महाविद्यालय प्रबंध समिति के उन सभी महानुभावों को समर्पित है, जिन्होंने इस महाविद्यालय की तन, मन और धन से सेवा करके इसकी विकास यात्रा को गौरवान्वित करते हुए इसको भव्य और दिव्य स्वरूप प्रदान किया है। प्रधान संपादिका के रूप में सर्वप्रथम ज्ञान और बुद्धि के दाता उस ईश्वर के श्री चरणों में प्रणाम करके धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। अपने शुभकामना संदेशों के द्वारा हमारा मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन करने वाले सभी वरिष्ठ जनों का सम्मान पूर्वक धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। महाविद्यालय के नवनियुक्त प्राचार्य प्रोफेसर जी.के. सिंह को सदैव सकारात्मक सहयोग के लिए विशेष धन्यवाद प्रकट करती हूँ। पत्रिका के लिए अपने मौलिक विचारों से युक्त ज्ञानवर्धक लेख प्रेषित करने वाले सभी सम्मानित सदस्यों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके अथक परिश्रम और सहयोग से यह पत्रिका मौलिक रूप में प्रकाशित हो रही है, ऐसे संपादक मंडल के सभी सदस्यों को हृदय से धन्यवाद देती हूँ और अंत में श्री नवमान ऑफसैट प्रिंटर्स, अलीगढ़ के प्रबन्धक श्री विजय प्रकाश नवमान को उत्तम और समयबद्ध मुद्रण कार्य हेतु धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। वाग्देवी सरस्वती की अनुपम, असीम कृपा से **'ऋतंभरा'** का यह रजत जयंती संस्करण पाठकों को सकारात्मक ऊर्जा से सराबोर करते हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करने में सहयोग करेगा, इस विश्वास के साथ पाठकों के पठनार्थ **'ऋतंभरा'** का नूतन अंक प्रस्तुत है।

Chandrawati

(डॉ. चन्द्रावती)
(प्रधान सम्पादिका)

प्राध्यापक मण्डल

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : डॉ. के.सी. गौड़, डॉ. भुवनेश कुमार, डॉ. सीमान्त कुमार दुबे, डॉ. चन्द्रावती, डॉ. पी.के. त्यागी, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य) डॉ. यू.के. झा, डॉ. आर.के. अग्रवाल, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री पंकज कुमार गुप्ता, श्री यजवेन्द्र कुमार।

खड़े हुए (प्रथम पंक्ति) : डॉ. वीरेन्द्र कुमार, डॉ. विशाल शर्मा, डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह, श्री देव स्वरूप गौतम, कु. निशा राजपूत, डॉ. जागृति सिंह, डॉ. सुधा उपाध्याय, डॉ. सुनीता गौड़, श्रीमती ममता शर्मा, डॉ. तरूण बाबू, श्री सचिन अग्रवाल, श्री मयंक शर्मा।

खड़े हुए (द्वितीय पंक्ति): श्री गुरूदत्त शर्मा, श्री पंकज प्रकाश, श्री योगेश कुमार, श्री ललित शर्मा, श्री साहिल चौधरी, श्री चन्द्र प्रकाश, श्री गौरव जैन, श्री योगेन्द्र कुमार, डॉ. घनेन्द्र बंसल, डॉ. राजीव गोयल, श्री सत्य प्रकाश गौतम।

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण

(तृतीय श्रेणी)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री दीपक कुमार शर्मा, श्री सुनील कुमार, श्री अनिल कुमार अग्रवाल, श्री सुनील कुमार गर्ग, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य) श्री के.के. श्रीवास्तव, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री पंकज शर्मा।

बाँये से दाँये (खड़े हुए) : श्री जितेन्द्र कुमार, श्री आशीष कुमार, श्री सुरेश रावत, श्री पारस, श्री चन्द्रपाल सिंह।

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण

(चतुर्थ श्रेणी)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री विजय पाल सिंह, श्री महेश चन्द्र, श्री अमरनाथ राय, श्री सुनील कुमार निर्मल, श्री नारायण देव मिश्रा, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य) श्री डम्बर सिंह, श्री गजेन्द्र सिंह, श्रीमती पार्वती, श्री राम अवतार, श्री मान सिंह।

बाँये से दाँये (खड़े हुए) : श्री सुन्दर पाल, श्री राजू, श्री साहब सिंह, श्री जितेन्द्र कुमार, श्री सुबोध कुमार, श्री सोनू कुमार, श्री राम बाबू, श्री त्रिलोक चन्द, श्री नेत्रपाल, श्री नितिन कुमार, श्री योगेश कुमार, श्री जगदीश कुमार।

अनुशासन समिति

बाँये से दाँये : डॉ. विशाल शर्मा, डॉ. सीमान्त कुमार दुबे, डॉ. आर.के. अग्रवाल, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य) डॉ. पी.के. त्यागी, डॉ. चन्द्रावती, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री के.के. श्रीवास्तव।

क्रीड़ा समिति

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री गुरूदत्त शर्मा, श्री विशाल शर्मा, डॉ. सीमान्त कुमार दुबे, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य), डॉ. पी.के. त्यागी डॉ. चन्द्रावती, श्री मयंक शर्मा।

बाँये से दाँये (खड़े हुए) : शौर्य रस्तोगी (बी.कॉम, तृतीय वर्ष), मोनिका सिंह (बी.एड., द्वितीय वर्ष), केशव कान्त शर्मा (बी.सी.ए. प्रथम वर्ष)

सत्र 2021–2022 के प्रतिभाशाली विद्यार्थी

अनमोल कुमार
एम.एस–सी. (भौतिकी)
67.4%

मोहिनी सैनी
एम.एस–सी. (रसायन)
75.60%

विपुल पाठक
एम.ए. (संस्कृत)
77.1%

अंचल अग्रवाल
बी.एस–सी.
75.80%

तहरीम सैफी
बी.कॉम.
74.60%

अनुराधा शर्मा
बी.ए.
72.73%

अनामिका सिंह
बी.एड.
89.14%

नरेश चन्द्र शर्मा
बी.एस–सी.
82.60%

चेतन गुप्ता
बी.कॉम. (प्रथम वर्ष)
प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
जनपद स्तर (प्रथम स्थान)
मण्डल स्तर (द्वितीय स्थान)

अनुक्रमणिका

हिन्दी : लेख एवं कवितायें

क्र. सं.	विषय	लेखक का नाम	पद/कक्षा	पृष्ठ सं.
1.	प्रगति आख्या (2021–22)	प्रो. गिरीश कुमार सिंह	प्राचार्य	01
2.	विष – अमृत	प्रो. गिरीश कुमार सिंह	प्राचार्य	03
3.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं भारतीय ज्ञान परंपरा	डॉ. आर. के. अग्रवाल	विभागाध्यक्ष, गणित विभाग	04
4.	राष्ट्रीय कैडेट कोर का परिचय एवं महत्व	लेफ्टिनेंट यजवेन्द्र कुमार	अध्यक्ष, भौतिकी विभाग	06
5.	कोविड–19 में खेल व शारीरिक गतिविधियां	डॉ. सीमांत कुमार दुबे	एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग	08
6.	वर्तमान समय में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता	श्री लक्ष्मण सिंह	अध्यक्ष, संस्कृत विभाग	09
7.	मेरी प्रिय 'हिन्दी'	डॉ. सुनीता गौड़	असिस्टेंट प्रोफेसर, बी० एड० विभाग	11
8.	कोरोना महामारी का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव : एक अध्ययन	डॉ. भुवनेश कुमार	विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग	12
9.	जैव विविधता और इसका महत्व	डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर, बी० एड० विभाग	15
10.	आजादी का अमृत महोत्सव	डॉ. वीरेन्द्र कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग	17
11.	भारतीय अर्थव्यवस्था और कोरोना संकट : चुनौतियां और समाधान	डॉ. तरूण बाबू	असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग	19
12.	राष्ट्रीय ई–कॉमर्स पॉलिसी	डॉ. राजीव कुमार गोयल	असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग	23
13.	वस्तु एवं सेवा कर (GST) एक आसान आख्या	डॉ. विशाल शर्मा	असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग	25
14.	उड़ान है हौंसलों की	छाया शर्मा	बी० ए० तृतीय वर्ष	26
15.	गणित का व्यवहारिक मूल्य	श्री गुरुदत्त शर्मा	असिस्टेंट प्रोफेसर, बी० एड० विभाग	27
16.	महर्षि गौतम का न्याय दर्शन	श्री देव स्वरूप गौतम	असिस्टेंट प्रोफेसर, बी० एड० विभाग	28
17.	छात्र जीवन में पुस्तकालय का महत्व	श्री के. के. श्रीवास्तव	पुस्तकालय प्रभारी	31
18.	माँ	डॉ. सुनीता गौड़	असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग	32
19.	अपना घर	साक्षी शर्मा	बी० सी० ए० प्रथम वर्ष	32
20.	पर्यावरण संरक्षण: आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता	मोनिका सिंह	बी० एड० द्वितीय वर्ष	33
21.	जिन्दगी की डोर	विपिन कुमार	बी० ए० द्वितीय वर्ष	35
22.	नारियाँ	प्राची शर्मा	बी० कॉम० प्रथम वर्ष	35
23.	मेरा कॉलेज महान	सोनी गौतम	बी० ए० तृतीय वर्ष	36
24.	नौकरी	सोनी गौतम	बी० ए० तृतीय वर्ष	36
25.	माता–पिता एक वृक्ष की तरह	कु. कविता	बी० ए० तृतीय वर्ष	37
26.	जीवन की प्रेरणा	खुशी चौहान	बी० ए० प्रथम वर्ष	37
27.	सच्चे शब्द (True Words)	शाजिया खाँन	बी० ए० प्रथम वर्ष	38
28.	बीती यादें : माँ के साथ	शाजिया खाँन	बी० ए० प्रथम वर्ष	38
29.	आजादी का अमृत महोत्सव	शिवानी नागर	बी० ए० तृतीय वर्ष	38
30.	मंजिल पाना है जरूरी	प्रशान्त राज	बी० सी० ए० प्रथम वर्ष	39
31.	कोरोना काल	अभिषेक कौशिक	बी० ए० प्रथम वर्ष	39
32.	आत्मविश्वास (Confidence)	शिवानी चौधरी	बी० ए० प्रथम वर्ष	40
33.	माँ कहा करती थी.....	रिचा राय	बी० एड० प्रथम वर्ष	40

34.	माँ की कविता	साक्षी शर्मा	बी0 एड0 प्रथम वर्ष	41
35.	बेशर्त प्यार	मनु स्मृति	बी0 एड. प्रथम वर्ष	41
36.	लक्ष्मण–रेखा	शिवा भारद्वाज	बी0 एड0 द्वितीय वर्ष	42
37.	मताधिकार जागरूकता	शुभांगी	बी0 एड0 द्वितीय वर्ष	43
38.	कोर्ट (कचहरी) के चक्कर	शुभांगी	बी0 एड0 द्वितीय वर्ष	43
39.	मेरी माँ	सृष्टि अग्रवाल	बी0 एड0 प्रथम वर्ष	44
40.	हाँ ! मैं एक डॉक्टर हूँ.....	फिजा	बी0 एड0 प्रथम वर्ष	44
41.	अपने बदल गये.....	मुजम्मिल	बी0 एड.0 प्रथम वर्ष	45
42.	बेटी तो बेटी होती है	ईशा सिंघल	बी0 एस–सी. द्वितीय वर्ष	45
43.	कोरोना काल में ऑनलाइन अध्ययन के मानसिक प्रभाव	साक्षी चौधरी	बी0 एड0 द्वितीय वर्ष	46
44.	कोरोना	आरिफ अली	बी0 एड0 प्रथम वर्ष	48

ENGLISH : Article/Poem

S. No.	Subject	Writer's Name	Department/Class	Page No.
1.	Statistics For Development	Dr. P. K. Tyagi	Head, Statistics Deptt.	49
2.	An Overview of Water Pollution in India with Especial Reference to River Ganga	Dr. Chandrawati	Head, Chemistry Deptt.	51
3.	Build an Impactful Career in Chemistry	Dr. Jagriti Singh	Asst.Prof. Deptt. of Chemistry	53
4.	Role of Chemistry in Human Life	Dr. G. K. Bansal	Asst.Prof. Deptt. of Chemistry	54
5.	Importance of Programming Languages in our Daily Life	Pankaj Kumar Gupta	Head, Deptt. of BCA	55
6.	Implementation of LAN using Wireless Technology	Mayank Sharma	Asst. Prof., Deptt. ot BCA	56
7.	Impact of Artificial Intelligence in our daily life	Sachin Agrawal	Asst. Prof., Deptt. of BCA	57
8.	Role of Information Technology for teacher Empowerment	Dr. K. C. Gaur	Head, B. Ed. Deptt.	58
9.	Environmental Awareness	Dr. Sudha Upadhyaya	Asst. Prof., B. Ed. Deptt.	61
10.	Use of Mathematics in Daily Life	Shiva Bharadwaj	B.Ed. II	67
11.	Way to Sage's Heaven (Sonnet)	Chandra Prakash	Faculty, Deptt. of English	69
12.	Massage to the Student's	Tungveer Singh	M.Sc. Physics	69
13.	Value of Discipline	Tungveer Singh	M.Sc. Physics	70
14.	Some facts of the life	Nikita Sharma	M.Sc. Physics	70
15.	"Risks"	Somya Bhardwaj	B.C.A. Ist year	70
16.	What is Artificial Intelligent ?	Keshav Kant Bhardwaj	B.C.A. Ist year	71
17.	Confidence	Sapna	B.Sc. IIIrd years	71
18.	About Nature	Khushi Tomar	B.Sc. IInd year	72
19.	Poem on Education	Khushi Tomar	B.Sc. IInd year	72
20.	Namami Gange	Chhaya Sharma	B.Sc. IIIrd year	72
21.	महाविद्यालय प्रबन्ध समिति, महाविद्यालय परिवार एवं विभिन्न समितियाँ			73
22.	सफलता के सूत्र (संकलित)			78

★ ★ ★

प्रगति आख्या (2021–22)

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर (जिला बुलन्दशहर)

प्रो. गिरीश कुमार सिंह
प्राचार्य

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी स्थापना के 56 वर्ष पूर्ण कर चुका है। सन् 1965 से 2021 तक की इस अवधि में महाविद्यालय ने उत्तरोत्तर संरचनात्मक एवं गुणात्मक प्रगति की है। महाविद्यालय के अनेक छात्र एवं छात्राओं ने विश्वविद्यालय स्तर पर शैक्षणिक तथा विभिन्न पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों में महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। वर्तमान समय में चार अनुदानित एवं चार स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं, जिनमें कुल 1746 छात्र–छात्रायें अध्ययनरत हैं। शैक्षणिक उपलब्धियों एवं अनुशासन की दृष्टि से यह महाविद्यालय चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

01. सत्र 2020–21 का परीक्षाफल विगत वर्ष की भांति उत्तम रहा है। महाविद्यालय में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार परीक्षाफल निम्न प्रकार है :–

पाठ्यक्रम	परीक्षाफल उत्तीर्ण प्रतिशत
बी० ए०	88.80%
बी० एस–सी०	100%
बी० कॉम०	92.06%
बी० सी० ए०	90%
एम० ए० (संस्कृत)	100%
एम० एस–सी० (भौतिकी)	100%
एम० एस–सी० (रसायन विज्ञान)	94.44%
बी० एड०	98.86%

02. प्रबंध समिति द्वारा सभी वित्त पोषित पाठ्यक्रमों में रिक्त पदों के सापेक्ष अंशकालिक प्रवक्ताओं की व्यवस्था की गई है।
03. कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न परिस्थितियों में महाविद्यालय के शिक्षकों द्वारा ऑफलाइन एवं ऑनलाइन माध्यम से निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरा किया गया एवं छात्र–छात्राओं की सुविधा हेतु शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए ई–कंटेंट को महाविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड किया गया।
04. महाविद्यालय में शासन के द्वारा कोरोना महामारी से बचाव संबंधी समय–समय पर दिए गए सभी दिशा–निर्देशों का पालन किया जा रहा है। साथ ही एक कोरोना हेल्प डेस्क भी स्थापित की गई है।
05. नई शिक्षा नीति के अंतर्गत महाविद्यालय के गणित विभाग तथा सांख्यिकी विभाग में छात्र छात्राओं के प्रायोगिक कार्य हेतु कंप्यूटर प्रयोगशालाओं की स्थापना की गई।
06. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में महाविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष श्री लक्ष्मण सिंह द्वारा निर्मित संस्कृत विषय के माइनर कोर्स 'भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत' को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में लागू किया गया।
07. महाविद्यालय के संस्कृत विभाग की छात्रा शिखा रानी ने उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित राजकीय महाविद्यालयों के संस्कृत असिस्टेंट प्रोफेसर की परीक्षा में पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त करके महाविद्यालय का नाम रोशन किया ।
08. 09.03.2021 को चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के 32वें दीक्षांत समारोह में बी.एड. सत्र 2018–20 की छात्रा कु. मानसी गर्ग को विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर कुलपति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।
09. 08.04.2021 को महाविद्यालय में वार्षिक पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में मेधावी एवं प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। बी.एड. पाठ्यक्रम में विश्वविद्यालय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए कु. मानसी गर्ग को विशिष्ट छात्र सम्मान एवं प्रो. राजेश्वर उपाध्याय सम्मान से सम्मानित किया गया।
10. 21.06.2021 को महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों के द्वारा शासन के निर्देशानुसार कोविड महामारी के दृष्टिगत घर पर रहकर योगाभ्यास करके अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया।
11. 04.07.2021 को महाविद्यालय में शासन के निर्देशानुसार वन महोत्सव 2021 को मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रांगण में वृक्षारोपण किया गया साथ ही विद्यार्थियों को वृक्षारोपण करने हेतु पौधे वितरित किए गए।
12. 15.08.2021 को महाविद्यालय में 75वां स्वाधीनता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।
13. 05.09.2021 को महाविद्यालय में शिक्षक दिवस मनाया गया, इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबंधन द्वारा समस्त शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

14. 29.09.2021 को उत्तर प्रदेश शासन के निर्देशानुसार फिट इंडिया फ्रीडम रन 2.0 का आयोजन किया गया। इस दौड़ में प्राचार्य, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने उल्लास के साथ प्रतिभाग किया।
15. 06.10.2021 को साइबर क्राइम पर एक अतिथि व्याख्यान रखा गया इसमें मुख्य वक्ता कोतवाली अनूपशहर के कोतवाल श्री प्रेमचंद शर्मा रहे।
16. 07.10.2021 को हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मा. श्री शांता कुमार, एंग्लो वैदिक एजूकेशनल एसोसिएशन, अनूपशहर के अध्यक्ष एवं उद्योगपति माननीय श्री जयप्रकाश गौड़ एवं उद्योगपति श्री मनोज गौड़ जी का आतिथ्य करने का सुअवसर महाविद्यालय को प्राप्त हुआ।
17. 10.11.2021 को उच्चतर शिक्षा सेवा चयन बोर्ड के विज्ञापन सं. 49 के अंतर्गत चयनित प्रो. गिरीश कुमार सिंह ने महाविद्यालय के प्राचार्य पद का कार्यभार ग्रहण किया।
18. 25.11.2021 को उत्तर प्रदेश शासन के निर्देशानुसार सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत सड़क सुरक्षा विषय पर प्रश्नोत्तरी एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसी विषय पर जनपद स्तर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में महाविद्यालय की बी.एड. प्रथम वर्ष की छात्रा आरती वर्मा ने बुलंदशहर जनपद में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में महाविद्यालय के बी.कॉम. प्रथम वर्ष के छात्र चेतन गुप्ता ने बुलंदशहर जनपद में तृतीय स्थान प्राप्त किया।
19. 14.12.2021 को छात्र कल्याण समिति के द्वारा में स्वाधीनता का अमृत महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
20. 17.12.2021 को संस्कृत विभाग एवं रसायन विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में संस्कृत में ज्ञान विज्ञान विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य वक्ता कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, अमेरिका के शोध छात्र विवेक कौशिक रहे।
21. 17.12.2021 को भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून के तत्वावधान में भारत सरकार द्वारा प्रायोजित नदी उत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय वन्यजीव संस्थान के सामुदायिक अधिकारी श्री राहिल खान द्वारा नदी संरक्षण विषय पर एक व्याख्यान दिया गया तथा छात्र-छात्राओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर एक जन जागरूकता रैली निकाली गई। साथ ही छात्र- छात्राओं तथा एनसीसी के कैडेट्स द्वारा गंगा के तटों की सफाई भी की गई।
22. 17.12.2021 को मेरठ में आजादी का अमृत महोत्सव एवं मेरठ की क्रांति पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित मंडल स्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में महाविद्यालय के बी.कॉम. प्रथम वर्ष के छात्र चेतन गुप्ता ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
23. 19.12.2021 को स्वाधीनता का अमृत महोत्सव आयोजन समिति, अनूपशहर द्वारा रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
24. 20.12.2021 को फोरम ऑफ कॉमर्स एण्ड मैनेजमेंट स्टडीज इंडिया के तत्वावधान में इन्नोवेटिव ए प्रोसेस इन एस.टी.ई.एम एजुकेशन इन फिफ्थ इंडस्ट्रियल इवोल्यूशन विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया।
25. 21.12.2021 को साइबर जागरूकता दिवस के अंतर्गत महाविद्यालय में एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन कर छात्र छात्राओं को साइबर क्राइम के प्रति जागरूक किया गया।
26. 22.12.2021 को महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम के जन्म जयंती पर एक संगोष्ठी का आयोजन कर गणित दिवस मनाया गया।
27. 22.12.2021 को भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के तत्वावधान में नदी उत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत नदी संरक्षण विषय पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साथ ही विजेता छात्र छात्राओं को भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।
28. 25.12.2021 को उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देश पर प्रदेश के युवाओं के तकनीकी सशक्तिकरण हेतु टेबलेट/स्मार्टफोन वितरण योजना के अंतर्गत भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी, इकाना क्रिकेट स्टेडियम लखनऊ में आयोजित टेबलेट/स्मार्टफोन वितरण कार्यक्रम का सजीव प्रसारण छात्र- छात्राओं को दिखाया गया।
29. 27.12.2021 को दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर की एनसीसी एवं एनएसएस ईकाई के छात्र-छात्राओं ने उत्तर प्रदेश सरकार के आह्वान पर नगर पालिका, अनूपशहर द्वारा "**मजबूत लोकतंत्र स्वच्छ मतदान**" विषय पर आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव तथा मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में सहभाग किया गया।
30. 28.12.2021 को उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ और संस्कृत विभाग, दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर के संयुक्त तत्वावधान में 'संस्कृत साहित्य में लोक कल्याण और विश्व बंधुत्व की भावना' विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया।

31. 10.01.2022 को फोरम ऑफ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट स्टडीज इंडिया के तत्वावधान में फाइनेंशियल इंजीनियरिंग एंड इन्वेस्टर्स: अंडरस्टैंडिंग रिस्क-रिटर्न एंड क्राइसिस विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया।
32. 11.01.2022 को कोविड-19 की महामारी के दृष्टिगत ऑनलाइन कक्षाएं चलाने एवं ई-कंटेंट तैयार करने हेतु महाविद्यालय में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त शिक्षकों ने प्रतिभाग कर ऑनलाइन कक्षाओं को पढ़ाने हेतु विभिन्न एप्पस् का उपयोग करना सीखा। इसके साथ ही महाविद्यालय में एक रिकॉडिग रूम की भी स्थापना की गई है, इसमें शिक्षक अपने उच्च गुणवत्ता युक्त वीडियो व्याख्यान रिकॉर्ड कर सकते हैं।
33. 12.01.2022 को दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर में राष्ट्रीय युवा दिवस के अंतर्गत स्वामी विवेकानंद के विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता विषय पर एक ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं द्वारा महाविद्यालय प्रांगण में एक आकर्षक रंगोली भी बनाई गई।
34. 14.01.2022 को फोरम ऑफ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट स्टडीज इंडिया के तत्वावधान में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत वैल्यू एजूकेशन एंड हिस्टोरिकल टूरिस्म मैनेजमेंट : डिफरेंट डाइमेंशन इन द कंटेंपरेरी कॉन्टेक्स्ट विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया।
35. 19.01.2022 को साइबर जागरूकता दिवस के अंतर्गत महाविद्यालय में साइबर क्राइम विषय पर एक वेब-सेमीनार का आयोजन कर छात्र-छात्राओं को साइबर क्राइम के प्रति जागरूक किया गया।
36. 26.01.2022 को महाविद्यालय में 73वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।
37. 29.01.2022 को महाविद्यालय परिसर में नवीन वाटिका का सृजन किया गया, जिसमें प्राचार्य सहित समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियेां ने कुल 63 पौधों का रोपण किया तथा सभी ने एक-एक पौधे के पोषण की नैतिक जिम्मेदारी ली।
38. चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के द्वारा महाविद्यालय को इस सत्र में अंतरमहाविद्यालय नेट बॉल प्रतियोगिता का आयोजन कराने के लिए मेजबान चुना गया है, इस प्रतियोगिता का आयोजन फरवरी माह में प्रस्तावित है।

श्रद्धेय श्री जयप्रकाश जी गौड़ अध्यक्ष, ऐंग्लो वैदिक शिक्षा समिति के नेतृत्व में महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। ●●●

विष – अमृत

✍
प्रो. गिरीश कुमार सिंह
प्राचार्य

अमृत निकला है तो
विष भी निकला होगा।

इस भवसागर के मंथन में,
और देव-दैत्य के रण में,
कोई पर्वत पिघला होगा,
अमृत निकला है तो,
विष भी निकला होगा।

कोई कहीं तो होगा शिव,
किसके गले में रुका है विष,
कोई नीलकंठ लिए होगा,
अमृत निकला है तो,
विष भी निकला होगा।

रेखाएँ खिंच गईं सीधी सी,
कुछ आधी सी कुछ अधूरी सी,
पर चक्रवात का अंकन तो होगा,
अमृत निकला है तो,
विष भी निकला होगा।

तुम देख रहे हो उजियारे को,
तम घेर रहा बेचारे को,
कहीं कोई तो भंजन होगा,
अमृत निकला है तो,
विष भी निकला होगा। ●●●

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं भारतीय ज्ञान परंपरा

डॉ. आर.के. अग्रवाल
'विभागाध्यक्ष'
गणित विभाग

शिक्षा किसी राष्ट्र अथवा समाज की प्रगति का मापदंड है, जो राष्ट्र शिक्षा को जितना अधिक प्रोत्साहन देता है वह उतना ही विकसित होता है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा नीति इस पर निर्भर करती है कि वह राष्ट्र अपने नागरिकों में किस प्रकार की मानसिक अथवा बौद्धिक जागृति लाना चाहता है। अपने देश में भी प्रचलित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली 1986 में बदलाव लाने के लिए 34 वर्षों के अंतराल के बाद नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 29 जुलाई, 2020 को अस्तित्व में आई। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों की सोच और रचनात्मक क्षमता को बढ़ाकर सीखने की प्रक्रिया को और अधिक कुशल बनाना। नई शिक्षा नीति में स्कूल स्तर के साथ-साथ उच्च शिक्षा में कई बदलाव शामिल हैं। नई शिक्षा नीति-2020 स्वयं में अद्वितीय है, 'नई शिक्षा नीति-2020' में कई ऐसी महत्वपूर्ण बातें हैं, जिनके व्यावहारिक अनुप्रयोग से भारत की शिक्षा को एक नया स्पर्श मिलेगा, जिसके बल पर हम भारतवर्ष को पुनः विश्वगुरु के पद पर आसीन करने की दिशा में अग्रसर होंगे।

भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्‌भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया था। छात्रों को मानव, प्राणियों एवं प्रकृति के मध्य संतुलन को बनाए रखना सिखाया जाता था। शिक्षण और सीखने के लिए वेद और उपनिषद् के सिद्धांतों का अनुपालन जिससे व्यक्ति स्वयं, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यों को पूरा कर सके, इस प्रकार जीवन के सभी पक्ष भारतीय ज्ञान परंपरा में सम्मिलित थे। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने सीखने और शारीरिक विकास दोनों पर ध्यान केंद्रित किया। कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करें और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए। शिक्षा के इस संकल्प को भारतीय परंपरा में अंगीकृत कर तदनुरूप ही घर, मंदिर, पाठशाला तथा गुरुकुल में संस्कार युक्त स्वदेशी शिक्षा दी जाती थी।

तत्कालीन शिक्षा प्रणाली मूल रूप से सीखने और परिणाम देने पर केंद्रित थी। विद्यार्थियों का आकलन प्राप्त अंकों के आधार पर किया जाता था। यह विकास के लिए एक एकल दिशा वाला दृष्टिकोण था। लेकिन नई शिक्षा नीति एक बहु-विषयक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता पर केंद्रित है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है। नवीन शिक्षा नीति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें समग्रता की दृष्टि का परिचय दिया गया है. वास्तव में, समग्रता की दृष्टि ही सही अर्थों में भारतीय दृष्टि है. इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण है कि 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' के स्थान पर अब 'शिक्षा मंत्रालय' की संकल्पना प्रस्तुत की गई है। मनुष्य को संसाधन मात्र मान लेना भारतीय दृष्टिकोण नहीं है, भारतीय दृष्टि में मनुष्य एक स्वतंत्रचेत्ता प्राणी है, जो संवेदनशील है और केवल उत्पादन का साधन मात्र नहीं है। इसी प्रकार परंपरागत ज्ञान के पाठ्यक्रमों के साथ-साथ व्यवसाय केन्द्रित विषयों को भी समान और संतुलित महत्व दिया गया है. अब कला, संगीत, शिल्प, खेल, योग और सामुदायिक सेवा जैसे सभी विषयों को भी मूल पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा।

भारतीय परंपरा में शिक्षा और समाज का गहरा संबंध रहा है। समाज के सहयोग से ही भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की एक समृद्ध परंपरा देखी गई है, इस बात का नीति में स्पष्ट समावेशन किया गया है। विद्यालय और समाज के अंतः संबंधों को इस नीति ने गहराई से पुनर्स्थापित करते हुए शिक्षा को समाज की जिम्मेदारी के रूप में रेखांकित किया है। 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है- मातृभाषा में शिक्षा, भाषा संबंधित वैज्ञानिक अनुसंधान इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि मातृभाषा में ही प्राथमिक शिक्षा सर्वाधिक वैज्ञानिक पद्धति है, इस दृष्टि से मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था शिक्षा नीति का सबसे सुंदर पक्ष है। इससे भारतीय भाषाओं में शिक्षा का द्वार खुलेगा।

परंपरागत भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ-साथ आधुनिक

तकनीकी शिक्षा का अच्छा सामंजस्य इस नवीन शिक्षा नीति में दृष्टिगोचर होता है। ई–पाठ्यक्रम क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित किए जाएंगे, वर्चुअल लैब विकसित की जा रही है और एक राष्ट्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी फोरम (NETF) का भी गठन किया जा रहा है. छोटी कक्षाओं से ही छात्रों को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को जोड़ने की बात कही गई है। बच्चों के रिपोर्ट कार्ड में जीवन कौशलों को भी जोड़ा जाएगा, जिससे बच्चों में विभिन्न जीवन कौशलों का भी विकास हो सकेगा। इस नीति में शिक्षा के सैद्धांतिक पक्षों से अधिक व्यावहारिक पक्षों पर बल दिया गया है।

उच्च शिक्षा के दो आधार बिंदु होते हैं– शिक्षण और शोध, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और शोध दोनों पर संतुलित बल दिया गया है। गुणवत्तापूर्ण शोध–कार्य, राष्ट्र, समाज और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हो– इस दृष्टि से 'राष्ट्रीय शोध–प्रतिष्ठान' की स्थापना का भी प्रावधान है, यह भारत में शोध–कार्य हेतु एक नियामक संस्था होगी, जिसमें विज्ञान के साथ–साथ समाज विज्ञान, कला व मानविकी के विषयों से संबंधित शोध–कार्यों को जोड़ा गया है। यह शिक्षा नीति उच्च शिक्षा में बहु अनुशासनिकता एवं समग्र शिक्षा के मूल्यों को पोषित करते हुए भविष्य में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल में ज्ञान की एकता एवं अखंडता को सुनिश्चित करेगी। भारत जैसे बहुभाषी देश में सभी भारतीय भाषाओं का विकास आवश्यक मानते हुए यह नीति त्रिभाषा–सूत्र को अंगीकार कर रही है, जो प्रशंसनीय है।

कला और विज्ञान के अनुशासनों के मध्य संरचनागत विभेदों को समाप्त करते हुए पाठ्यक्रम और पाठ्येत्तर गतिविधियों, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं को सीखने के सहज और सुलभ पद्धतियों को छात्रों को उपलब्ध कराने का प्रविधान है, छात्र अब विज्ञान विषयों के साथ भाषा एवं मानविकी विषयों का भी अध्ययन कर सकता है। ऑनलाइन शिक्षा पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने काफी सूक्ष्मतापूर्वक विचार कर कई प्रावधान किए गए हैं, जैसे– आधारभूत डिजिटल संरचनाओं का प्रावधान, शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण हेतु प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन आदि। कोरोना काल में जो एक वैश्विक परिस्थिति चुनौती के रूप में उभरकर सामने आई है, ऐसी परिस्थितियों में ऑनलाइन शिक्षण का प्रावधान एक दूरदर्शी कदम कहा जाएगा।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा की स्वायत्तता पर भी काफी बल दिया गया है. प्रावधानों के अनुसार उच्च शिक्षा संस्थानों को स्वतंत्र समितियों द्वारा पूर्ण शैक्षणिक और प्रशासनिक स्वायत्तता के साथ शासित किया जाना है. पाठ्यक्रम को लचीला बनाने का प्रावधान है ताकि विद्यार्थी अपने सीखने की गति और कार्यक्रमों का चयन कर सके और इस प्रकार जीवन में अपनी प्रतिभा और रूचि के अनुसार अपने रास्ते चुन सकें शिक्षा नीति का ध्येय यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा जन्म या पृष्ठभूमि की परिस्थितियों के कारण सीखने और उत्कृष्टता प्राप्त करने का कोई अवसर न खो दे। समग्रता में कहा जाए तो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से भारत की शिक्षा में भारतीयता का सही अर्थों में प्रादुर्भाव हुआ है। सैद्धांतिक और व्यावहारिक शिक्षा के मध्य, भौतिकता और आध्यात्मिकता के मध्य, परंपरागत मूल्यबोध और आधुनिक तकनीक के मध्य समन्वय की एक सुंदर चेष्टा इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में देखी जा सकती है. आवश्यकता है, इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को सम्यक तरीके से व्यावहारिक धरातल पर उतारने की।

संक्षेप में कहें तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 समाज में सकारात्मक परिवर्तनकारी, आत्मनिर्भर बनाने वाली नीति है, जो कार्य कुशल नागरिकों को तैयार कर पाने में सक्षम है। इसका उद्देश्य शैक्षणिक व नैतिक उत्कृष्टता के बीच संबंध विकसित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 राष्ट्रीय आकांक्षाओं को साकार करने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित है। इसमें निहित परिवर्तनकारी सुधार ऐसे राष्ट्रवादी युवाओं को तैयार करेंगे जो भारतीय ज्ञान परंपरा की खोई हुई प्रतिष्ठा को दोबारा हासिल करने और भारत को विश्व गुरु के रूप में दोबारा स्थापित करने में सक्षम होंगे। ooo

राष्ट्रीय कैडेट कोर का परिचय एवं महत्व

लेफ्टिनेंट यजवेन्द्र कुमार
'अध्यक्ष'
भौतिकी विभाग

राष्ट्रीय कैडेट कोर की स्थापना 16 अप्रैल, 1948 में कुंजरु समिति ने की थी। वर्ष 1939-45 के द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यूनिवर्सिटी ऑफिसर्स ट्रेनिंग कोर अपने उद्देश्य में असफल रहा। इसकी असफलता को ध्यान में रखते हुए तथा छात्रों को सैन्य प्रशिक्षण देने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 1946 में पंडित हृदयनाथ कुंजरू की अध्यक्षता में राष्ट्रीय कैडिट कोर समिति की स्थापना की। इस समिति ने विश्व के विकसित देशों में युवकों के सैन्य प्रशिक्षण का गहन अध्ययन करने के पश्चात् मार्च 1947 में अपनी विस्तृत रिपोर्ट सरकार के समक्ष प्रस्तुत की। जिसे 13 मार्च 1948 को संविधान सभा (विधानमंडल) के समक्ष रखा गया था और 19 मार्च 1948 को संविधान सभा (विधानसभा) को भेजा गया था। जिसमें विचार-विमर्श और संशोधन के बाद, विधेयक 08 अप्रैल, 1948 को विधानसभा द्वारा पारित किया गया। सरकार ने समिति की सिफारिशें स्वीकार करते हुए एक बिल तैयार किया जो 16 जुलाई, 1948 में संसद द्वारा पारित होकर 'राष्ट्रीय कैडिट कोर अधिनियम' बन गया। 'राष्ट्रीय कैडेट कोर' नाम भी कुंजुरु समिति द्वारा दिया गया था। इसी अधिनियम के अन्तर्गत विद्यालयों में राष्ट्रीय कैडिट कोर (NCC) की स्थापना हुई। राष्ट्रीय कैडेट कोर का उद्देश्य युवाओं में चरित्र और साहचर्य का विकस करना है, साथ ही यह युवाओं में नेतृत्व की क्षमता और सेवा की भावना भी विकसित करता है। यह युवाओं को सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करता है और पहले से तैयार एक रिजर्व बनाता है जिसका उपयोग राष्ट्रीय आपातकाल के समय सशस्त्र बल आसानी से कर सकता है। कॉलेज की एनसीसी की गतिविधियाँ, एसोसिएट एनसीसी अधिकारी के द्वारा निर्देशित की जाती हैं।

उद्देश्य : 1988 में राष्ट्रीय कैडेट कोर का उद्देश्य निर्धारित हुआ था तथा यह समय की कसौटी पर खरा उतरा है और देश की वर्तमान सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में भी अपेक्षित आवश्यकता को पूरा कर रहा है। एन सी सी का लक्ष्य युवाओं में चरित्र निर्माण, कामरेडशिप, अनुशासन, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, साहस की भावना तथा स्वयं सेवा के आदर्शों को विकसित करना है। इसके अलावा इसका उद्देश्य जीवन के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व गुणों के साथ संगठित, प्रशिक्षित और प्रेरित युवाओं का एक पूल बनाना है, जो राष्ट्र की सेवा करेंगे चाहे वे किसी भी कैरियर का चयन करें। कहने की जरूरत नहीं कि राष्ट्रीय कैडेट कोर युवा भारतीयों को सशस्त्र बलों में शामिल एवं प्रेरित करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है।

गतिविधियाँ : एनसीसी में गतिविधियों को संस्थागत प्रशिक्षण, सामुदायिक विकास, युवा विनिमय कार्यक्रम और साहसिक गतिविधियों में विभाजित किया जा सकता है।

संस्थागत प्रशिक्षण : ड्रिल, शूटिंग, शारीरिक स्वस्थता, नक्शा पढ़ना, प्राथमिक चिकित्सा, ग्लाइडिंग, संचालित फ्लाइंग, शिविर प्रशिक्षण आदि ये सब एनसीसी प्रशिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बनाते हैं। शिविरों में, युवा कैडेट को आउटडोर और सामुदायिक जीवन का रोमांच और आनन्द मिलता है। इसके अलावा अखिल भारतीय कैम्प जैसे राष्ट्रीय एकता, नेतृत्व, नौ सैनिक, वायु सैनिक, सेना के अटैचमेंट, गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस शिविर, इनमें देश के सभी भागों से आए कैडेट एक साथ काम करते हैं और राष्ट्र की एकता को बढ़ावा देने की दिशा में बहुत बड़ा योगदान देते हैं। ये शिविर युवा कैडेट के क्षितिज को विस्तारित करते हैं और उन्हें राष्ट्रीय भाईचारे के बंधन बनाने का एक अवसर प्रदान करते हैं। ये शिविर, सांस्कृतिक अंतराल को कम करने क्षेत्रीय और भाषाओं के अवरोधों को तोड़ने और देश के विभिन्न भागों से आए युवाओं को एक दूसरे के करीब लाने में मदद करते हैं।

सामुदायिक विकास : ये गतिविधियाँ हमारे युवाओं को अपने देशवासियों के प्रति सजग और उनकी जरूरतों और समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाने का उद्देश्य रखती हैं और उन्हें सामुदायिक जीवन को समृद्ध बनाने के लिए सार्थक योगदान देने में सक्षम बनाती हैं। एनसीसी जरूरतमंदों को सहायता प्रदान करने में सबसे आगे हो गया है। गतिविधियों के प्रमुख क्षेत्रों में रक्तदान, वयस्क साक्षरता, दहेज विरोधी, कुष्ठ रोग विरोधी, नशीली दवा विरोधी, वृक्षारोपण, नेत्र दान और सड़कों का निर्माण जैसे क्षेत्र शामिल हैं। एनसीसी ने पारिस्थिति की और पादप जीवन के संरक्षण पर भी काफी जोर दिया है।

यूथ एक्सचेंज कार्यक्रम : अंतरराष्ट्रीय समझ में जागरूकता बढ़ाने के एक दृष्टिकोण के साथ, एनसीसी के पास नौ देशों अर्थात् बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, सिंगापुर, श्रीलंका, ब्रिटेन,

वियतनाम और रूस के युवा संगठनों/एनसीसी के साथ विनिमय कार्यक्रम (संभावनाएँ) हैं। इस विनिमय कार्यक्रम में दो सप्ताह की अवधि के लिए 24 की संख्या तक के कैडेटों के पारस्परिक दौरे भी शामिल हैं। कैडेट सामुदायिक विकास का कार्य करते हैं, इतिहास, संस्कृति और देश की सामाजिक आर्थिक स्थितियों का अध्ययन करते हैं।

साहसिक प्रशिक्षण: साहसिक गतिविधियाँ कैडेट्स में साहस, नेतृत्व, साहसिक कार्य (रोमांच की भावना), हिम्मत, मैत्री की भावना, टीम वर्क और आत्मविश्वास की भावना के विशेष गुण विकसित करने के लिए आयोजित की जाती हैं। इनमें से कुछ गतिविधियाँ, रॉक क्लाइम्बिंग ट्रेकिंग, पर्वतारोहण, पैरा जम्पिंग, स्कूबा डाइविंग, वाटर स्कीइंग, सेलिंग, क्याकिंग, नौकायन, पैरा सेलिंग, ग्लाइडर और माइक्रोलाईट फ्लाइंग, स्लिथरिंग और साइकिल, मोटर–साइकिल अभियान आदि हैं।

दिए जाने वाले प्रमाणपत्र : प्रमाण पत्र के तीन प्रकार के होते हैं। एनसीसी कैडेट 'ए', 'बी' और 'सी' को प्राप्त कर सकते हैं। एक कैडेट जूनियर डिवीजन (स्कूल स्तर) में 1–2 साल बिताने के बाद और कम से कम एक प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने के बाद सर्टिफिकेट 'ए' का पात्र है। 'बी' प्रमाण पत्र परीक्षा की पात्रता के लिए कैडेट की उपस्थिति एनसीसी नामांकन के पहले दो वर्ष के सीनियर डिवीजन में (कॉलेज में) एनसीसी परेड कक्षाओं में 75% की और एक प्रशिक्षण शिविर में अवश्य होनी चाहिए ।

सबसे अधिक प्रतिष्ठित "सी" प्रमाण पत्र है। इस परिक्षा की पात्रता के लिए कैडेट के द्वारा एनसीसी नामांकन के तीसरे वर्ष में 75% उपस्थिति के साथ 'बी' प्रमाण पत्र की परीक्षा में उतीर्ण होना चाहिये और उसने कम से कम एक आउटडोर शिविर और एक राष्ट्रीय एकता शिविर या गणतंत्र दिवस परेड या एनसीसी निदेशालय द्वारा आयोजित किसी भी अन्य गतिविधि में भाग लिया हो।

परीक्षाएँ हर साल मध्य फरवरी में आयोजित की जाती हैं। जब सशस्त्र सेना में चयन प्रक्रिया की बात आती है तब एक 'सी' प्रमाण पत्र धारक को कई फायदे मिलते हैं। भारतीय सैन्य अकादमी (आई.एम.ए.) के हर रेगुलर कोर्स में बत्तीस रिक्त पद एनसीसी 'सी' सर्टिफिकेट धारकों के लिए आरक्षित हैं जिन्होंने सीडीएस परीक्षा उत्तीर्ण की है और सेवा चयन बोर्ड के द्वारा सफल घोषित किए गए हैं। उन्हें प्रशिक्षण के दौरान भी विशिष्ट लाभ मिलते हैं। "सी" प्रमाण पत्र के साथ एक अलग मेरिट लिस्ट एनसीसी कैडेटों के लिए तैयार की जाती है।

एनसीसी से लाभ: एनसीसी 'सी' सर्टिफिकेट धारकों के लिए की रक्षा बलों में कमीशन (आयोग) के लिए आरक्षित रिक्तियाँ :

- **सेना :** हर साल 64 यूपीएससी और एसएसबी साक्षात्कार के माध्यम से भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून के लिए चयन किया जाता है। शॉर्ट सर्विस कमीशन गैर तकनीकी के लिए अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी (ओटीए), चेन्नई में 100 पदों पर केवल एसएसबी के साक्षात्कार के द्वारा चयन किया जाता है।
- **नौसेना :** प्रति पाठ्यक्रम 6 पद एनसीसी कडेट्स हेतु आरक्षित है। कोई यूपीएससी परीक्षा नहीं होती है, केवल एसएसबी के साक्षात्कार के द्वारा चयन किया जाता है। जअधिकतम आयु में दो वर्ष की छूट का भी प्राविधान है।
- **भारतीय वायुसेना :** उड़ान प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों सहित सभी पाठ्यक्रमों में 10: पद एनसीसी कडेट्स हेतु आरक्षित है। कोई यूपीएससी परीक्षा नहीं होती है, केवल एसएसबी के साक्षात्कार के द्वारा चयन किया जाता है।

अन्य रैंकों, नाविकों, एयरमैन के लिए : 5 से 10% बोनस अंक भर्ती के लिए पुरुस्कृत।

- **अर्द्ध सैनिक बल :** भर्ती के लिए पुरुस्कृत 2 से 10 बोनस अंक
- **दूरसंचार विभाग :** भर्ती के लिए पुरुस्कृत बोनस अंक
- सीआरपीएफ: तृतीय श्रेणी की डिग्री पाने वाले एनसीसी कैडेट राजपत्रित पदों पर भर्ती के पात्र
- एनसीसी के 'सी' प्रमाण पत्र वाले कैडेट सिविलियन (अर्द्ध–सैनिक) ग्लाइडिंग प्रशिक्षक/महिला कैडेट प्रशिक्षक/ पूर्णकालिक महिला अधिकारी की परीक्षा के पात्र हैं।
- **राज्य सरकारें :** कुछ राज्यों में राज्य सेवाओं के लिए वरीयता।

  उद्योग: कुछ उद्योग सुरक्षा के क्षेत्र से संबंधित विभिन्न नौकरियों के लिए एनसीसी के सी प्रमाण पत्र धारकों को वरीयता देते हैं।
- **एनसीसी के खेल:** उत्कृष्टता के लिए टीमों और व्यक्तियों को नकद पुरस्कार।

इस गौरवपूर्ण एवं राष्ट्र के लिए समर्पित सेवा से जुड़ने के लिए इच्छुक छात्र महाविद्यालय में प्रवेश लेने के पश्चात एनसीसी कार्यालय में संपर्क करें।

ooo

कोविड–19 में खेल व शारीरिक गतिविधियां

डॉ. सीमांत कुमार दुबे
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
शारीरिक शिक्षा विभाग

खेल व शारीरिक गतिविधियाँ स्वतंत्र जीवन की एक आवश्यक योग्यता है। वे व्यक्ति जो अपना अधिकांश समय एक स्थान पर बैठे रहने या लेटे रहने की स्थिति में रहते हैं, उनका जीवन स्तर अच्छा नहीं होता । कोविड–19 का खेल व शारीरिक गतिविधियों से संबंध पर यदि चर्चा करें तो महसूस होता है कि इस महामारी से लड़ने के लिए खेल व शारीरिक गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है । खेल व शारीरिक गतिविधियां शरीर की वह क्रियाएं हैं जो कंकालीय मांसपेशियों द्वारा निष्पादित की जाती हैं तथा जिसमें शारीरिक ऊर्जा की खपत होती है। कोविड–19 के बारे में हम सभी जानते हैं कि यह एक ऐसी भयानक महामारी है जो बहुत तेजी से फैलती है तथा इसके द्वारा विश्व में स्वास्थ्य संकट गहरा गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोविड–19 के कारण शुरुआत में मृत्यु दर 2% थी जबकि बाद में इसमें इजाफा होकर 4 से 6% तक हो गई। इस महामारी ने लोगों को लॉकडाउन के रूप में एकांतवास में धकेल दिया तथा मनुष्य को शारीरिक मानसिक व सामाजिक रूप से पीड़ा देते हुए कमजोर बना दिया है, साथ ही इस महामारी ने लोगों से अपनों व सपनों को भी छीन लिया ।

यदि हम इसके मूल में जाएं तो ऐसा प्रतीत होता है कि जिन लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम थी उन्हें कोरोना ने अधिक विवश किया है साथ ही यह भी महसूस किया गया कि जो व्यक्ति मानसिक रूप से मजबूत नहीं थे उन्हें भी इसके द्वारा दुष्प्रभावित किया गया । ये दोनों ही कारक खेल व शारीरिक गतिविधियों द्वारा प्रभावित होने वाले हैं । यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि शारीरिक गतिविधियां व अभ्यास न केवल शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य सुधार करता है बल्कि हमारे शरीर को विभिन्न बीमारियों जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, स्वास्थ्य संबंधी व हृदय संबंधी बीमारियों के नकारात्मक प्रभाव से लड़ने के योग्य बनाती है इस महामारी में शारीरिक निष्क्रियता एक सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दा है, जो जीवन प्रत्याशा के लिए एक बड़ा जोखिम कारक बना हुआ है शोधकर्ताओं के अध्ययन के अनुसार यह दर्शाया गया है कि शारीरिक अभ्यास द्वारा श्वसन तंत्र, मांसपेशियां तंत्र, कंकाल तंत्र, रुधिर परिसंचरण तंत्र, पाचन तंत्र तथा प्रतिरोधक तंत्र आदि की प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए शारीरिक गतिविधियों व अभ्यास को जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बनाना आवश्यक है। खेलों से संबंधित अध्ययन व साहित्य के अनुसार खेल एवं शारीरिक गतिविधियां न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य लाभ के लिए एक महत्वपूर्ण टॉनिक है। कोरोना काल में विभिन्न खेलकूद गतिविधियों में लॉकडाउन के कारण कमी आई है जिसका सामान्य स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव हुआ है ऐसे में घरेलू शारीरिक व्यायाम की माँग बढ़ी है, जो आज के समय की अच्छे

स्वास्थ्य के लिए आवश्यकता बन गई है । अतः कोविड–19 के समय में हमें यदि स्वास्थ्य को बनाए रखना है सभी शारीरिक तंत्रों को ठीक रूप से संचालित करना है, अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखना है, अपने जीवन को सुव्यवस्थित व नियमित करना है, अपने जीवन मूल्यों को सुधारना है तथा अपने आप को मानसिक रूप से मजबूत बनाना है तो हमें प्रत्येक स्थिति में कम से कम घरेलू शारीरिक व्यायाम को अपनी दिनचर्या में लाना ही होगा तभी इस युग में हम स्वस्थ रह सकेंगे । हम स्वस्थ होंगे तो समाज स्वस्थ रहेगा, समाज स्वस्थ रहेगा तो राष्ट्र स्वस्थ होगा । ऐसा माना जाता है कि स्वस्थ व्यक्ति एक राष्ट्र की संपत्ति होती है जबकि अस्वस्थ व्यक्ति अपने समाज के लिए जिम्मेदारी बन जाता है ।

●●●

वर्तमान समय में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता

लक्ष्मण सिंह
अध्यक्ष
संस्कृत विभाग

"सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात सच्ची विद्या वह है जो हमें मुक्ति प्रदान करती है। कहा भी गया है कि– विद्या विनम्रता प्रदान करती है, विनम्रता से मनुष्य योग्यता प्राप्त करता है, अपनी योग्यता के द्वारा मनुष्य धन प्राप्त करता है और धन से धार्मिक कार्य संपन्न होते हैं, धार्मिक कार्य करने से सुख की प्राप्ति होती है। इस प्रकार भारतवर्ष का चिन्तन विद्या को सुख प्राप्ति का प्रथम सोपान मानता है। मानव जीवन की कठिन चुनौतियों का समाधान शिक्षा के द्वारा ही किया जा सकता है। किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में गुरु–शिष्य परम्परा के द्वारा सुव्यवस्थित उच्च शिखर को प्राप्त गुरुकुल शिक्षा पद्धति प्रचलित रही है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के प्रमुख घटक गुरु, शिष्य, गुरुकुल इत्यादि पर विचार करते हुए वर्तमान समय में उनकी आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

गुरु – गुरु शब्द का शाब्दिक अर्थ अंधकार को दूर करने वाला होता है। विद्यार्थी के मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक इत्यादि विकास को दृष्टिगत रखते हुए सही मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करने वाला गुरु होता है। प्रेरक, सूचक, वाचक, दर्शक, शिक्षक और बोधक ये छः प्रकार के गुरु कहे गये हैं। मनुस्मृति में गुरुकुल के आचार्यों को उपाध्याय और दस हजार विद्यार्थियों को अन्नादि द्वारा पोषण प्रदान कराते हुये विद्या अध्ययन कराने वाले 'ऋषि', और प्रधान आचार्य को 'कुलपति' कहा गया है।

शिष्य – जो अपने जीवन को मोह और अज्ञान से बाहर निकालकर उत्कर्ष की ओर ले जाना चाहता हो, उसे शिष्य कहते हैं। बुद्धि, तर्क और स्मृति से संपन्न, वैज्ञानिक व्यवहार के साथ विचारों को समझने की क्षमता और सभी प्राणियों के कल्याण के लिए समर्पित होकर, विनम्रता, पवित्रता, स्नेह और निपुणता इत्यादि गुणों के आधार पर गुरुकुल में प्रवेश करने के पूर्व आचार्य शिष्य की परीक्षा लेते थे। गुरुकुल में अध्ययन करने वाले शिष्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित करते हुए चौबीस साल की उम्र तक शिक्षा प्राप्त करने वाले शिष्यों को वसु, छत्तीस साल की उम्र तक शिक्षा प्राप्त करने वाले शिष्यों को रुद्र और अड़तालीस साल की उम्र तक शिक्षा प्राप्त करने वाले शिष्यों को आदित्य कहा गया है।

गुरुकुल – शिक्षा की एक ऐसी परम्परागत आवासीय पद्धति, जिसमें शिष्य अपने गुरु के साथ उनके परिवार के सदस्य की तरह रहते हुये विभिन्न तरीकों से शिक्षा ग्रहण करते थे, उसे गुरुकुल कहते हैं। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के इतिहास में भारत की शिक्षा व्यवस्था और ज्ञान–विज्ञान की रक्षा का इतिहास समाहित है। गुरुकुलों के अंतर्गत तीन प्रकार की शिक्षा संस्थाएँ थीं–

1. **गुरुकुल –** जहाँ विद्यार्थी आश्रम में गुरु के साथ रहकर विद्याध्ययन करते थे।
2. **परिषद –** जहाँ विशेषज्ञों द्वारा शिक्षा दी जाती थी।
3. **तपस्थली –** जहाँ बड़े–बड़े सम्मेलन होते थे और सभाओं तथा प्रवचनों से ज्ञान अर्जन होता था।

प्राचीन गुरुकुल

गुरुकुलों में विद्यार्थी दूर–दूर से अपनी शिक्षाओं को पूर्ण करने जाते थे। शिक्षारूप यह उच्च कोटि का कार्य नगरों और गाँवों से दूर रहकर शान्त, स्वच्छ और सुरम्य प्रकृति की गोद में किया जाता था। इन गुरुकुलों में हर वर्ण के छात्र साथ–साथ पढ़ते थे। गरीब–अमीर में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। सबको समान सुविधाएं दी जाती थीं। शिष्य गुरु के सानिध्य में रहकर गुरुकुल की दिनचर्या का पालन करके आत्म–संयम प्राप्त करके,

जीवन में उत्तम चरित्र निर्माण हेतु सदैव प्रयत्नशील रहकर, संसार के सभी प्राणियों के साथ आत्मीयता की भावना का विस्तार करके, समाज के हर व्यक्ति को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करके, भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन हेतु पूर्ण रूप से समर्पित होकर राष्ट्र के निर्माण में सकारात्मक योगदान देने वाला नागरिक बनता था। गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करके दीक्षित और समावर्तित शिष्य श्रेष्ठ नागरिक के कर्तव्यों का ज्ञाता होकर गुरूओं से जनसामान्य के साथ व्यवहार हेतु विभिन्न उत्तम नीतियों का उपदेश प्राप्त करके अपने जीवन में उनका प्रयोग किया करता था। इसीलिये पाश्चात्य दार्शनिक शोपेनहावर का कहना था कि– 'यदि मुझसे पूछा जाए कि आकाश मंडल के नीचे वह कौन–सी भूमि है, जहाँ के मानव ने अपने हृदय में दैवीय गुणों का पूर्ण विकास किया तो मेरी उंगली भारत की ओर ही उठेगी'। च्यवन ऋषि, द्रोणाचार्य, सांदीपनि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, बाल्मीकि, गौतम, भारद्वाज आदि ऋषियों के आश्रम गुरुकुल के प्रसिद्ध उदाहरण हैं। गुरुकुलों के ही विकसित रूप तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी के विश्वविद्यालय थे। कोई गुरुकुल धनुर्विद्या सिखाने में प्रसिद्ध था तो कोई वैदिक ज्ञान देने में, कोई अस्त्र–शस्त्र सिखाने में तो कोई ज्योतिष और खगोल विज्ञान सिखाने में दक्ष था। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में मानवता, प्रेम और अनुशासन के साथ शिष्यों को माता, पिता और गुरुओं का सम्मान करना भी सिखाया जाता था। इसका मूल उद्देश्य

वर्तमान समय में गुरुकुल विश्वभारतीय रोहितक

आध्यात्मिक विकास और चरित्र निर्माण के साथ विद्यार्थी को स्वावलंबी बनाना तथा भावी जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करना था। जीवन के हर क्षेत्र में विशुद्ध रूप में ज्ञान की प्रतिष्ठापना करना हमारी संस्कृति की विशेषता रही है। हमारा जीवन दर्शन भोग–योग, भौतिकता–आध्यात्मिकता, शरीर–आत्मा, प्रकृति–परमात्मा आदि तत्वों के सन्तुलन एवं समन्वय का रहा है। वर्तमान समय में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की व्यवस्था को उसके आदर्शों में समयानुसार अपेक्षित परिवर्तन करके पुनः हमारी भारतभूमि की ज्ञान–संपदा द्वारा विश्व को दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकता है।

ooo

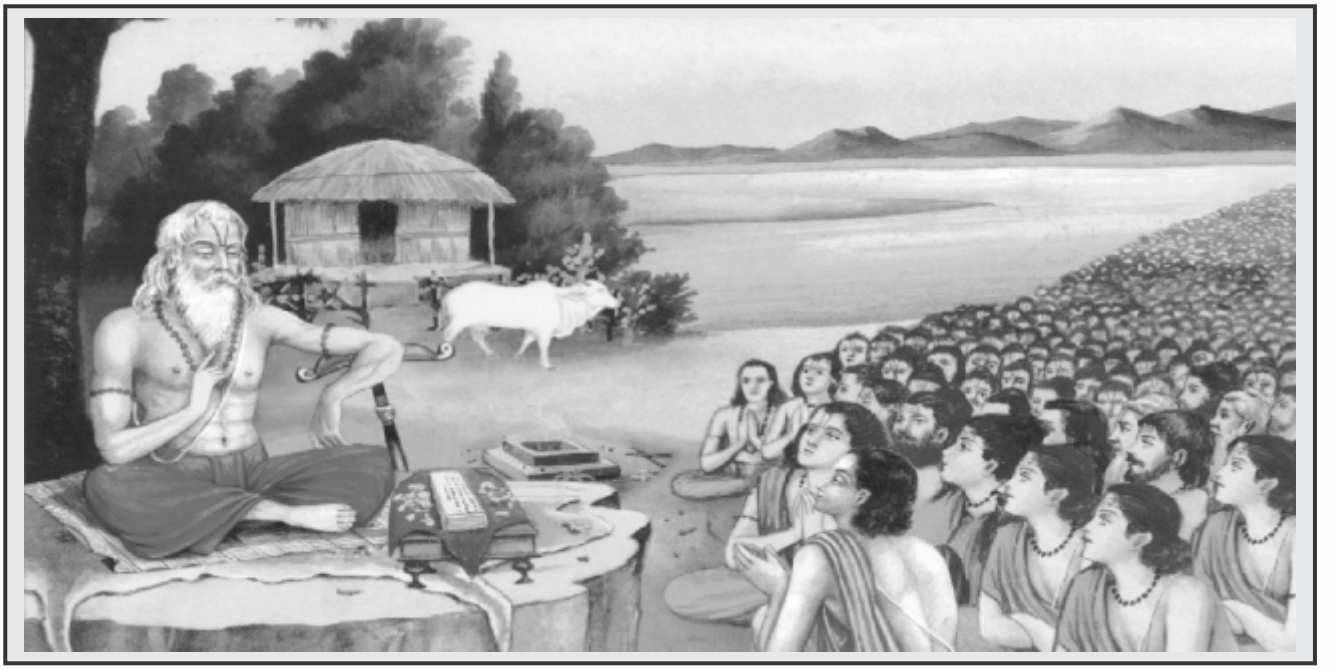

मेरी प्रिय 'हिन्दी'

डॉ. सुनीता गौड़
असिस्टेंट प्रोफेसर
बी. एड. विभाग

भाषा किसी राष्ट्र का गौरव होती है। देश की अखंडता और गौरव के निर्वहन में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अक्सर लोग मुझसे प्रश्न करते हैं कि हिन्दी आपकी प्रिय भाषा क्यों है? तो आइए आज मैं आपको अपनी प्रिय भाषा हिन्दी होने के कारणों से अवगत कराती हूँ।

हमारी हिन्दी भाषा ऐसी भाषा है जो विश्व में सर्वाधिक बोली जाती है। इस भाषा की विशेषताओं में जैसे- सद्‌गुण, माधुर्य, लालित्य के कारण यह अत्यन्त लोकप्रिय है। यह हमारी मातृभाषा है जो कि हमें भारतवासी होने के गौरव का अनुभव कराती है, साथ ही एकत्व का बोध भी कराती है। मातृभाषा अर्थात् माता के द्वारा प्राप्त भाषा। सम्पूर्ण विश्व की लोकप्रिय भाषा। हिन्दी भाषा के अन्तर्गत अलग-अलग कई बोलियाँ हैं जैसे- बृज भाषी, भोजपुरी, राजस्थानी, बिहारी, गढ़वाली, हरियाणवी इत्यादि। ये सभी बोलियाँ हिन्दी से ही निःसृत हैं अर्थात् इनका उद्‌भव हिन्दी से ही हुआ है।

हमारे देश में लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या ऐसी है, जो हिन्दी भाषा के अन्तर्गत आने वाली खड़ी बोली का ही प्रयोग करती है। भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी इसकी लोकप्रियता जगजाहिर है। जैसे- मारीशस, अफ्रीका, इण्डोनेशिया, जर्मनी, सिंगापुर इत्यादि देश।

स्वतन्त्रता पूर्व हिन्दी अपने मूल रूप में बोली जाती थी। कार्यालयी कार्यों में इसका प्रयोग उर्दू के रूप में होता था।

हिन्दी भाषा की मूल लिपि देवनागरी है। यह लिपि सम्पूर्ण विश्व में प्रयुक्त की जाती है। जिस प्रकार रोमन लिपि में स्वर व व्यंजन को अलग-अलग रखा जाता है, उसी प्रकार देवनागरी लिपि में भी स्वर व व्यंजनों की अलग-अलग व्यवस्था है। हिन्दी को देवभाषा संस्कृति के सरलतम रूप में हम जान सकते हैं, भावाभिव्यक्ति की अद्‌भुत क्षमतामयी इस भाषा में हम अन्य भाषा के बोलचाल के शब्दों को सरलता से समाहित कर सकते हैं। इसका विस्तार अपार है। एक ही भाव के लिए असंख्य शब्द हैं। इनमें शिक्षा के आरंभिक समय में जब मेरा परिचय पर्यायवाची शब्दों से हुआ तो मेरे मन ने कहा- अरे! ये तो अनोखी भाषा है, जोकि सरल व ज्ञानवर्धक दोनों ही है। यही वह भाषा है, जिसके नाम पर देश का नामकरण हिन्दुस्तान हुआ। अन्य भाषाओं की अपेक्षा इसे सरलता से समझा जा सकता है।

हमारे देश में शिक्षा के माध्यम की एक बड़ी समस्या है। दुर्भाग्यवश हजारों वर्ष तक हमें विदेशी शासकों का गुलाम रहना पड़ा था, जिसका दुष्प्रभाव भाषा पर पड़ना लाजमी था, शिक्षा भी इससे प्रभावित हुई। जहाँ तक शिक्षा के माध्यम की बात है, सभी देशों में शिक्षा का माध्यम उनकी मातृभाषाएं ही हैं, जिन देशों में एक से अधिक मातृभाषाएं हैं, उन देशों में वहाँ की राष्ट्रभाषा को ही शिक्षा की भाषा होने का गौरव प्राप्त होता है।

संस्कारों व संस्कृति की भाषा हिन्दी को 14 सितम्बर, 1949 राजभाषा से गौरवान्वित किया गया।

भाषा और विचार का अन्योन्याजित सम्बन्ध है। व्यक्ति के विचार उसकी मातृभाषा में ही उठते, पनपते व समाप्त होते हैं। यदि भाषा न हो तो कुछ भी अभिव्यक्ति असंभव है और विचार के अभाव में व्यक्ति की प्रगति असम्भव है।

मातृभाषा की महत्ता के क्रम में सौ बातों की एक बात ।

नैतिकता का संदेश देने वाली हमारी अजर, अमर, अक्षुण, मधुर भाषा हम सभी भारतीयों के हृदय में जीवन्त है।

●●●

1. उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।
2. खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।
3. तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता। तुमको सब कुछ खुद अंदर से सीखना है। आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नहीं है।
4. सत्य को हजार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।
5. बाहरी स्वभाव केवल अंदरूनी स्वभाव का बड़ा रूप है।

– स्वामी विवेकानन्द

कोरोना महामारी का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव : एक अध्ययन

डॉ. भुवनेश कुमार
विभागाध्यक्ष,
वाणिज्य विभाग

सारांश – यह अध्ययन विगत दो वर्षों से समस्त विश्व को आतंकित कर रही कोरोना महामारी, जिसने करोड़ों लोगों को अपनी चपेट में ले लिया, पूरे विश्व में लाखों लोगों को असमय ही डस लिया। उद्योग, व्यापार, शिक्षा सब कुछ चौपट कर दिया। अनेक देशों की अर्थव्यवस्था बिगाड़ कर रख दी। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से करोड़ों लोगों का जीवन इससे प्रभावित हुआ है। इसने सभी प्रकार के नकारात्मक प्रभाव छोड़े हैं, जिसका प्रभाव आज हम सभी के सामने है। यह अध्ययन भारत के एक शहर फरीदाबाद जिसे औद्योगिक शहर के नाम से भी जाना जाता है फरीदाबाद में कंपनियों में काम करने वाले मजदूरों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को स्पष्ट करता है। जहां एक ओर मजदूरों को विश्वास होता है कि अगर हम एक ही संस्था में अधिक वर्षों तक कार्य करेंगे तो हमारा भविष्य अधिक सुरक्षित होगा, लेकिन दूसरी ओर इस कोरोना महामारी का बहाना बनाकर बड़ी–बड़ी कंपनियों के साथ–साथ छोटी–छोटी कंपनियों ने भी अपने स्थायी रूप से कार्य कर रहे मजदूरों की छुट्टी कर दी, जिससे मजदूरों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति पर बड़ा ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

प्रस्तावना – आजादी के बाद 1949 से फरीदाबाद को एक औद्योगिक शहर के रूप में विकसित करने का काम किया गया। भारत–पाकिस्तान बँटवारे के समय शरणार्थियों को यहाँ बसाया गया था। उस दौर से ही यहाँ छोटे उद्योग–धन्धे विकसित हो रहे हैं। जल्द ही यहाँ बड़े उद्योगों की भी स्थापना हुई और 1950 के दशक से इसका औद्योगीकरण तीव्र गति से हुआ। मुगल सल्तनत के काल से ही फरीदाबाद दिल्ली व आगरा के बीच एक छोटा शहर हुआ करता था। आज की बात की जाये तो फरीदाबाद देश के बड़े औद्योगिक शहरों में नौवें स्थान पर है। फरीदाबाद में 8000 के करीब छोटी–बड़ी पंजीकृत कम्पनियाँ हैं। यहाँ मुख्य रूप से भारी–हल्की मशीन, इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, आयरन प्रोसेसिंग, टैक्सटाइल, कैमीकल, रबड़ व पैकेजिंग उद्योग हैं। बड़ी कम्पनियों में यहाँ जे.सी. बी., लखानी, एस्कॉर्ट, ऐस, गुडइयर, ओरियण्ट आदि हैं। उद्योगों का एक बड़ा हिस्सा बड़ी ऑटोमोबाइल कम्पनियों की वेण्डर कम्पनियों का है। ये वेण्डर कम्पनियाँ मारुति, होण्डा, बजाज, हुण्डई, टाटा, आयशर जैसी बड़ी कम्पनियों को अनेक प्रकार के छोटे–बड़े पुर्जे सप्लाई करती हैं।

आर्थिक स्थिति – कोरोना के दो लॉकडाउन के दौरान जिस तरह छँटनी और तालाबन्दी की मार ने मजदूरी को प्रभावित किया है उससे फरीदाबाद भी किसी भी रूप में अछूता नहीं है। यहाँ अधिकतर कम्पनियों ने मजदूरों की संख्या आधी या उससे भी कम कर दी है। मजदूरी घटा दी गयी है और काम के घण्टे बढ़ गये हैं। अक्सर बड़ी औद्योगिक इकाइयों में पारिश्रमिक की स्थिति छोटी इकाइयों की तुलना में थोड़ी बेहतर होती है। फरीदाबाद औद्योगिक शहर के बीचों–बीच स्थित सेक्टर 6, सेक्टर 24, सेक्टर 25, सेक्टर 58, 59 आदि में कम्पनियाँ अपेक्षाकृत बड़ी हैं। यहाँ ज्यादातर कम्पनियों में डेढ़ सौ से ज्यादा मजदूर काम करते हैं। इनमें से जे.सी.बी., एस्कॉर्ट्स, ऐस, गुड़इयर, ओरियण्ट, शिवालिक, लखानी जैसे कुछ बड़ी कम्पनियाँ भी हैं, जहाँ हजार से ऊपर मजदूर काम करते हैं। औसतन इन कम्पनियों में हेल्परों को आठ से साढ़े नौ हजार, ऑपरेटरों को दस से बारह हजार और टेक्नीशियनों को चौदह से सोलह हजार तनख्वाह मिलती है। छोटी कम्पनियाँ मजदूरी भी कम देती हैं और काम के घण्टे भी अधिक रखती हैं। सरूरपुर, नंगला, गाजीपुर मुख्य फरीदाबाद शहर से 10 से 12 किलोमीटर की दूरी पर हैं। इन इलाकों में छोटी कम्पनियाँ हैं। यहाँ औसतन एक फैक्टरी में 30 से 40 मजदूर काम करते हैं। इन कम्पनियों में मजदूरी कम होती है और काम के घण्टे अधिक। इन कम्पनियों में प्रति माह हेल्परों को छः से आठ हजार और ऑपरेटरों को आठ से दस हजार तक ही मिलते हैं। फरीदाबाद मुख्य शहर से सात–आठ किलोमीटर दूर दिल्ली–मथुरा हाइवे पर स्थित पृथला औद्योगिक क्षेत्र की तरह

विकसित हो रहा है। हालाँकि यहाँ बड़ी कम्पनियों की बड़ी इकाइयाँ हैं। इसके बावजूद मजदूरी कम है। इनमें हैल्परों को औसतन 7 से 8 हजार और ऑपरेटरों को 9 से 10 हजार रुपये मिलते हैं। जब बात आती है औरतों की तो हर जगह पुरुषों की तुलना में औरतों को मजदूरी कम व काम की परिस्थितियाँ ज्यादा कठिन होती हैं। सरूरपुर, नगला, गाजीपुर में महिला मजदूरों को मात्र छः से सात हजार रुपए ही मिलते हैं। नगला व गाजीपुर के मजदूरों का कहना है कि कई कम्पनियाँ ऐसी भी हैं जो दो–दो महीने तक वेतन नहीं देती हैं। पृथला के मजदूरों का कहना है कि ''उन्हें एक ग्रेड पीछे दिया जाता है'', यानी अर्धकुशल मजदूर को अकुशल मजदूर की मजदूरी दी जाती है और कुशल मजदूर को अर्धकुशल मजदूर की मजदूरी मिलती है। यहाँ की कई कम्पनियों में तीन प्रकार का पेमेण्ट सिस्टम काम करता है। कुछ मजदूरों को 'पीस रेट' पर रखा जाता है, कुछ को दिहाड़ी पर और कुछ महीने का वेतन पाते हैं। मजदूरों की यह तीन श्रेणियाँ अस्थायी मजदूरी के अन्तर्गत आती हैं। इन तीनों में 'पीस रेट' और दिहाड़ी पर काम करने वालों का शोषण सबसे भयंकर रूप से होता है और साथ ही काम छूटने की तलवार इन पर लगातार लटकती रहती है। महीने में कुछ दिन काम मिलता हैं कुछ दिन नहीं। कभी–कभी तो आधे दिन में ही काम से बाहर कर दिये जाते हैं। ठेकाकरण व कैजुअलाइजेशन के इस रक्तपिपासु रूप से पूँजीपति वर्ग बेहद प्रभावी तरीके से बिना किसी सुरक्षा का भार उठाये मजदूर का कतरा–कतरा निचोड़ता है। इस तरह अलग–अलग श्रेणियों में बाँटकर उसके मोल–भाव की शक्ति कमजोर करता है। यह सब उसके वर्ग के तौर पर संगठित होने की प्रक्रिया में अड़चन पैदा करता है।

बोनस और ओवरटाइम का जो कानूनी अधिकार मजदूरों ने किसी जमाने में लड़कर लिया था, वे अधिकार कागज पर ही रह गये हैं (चार लेबर कोड के जरिए मोदी सरकार उन्हें कागज से भी मिटाने के लिए आतुर है।) दो–तीन कम्पनियों को छोड़कर किसी भी कम्पनी के मजदूर को न ही बोनस मिलता है और न ही डबल रेट पर ओवरटाइम। कई कम्पनियाँ ऐसी हैं, जो छः महीने के बाद पुराने मजदूरों को निकालकर नये मजदूरों को रख लेती हैं ताकि उन्हें स्थायी न बनाना पड़े और पी.एफ. जैसी सुविधाएँ न देनी पड़ें।

सिंगल रेट से मिलने वाले ओवरटाइम में भी भयंकर धाँधली होती है। ठेकेदार मजदूरों के हिसाब में दो–तीन घण्टे ओवरटाइम कम दिखाते हैं और अपनी जेब गर्म कर लेते हैं। यह धाँधली खुले तौर पर होती है।

सामाजिक स्थिति – फरीदाबाद औद्योगिक क्षेत्र में संजय कॉलोनी, सुभाष कॉलोनी, राजीव कॉलोनी, भगत सिंह कॉलोनी, सिही गाँव आदि मजदूरों के रिहायशी इलाके हैं। इन इलाकों में छोटे–छोटे कमरों में दो, तीन या चार मजदूर एकसाथ रहते हैं। कई मजदूर अपने पूरे परिवार के साथ इन छोटे–छोटे सीलन–भरे अँधेरे कमरों में रहते हैं। कम्पनी में कमरतोड़ श्रम कर लौटने के बाद बिना खिड़की, बिना हवा वाले बन्द कमरों में मजदूर खाना भी पकाते हैं। इन छोटे माचिस के डिब्बे जैसे कमरों में न सूरज की रोशनी आती है और न हवा। कम वॉट के बल्ब में मजदूर खाना पकाता–खाता है, छुट्टी के दिन मोबाइल पर कुछ देखकर अपना मनोरंजन कर लेता है। उसी ढिबरी–सी रोशनी में उसके बच्चे पढ़ाई भी करते हैं। अक्सर एक मंजिल पर 10 से 15 कमरे बने होते हैं और इतने कमरों पर एक या दो सामूहिक शौचालय और स्नानघर। कमरों के बाहर लाइन से पानी भरकर बाल्टियाँ रखी होती हैं क्योंकि पानी निर्धारित सीमित समय के लिए ही आता है। इन मकानों के कमरों का किराया दो से ढाई हजार रुपये होता है। मकान मालिक अपनी मर्जी के अनुसार आठ से दस रुपये प्रति यूनिट की दर से बिजली का वसूलता है। मजदूरों को नहाने–धोने के पानी के लिए भी सौ–दो सौ रुपये देने पड़ते हैं और पीने का पानी खरीदना होता है।

घर का किराया, बिजली और पानी का पैसा देने के बाद मजदूरी का बड़ा हिस्सा खाने–पीने के सामान और गैस सिलिण्डर में व्यय हो जाता है। कई मकान मालिक मकान में ही किराने की दुकान खोल लेते हैं और किरायेदारों को वहाँ से ही सामान लेने के लिए मजबूर करते हैं। मजदूरों के रिहायशी इलाकों की सँकरी गलियों में थोड़ी–सी बारिश होने के बाद कई दिनों तक पानी जमा रहता है। इन इलाकों में नगर निगम की तरफ से साफ–सफाई भी नहीं होती है। मजदूर वर्ग वाले इलाकों के साथ नगर निगम का सौतेला व्यवहार रहता है जो सिर्फ साफ–सफाई में ही नहीं बल्कि हर पहलू से दिखता है। मध्यम वर्ग के रिहायशी इलाके में अच्छी, साफ–सुथरी सड़कें

होती हैं, रास्तों के किनारे पेड़ और जगह–जगह पार्क दिखते हैं तो वहीं दूसरी ओर मजदूर वाले इलाकों में गन्दी और धूल और कीचड़ से भरी सड़कें जिसके दोनों ओर गन्दी नालियाँ बज–बजा रही होती हैं। गन्दगी और जमा हुए पानी की वजह से ही फरीदाबाद में पिछले दिनों डेंगू तेजी से बढ़ा था, जिसकी मार भी सबसे ज्यादा मजदूर–मेहनतकश आबादी पर ही पड़ी थी। सरकारी अस्पतालों में कोरोना की टैस्टिंग किट खत्म हो गयी हैं और लोगों को मजबूरन प्राइवेट अस्पतालों में कई गुना ज्यादा पैसे में टैस्ट कराने पड़ते हैं। इसके अलावा अस्पतालों में खून की भी भारी कमी है और मरीजों के परिवारों को दिल्ली से प्लेटलेट्स बढ़ाने के लिए खून का इन्तजाम करना पड़ता है।

2020 में स्वच्छ सर्वेक्षण के अनुसार फरीदाबाद देश के दस सबसे गन्दे शहरों में शामिल है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार फरीदाबाद की हवा सुरक्षित स्तर से पच्चीस गुना ज्यादा दूषित है। इस रिपोर्ट के अनुसार फरीदाबाद दुनिया का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर बन गया है। फरीदाबाद की मेहनतकश जनता न केवल अपने कार्यस्थल पर जानलेवा गैस और रसायनों से घिरी होती है, बल्कि फैक्टरी के बाहर भी उसे धुँआ, धूल, जहरीली हवा और गन्दा पानी ही मिलता है।

सार – अध्ययन के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि देश के अन्य औद्योगिक क्षेत्रों की तरह फरीदाबाद भी सरकार और पूँजीपति वर्ग के गठजोड़ से मजदूरों को मुनाफे की चक्की में झोंक देता है। फैक्टरी के बाहर जीने के लिए घोर अमानवीय स्थिति बनाता है ताकि उनके अन्दर कुछ बेहतर, रचनात्मक सोचने की न तो ऊर्जा बचे, और न ही उमंग। वे मशीन में काम करते हुए बस एक मशीन बनकर रह जायें।

संदर्भ–

- जिला प्रोफाइल – जिला फरीदाबाद द्वारा संकलित जिला सांख्यिकी कार्यालय, फरीदाबाद।
- फरीदाबाद nic.in (नगर विकास योजना 2031)।
- जैन, एल.सी. 1998, सिटी ऑफ होप– द फरीदाबाद कहानी, अवधारणा प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली।
- किंग्सले, डी., और गोल्डन एच.एच., 1954, औद्योगिक क्षेत्रों में शहरीकरण और विकास, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक परिवर्तन, खण्ड (3)।
- एन.सी.आर.–2021 के हरियाणा उपक्षेत्र के लिए: अंतरिम रिपोर्ट। ooo

जैव विविधता और इसका महत्व

डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
'असिस्टेंट प्रोफेसर'
बी.एड. विभाग

जैव विविधता को अंग्रेजी में Biodiversity कहते हैं यह दो शब्दों से मिलकर बना है- Bio और Diversity Bio का अर्थ है – Livings (जीवित वस्तुएँ) तथा Diversity का अर्थ है – Different Species (विभिन्न प्रजातियाँ) अर्थात् किसी भी निश्चित प्रकृति क्षेत्र में पाए जाने वाले जीव जंतुओं तथा पेड़ पौधों की अनेक प्रजातियों की विविधता तथा संख्या को उस स्थान विशेष की जैव विविधता कहते हैं। जैव विविधता शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन 1985 ई. में डब्ल्यू. जी. रोजेन ने किया था। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 22 मई को जैव विविधता दिवस मनाया जाता है। जैव–विविधता तीन प्रकार की हैं। (i) आनुवंशिक विविधता, (ii) प्रजातीय विविधता तथा (iii) पारितंत्र विविधता। प्रजातियों में पायी जाने वाली आनुवंशिक विभिन्नता को आनुवंशिक विविधता के नाम से जाना जाता है। यह आनुवंशिक विविधता जीवों के विभिन्न आवासों में विभिन्न प्रकार के अनुकूलन का परिणाम होती है। प्रजातियों में पायी जाने वाली विभिन्नता को प्रजातीय विविधता के नाम से जाना जाता है। किसी भी विशेष समुदाय अथवा पारितंत्र (इकोसिस्टम) के उचित कार्य के लिये प्रजातीय विविधता का होना अनिवार्य होता है। पारितंत्र विविधता पृथ्वी पर पायी जाने वाली पारितंत्रों में उस विभिन्नता को कहते हैं, जिसमें प्रजातियों का निवास होता है। पारितंत्र विविधता विविध जैव–भौगोलिक क्षेत्रों जैसे- झील, मरुस्थल, ज्वारनद्मुख आदि में प्रतिबिम्बित होती है।

जैव विविधता क्षरण : पृथ्वी पर जैविक संसाधनों के क्षय को जैव विविधता क्षरण के नाम से जाना जाता है। पृथ्वी का जैविक धन जैव–विविधता लगभग 400 करोड़ वर्षों के विकास का परिणाम है। इस जैविक धन के निरंतर क्षय ने मनुष्य के अस्तित्व के लिये गम्भीर खतरा पैदा कर दिया है। दुनिया के विकासशील देशों में जैव–विविधता क्षरण चिन्ता का विषय है। एशिया, मध्य अमेरिका, दक्षिण अमेरिका तथा अफ्रीका के देश जैव–विविधता संपन्न हैं जहाँ तमाम प्रकार के पौधों तथा जन्तुओं की प्रजातियाँ पायी जाती हैं। विडम्बना यह है कि अशिक्षा, गरीबी, वैज्ञानिक विकास का अभाव, जनसंख्या विस्फोट आदि ऐसे कारण हैं, जो इन देशों में जैव–विविधता क्षरण के लिये जिम्मेदार हैं। अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) के अनुसार, भारत में उष्ण से अतिशीतल जलवायु स्थिति के व्यापक क्षेत्र के साथ एक प्रचुर और विभिन्न प्रकार की वनस्पति और जीव पाए जाते है। विश्व का 7–8% वनस्पति और जीव की प्रजातियां भारत में पाए जाते हैं। भारत में पौधों की लगभग 45,000 प्रजातियाँ पायी जाती हैं, जो दुनिया के कुल आबादी का लगभग 7% हैं। पौधों की लगभग 1336 प्रजातियों के लुप्त होने का खतरा है। भारत में लगभग 15,000 फूल की प्रजातियां पायी जाती हैं, जो दुनिया के कुल आबादी का लगभग 6% है। इनमें से लगभग 1,500 फूल की प्रजातियाँ लुप्तप्राय हैं। भारत में 91,000 पशुओं की प्रजातियाँ पायी जाती हैं, दुनिया के कुल आबादी का लगभग 6.5% है। इनमें 60,000 कीट प्रजातियों, 2,456 मछली प्रजातियाँ, 1,230 पक्षी प्रजातियाँ, 372 स्तनपायी, 440 सरीसृप और 200 उभयचर, जिनमें पश्चिमी घाटों में सबसे अधिक एकाग्रता और 500 मोलस्क शामिल हैं। भारत में भेड़ की 400, मवेशियों की 27 और बकरियों की 22 प्रजातियाँ पायी जाती हैं। भारत में एशिया के कुछ पशुओं की प्रजातियाँ पायी जाती हैं, जो विश्व स्तर पर दुर्लभ प्रजातियों में से हैं, जैसे बंगाली लोमड़ी, एशियाटिक चीता एवं शेर, मारबल्ड कैट, भारतीय हाथी एवं गैंडा, एशियाई जंगली गधा, आदि। भारत विश्व भर में अपने जैव विविधता के लिए जाना जाता है लेकिन जलवायु परिवर्तन तथा कुछ भारतीयों के दोहन कृत्यों की वजह से कई पौधे और जानवर विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गए हैं। वन्यजीव अधिनियम में 253 प्रजातियों का उल्लेख है, जिनको पर्याप्त संरक्षण की जरूरत है और भारत के वनस्पति सर्वेक्षण ने 135 पौधों को लुप्तप्राय के रूप में पहचान की है।

जैव–विविधता संरक्षण की विधियाँ – जैव–विविधता संरक्षण की मुख्यतः दो विधियाँ होती हैं, जिन्हें यथास्थल संरक्षण तथा बहिः स्थल संरक्षण के नाम से जाना जाता है, जोकि निम्नवत हैं–

1. **यथास्थल संरक्षण –** इस विधि के अंतर्गत प्रजाति का संरक्षण उसके प्राकृतिक आवास तथा मानव द्वारा निर्मित परितंत्र में किया जाता है जहाँ वह पायी जाती है। इस विधि में विभिन्न श्रेणियों के सुरक्षित क्षेत्रों का प्रबंधन विभिन्न उद्देश्यों से समाज के लाभ हेतु किया जाता है। सुरक्षित क्षेत्रों में राष्ट्रीय पार्क, अभ्यारण्य तथा जैवमण्डल रिजर्व आदि प्रमुख हैं। राष्ट्रीय पार्क की स्थापना का मुख्य उद्देश्य वन्य–जीवन को संरक्षण प्रदान करना होता है, जबकि अभ्यारण्य की स्थापना का उद्देश्य किसी विशेष वन्य–जीव की प्रजाति को संरक्षण प्रदान करना होता है। जैवमण्डल रिजर्व बहु उपयोगी संरक्षित क्षेत्र होता है, जिसमें आनुवंशिक विविधता को उसके प्रतिनिधि पारितंत्र में वन्य– जीवन जनसंख्या, आदिवासियों की पारंपरिक जीवन शैली आदि को सुरक्षा प्रदान कर संरक्षित किया जाता है। भारत ने यथास्थल संरक्षण में उल्लेखनीय कार्य किया है। देश में कुल 89 राष्ट्रीय पार्क हैं, जो 41 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर फैले हैं। जबकि देश में कुल 500 अभ्यारण्य हैं जो कि लगभग 120

लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर फैले हैं। देश में कुल 17 जैवमण्डल रिजर्व हैं। नीलगिरि जैवमण्डल रिजर्व भारत का पहला जैवमण्डल रिजर्व था, जिसकी स्थापना सन 1986 में की गयी थी। यूनेस्को ने भारत के सुन्दरवन रिजर्व, मन्नार की खाड़ी रिजर्व तथा अगस्थमलय जैवमण्डल रिजर्व को विश्व जैवमण्डल रिजर्व का दर्जा दिया है।

2. बहिःस्थल संरक्षण – यह संरक्षण कि वह विधि है जिसमें प्रजातियों का संरक्षण उनके प्राकृतिक आवास के बाहर जैसे वानस्पतिक वाटिकाओं जन्तुशालाओं, आनुवंशिक संसाधन केन्द्रों, संवर्धन संग्रह आदि स्थानों पर किया जाता है। इस विधि द्वारा पौधों का संरक्षण सुगमता से किया जा सकता है। इस विधि में बीज बैंक, वानस्पतिक वाटिका, ऊतक संवर्धन तथा आनुवंशिक अभियान्त्रिकी की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जहाँ तक फसल आनुवंशिक संसाधन का संबंध है भारत ने बहिःस्थल संरक्षण में भी प्रसंशनीय कार्य किया है। जीन कोष में 34,000 से ज्यादा धान्य फसलों (गेहूँ, धान, मक्का, जौ एवं जई) तथा 22,000 दलहनी फसलों का संग्रह किया गया है जिन्हें भारत में उगाया जाता है। इसी तरह का कार्य पशुधन कुक्कुट पालन तथा मत्स्य पालन के भी क्षेत्र में किया गया है।

भारत में जैव विविधता का संरक्षण हेतु विभिन्न परियोजनायें:

कस्तूरी मृग परियोजना 1970: नर कस्तूरी मृग के शरीर के पिछले भाग में स्थित एक ग्रंथि से कस्तूरी नामक पदार्थ प्राप्त होता है, जो दुनिया के सबसे मंहगे पशु उत्पादों में से एक है., जिसके कारण लोगों द्वारा बड़े पैमाने पर कस्तूरी मृग का शिकार किया जाता था, परिणामस्वरूप कस्तूरी मृग की प्रजाति विलुप्तता के कगार पर पहुंच गई थी. अतः भारत सरकार ने वर्ष 1970 में इंटरनेशनल यूनियन फॉर कन्जर्वेशन ऑफ नेचर (IUCN) के सहयोग से उत्तराखण्ड के केदारनाथ अभ्यारण्य में कस्तूरी मृग परियोजना शुरू की थी।

हंगुल परियोजना 1970 : हंगुल, यूरोपीय रेंडियर प्रजाति का लाल हिरण का एक नस्ल है. भारत में इसका निवास स्थान कश्मीर घाटी और हिमाचल प्रदेश का चम्बा जिला है. कश्मीर में यह मुख्य रूप से दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान में मिलता है. यह जम्मू–कश्मीर का राजकीय पशु है. भारत सरकार द्वारा 1970 में हंगुल के संरक्षण के लिए हंगुल परियोजना की शुरुआत की गई थी।

बाघ परियोजना 1973 : भारत सरकार द्वारा डब्ल्यूडब्ल्यूएफ इंटरनेशनल के सहयोग से 1973 में बाघ परियोजना को शुरू की गयी थी, और यह इस तरह की पहली पहल थी जिसका उद्देश्य मुख्य प्रजातियों और उसके सभी निवास स्थानों की रक्षा करना था।

मगरमच्छ संरक्षण कार्यक्रम 1975 : प्रजनन केंद्रों का निर्माण कर उनके प्राकृतिक निवास में मगरमच्छों की शेष आबादी की रक्षा करने के उद्देश्य से 1975 में मगरमच्छ प्रजनन और संरक्षण का एक कार्यक्रम शुरू किया गया था। देश में सबसे सफल पूर्व स्वस्थानी संरक्षण प्रजनन परियोजनाओं में से एक है।

गैंडा संरक्षण परियोजना 1987 : एक सींग वाले गैंडे के सींगो की अंतरराष्ट्रीय बाजार में काफी कीमत है क्योंकि इससे कामोत्तेजक औषधियाँ बनाई जाती है। इस कारण इन गैंडों का अवैध तरीके से शिकार किया जाता है, परिणामस्वरूप इनकी संख्या काफी कम हो गई है, अतः भारत सरकार ने वर्ष 1987 में गैंडा परियोजना की शुरुआत की थी।

हाथी संरक्षण परियोजना 1992 : उत्तर और पूर्वोत्तर भारत तथा दक्षिण भारत में हाथियों के प्राकृतिक निवास में उनकी एक व्यवहार्य आबादी की लंबी अवधि के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए 1992 में हाथी परियोजना शुरू की गयी थी। यह 12 राज्यों में लागू की गयी है।

गिद्ध संरक्षण परियोजना 2006 : गिद्धों के संरक्षण के लिए हरियाणा वन विभाग तथा मुंबई नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के बीच 2006 में एक समझौता हुआ था जिसके अन्तर्गत गिद्ध संरक्षण प्रोजेक्ट की शुरुआत की गई थी। इसी परियोजना के तहत असम के धरमपुर में देश का पहला गिद्ध प्रजनन केन्द्र खोला गया है।

हिम तेंदुआ संरक्षण परियोजना 2009 : हिम तेंदुआ एक सुन्दर, लेकिन अत्यंत दुर्लभ जीव है, यह जीव हिमालय की ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं में वृक्षविहीन स्थानों पर देखने को मिलता है। इस फुर्तीले वन्यजीव का शिकार इसकी हड्डियों, चमड़े और नाखून आदि के लिए किया जाता है। हिम तेंदुओं की घटती संख्या को देखते हुए 2009 में इसके संरक्षण के लिए हिम तेंदुआ परियोजना की शुरुआत की गई थी। इस परियोजना के तहत पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग में हिम तेंदुआ संरक्षण केन्द्र खोला गया है।

पौधों, जन्तुओं एवं सूक्ष्मजीवों सहित विभिन्न प्रकार के जीवधारी, जो इस ग्रह पर हमारे सहभागी हैं, संसार को रहने योग्य एक सुन्दर स्थान का रूप प्रदान करते हैं। सजीव जीवधारी पर्वतीय चोटियों से लेकर समुद्र की गहराइयों, मरुस्थलों से लेकर वर्षावनों तक लगभग सभी जगहों पर पाये जाते हैं। इनकी प्रकृतियों, व्यवहार, आकृति, आकार एवं रंग भिन्न–भिन्न होते हैं। जीवधारियों में पायी जाने वाली असाधारण विविधता हमारे ग्रह के अभिन्न एवं महत्त्वपूर्ण भागों की रचना करती है, हालाँकि निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या के कारण जैव विविधता को गम्भीर खतरों का सामना करना पड़ रहा है। जैव विविधता के संरक्षण हेतु मुख्य रणनीति सम्बन्धित पारितंत्रों में पर्यावास का संरक्षण है। वर्तमान में भारत में 96 राष्ट्रीय, 500 वन्यजीव अभ्यारण, 13 जैव मंडल रिजर्व, 27 टाइगर रिजर्व तथा 11 एलिफेंट रिजर्व हैं जो 15–67 मिलियन हेक्टेयर या देश के भौगोलिक क्षेत्र के 4.7% भाग पर फैले हुए हैं। भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने गहन संरक्षण एवं प्रबंधन के उद्देश्य से 21 आर्द्र भूमियों, 30 मैंग्रोव क्षेत्रों एवं 4 मूंगा चट्टानों (कोरल रीफ) की पहचान की है। इसी के साथ साथ जैव विविधता के संरक्षण हेतु जन भागीदारी आवश्यक है, जिसके लिए लोगों को जागरूक करने के लिए पर्याप्त कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। ooo

आजादी का अमृत महोत्सव

डॉ. वीरेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग

भारत दुनिया का सबसे पुराना राष्ट्र है, इसकी संस्कृति, ज्ञान विज्ञान, धन, सम्पदा, वैभव, ऐश्वर्य एवं तेजस्विता का सर्वस्व रहा है। दुनिया में अनेक संस्कृतियां आयी और चली गईं, लेकिन भारत की ओजस्विता अखण्ड रूप से आज भी विद्यमान है। इसका कारण भारत के वेद आदि ग्रन्थों का वैज्ञानिक आधार मजबूत है। विश्व के अनेक विद्वानों ने अपने शोध पत्रों एवं पुस्तकों में इसका वर्णन किया है। ऐसे ही एक विद्वान अर्नोल्ड ट्वानवी अपने पूरे जीवन के शोध का निष्कर्ष निकालते हुए लिखते हैं कि विश्व में 150 संस्कृतियां रहीं, जिन्होंने मनुष्यों पर अपना प्रभाव छोड़ा, लेकिन अनेक अल्पकाल में समाप्त हो गईं, केवल पांच संस्कृतियां थी, जिन्होंने दीर्घकाल तक अपना प्रभाव छोड़ा। यूनान, मिस्र, रोम, चीन और भारत। इनमें अब कुछ मृतप्रायः हो गई हैं, लेकिन हिंदू संस्कृति ने ही अपना प्रभाव स्थापित किया हुआ है। कवि ने कहा भी है कि ''यूनान, मिस्र, रोम सब मिट गये जहां से, बाकी बचा है लेकिन नामोनिशा हमारा।''

भारत 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था और 'विश्वगुरू' कहा जाता है लेकिन यह सच्चाई है कि भारत सोने की चिड़िया और विश्व गुरू रहा है। विश्व के अनेक व्यापारी इस देश में व्यापार करने और शिक्षा ग्रहण करने आते थे। लेकिन भारत में कुछ लुटेरे और मक्कार लोग भी भारत आए, जिन्होंने भारत में व्यापार किया और उसके साथ भारत को लूटा। इस काल खण्ड में लुटेरों ने आपसी राजाओं की फूट, विलासिता के कारण भारत के कुछ हिस्सों पर कब्जा कर लिया तथा राजाओं को आपस में लड़ाकर राज्य हड़प की नीति अपनाकर भारत को गुलाम बनाने की भरपूर कोशिश की लेकिन पूरा भारत कभी गुलाम नहीं रहा। भारत के किसी न किसी कोने में संघर्ष चलता रहा। सभी ने गुलामी स्वीकार नहीं की लेकिन इतिहास में उन घटनाओं को नहीं बताया गया और कहा जाता रहा कि भारत सैकड़ों वर्ष मुगलों एवं अंग्रेजों का गुलाम रहा। उसमें लाखों लोगों के संघर्ष को भुला दिया गया। भारत के लोग शताब्दियों तक संघर्ष करते रहे, लाखों वीर पुत्रों ने स्वयं को न्यौछावर कर दिया। राष्ट्र के स्व के लिए स्वयं को भुला दिया और इन संघर्षों के बाद 1947 में हमने पूर्ण आजादी प्राप्त की। संघर्ष के इस पूरे काल खण्ड में बाधाओं को चीरता हुआ अपना राष्ट्र वीर पुत्रों की शक्तियों से आगे बढ़ता रहा। इन 75 वर्षों में अपने देश ने शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, उत्पादन, खेल आदि सभी क्षेत्रों में काफी तरक्की की है। हम निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। परन्तु हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि यह अवसर हमें उन महापुरुषों के बलिदान, त्याग, तपस्या और यातनाएं सहकर मिला है जो शताब्दियों तक लड़े और अड़े रहे। स्वाधीनता के 75 वर्ष बाद आज हम ऐसे स्थान पर खड़े हैं, जहां से एक वैभवशाली भारत का चित्र कुछ–कुछ दिखाई दे रहा है। चित्र स्पष्ट हो सके इसके लिए हमें अतीत की उन गलतियों से सीखना होगा, जिन्होंने परतन्त्रता को आमंत्रित किया और उन घटनाओं से प्रेरणा लेनी होगी जिन्होंने स्वयं को जगाये रखा है।

विश्व विजेता का स्वप्न लिये लगभग 2400 वर्ष पूर्व यूनानी आक्रांता सिकन्दर भारत आया जरूर लेकिन राजा पुरू (पोरस) के पराक्रम से वह वापस यूनान तक नहीं पहुंच सका। सिकन्दर का सेनापति सैल्यूकस अपने स्वामी के सपनों को पूरा करने के लिए आया तो चन्द्रगुप्त मौर्य की वीरता के सम्मुख उसे अपनी पुत्री को सौंपकर समझौता कर वापस जाना पड़ा। पुरू और चन्द्रगुप्त मौर्य में एक ही समानता थी, स्वतन्त्रता, स्वाधीनता और संस्कृति का स्मरण। 712 ई. में मोहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर आक्रमण किया। उसके सामने राजा दाहिर चट्टान बनकर खड़े हो गये, हालांकि कासिम बहुत सारा धन लूटकर ले गया, राजा दाहिर की दोनों पुत्रियों को लूटकर ले गया। कई सौ वर्षों तक अफगानिस्तान की सीमा से अरबों ने अपनी तलवारों से उनका मार्ग अवरुद्ध रखा। मौहम्मद गजनी ने 17 बार आक्रमण किया। लगातार उसे प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। 1191 ई. में मुहम्मद गौरी को तराई के मैदान में सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने धूल चटा दी थी और अपने आदर्श का पालन करते हुए भागती हुई सेना पर भी वार नहीं किया और भाग जाने दिया। वीरता एवं पराक्रम की इस श्रृंखला में राजा उदयवीर सिंह, महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह, बन्दावीर वैरागी जुड़ते चले गये। 1568 चित्तौड़ के युद्ध में अकबर द्वारा 30 हजार (महिलाएं, बच्चे, व्यापारी, इनमें कोई सैनिक नहीं था) सामान्य नागरिकों का सामूहिक नरसंहार

कभी भी क्षमा योग्य नहीं हो सकता। इस प्रकार कभी भी पूरा भारत मुगलों के अधीन नहीं हो सका। औरंगजेब के समय में तो शिवाजी के नेतृत्व में प्रतिरोध पूरे भारत में चरम पर था। गुरू परम्परा के दशवें गुरू गोविन्द सिंह के पुत्रों के बलिदान ने बलिदानी परम्परा के नये मानक स्थापित किये, जो युगों-युगों तक स्वयं की रक्षा के लिये प्रेरित करते रहेंगे।

अंग्रेज षड्यन्त्रपूर्वक भारत में व्यापार करने आये और शासन स्थापित करने की उनकी मनसा का पग-पग पर विरोध हुआ। अंग्रेजों की षड्यन्त्रकारी 'फूट डालो-राज करो' की नीति देश में चलाकर एक राजा को दूसरे राजा से लड़ाकर, दूसरे राजा को तीसरे राजा से लड़ाकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रूप में भारत में शासन स्थापित किया। लेकिन भारत में साधु सन्तों ने उनका सशक्त विरोध किया तथा आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वत्व का जागरण कर स्वराज एवं स्वदेशी की अलख जगाकर इसे आगे बढ़ाया और अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि विदेशी राजा प्रजा का पुत्रवत पालन भी करे तो भी स्वदेशी राजा से अच्छा नहीं हो सकता। सन् 1920 में असहयोग के रूप में खिलाफत आन्दोलन के समय स्वाधीनता के लिये लड़ने वालों को अंग्रेजों के अत्याचार सहने पड़े। 1930 ई. के सविनय अवज्ञा आंदोलन में अंग्रेजी सरकार को कमजोर करने के लिए पूरा भारत उठ खड़ा हुआ, जिसमें अंग्रेजी सरकार के कानूनों की अवज्ञा करनी थी। इसके परिणामस्वरूप नमक सत्याग्रह एवं जंगल सत्याग्रह हुए। स्वतंत्रता आन्दोलन में देश-विदेश में अंग्रेजी सरकार को घेरने के लिये अनेक क्रान्तिकारियों ने अलग-अलग माध्यमों से देश-विदेश की यात्राएं की, जिसमें सुभाष चन्द्र बोस, वीर सावरकर, श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि जैसे प्रतिभावान क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजों के बीच रहकर ही उनके घर में घुसकर चुनौती दी। वहीं देश में रहकर भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, रानी लक्ष्मीबाई, लाल-बाल-पाल, महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार, मदन मोहन मालवीय, दुर्गा भाभी जैसे महान नायकों ने स्व की प्राप्ति और स्व की रक्षा के लिए जीवन की भेंट चढ़ा दी तथा तिल-तिल कर जला दिया ऐसा कोई भी जिला नहीं था, जहाँ के हजारों लोगों ने अपने प्राणों की आहुति न दी हो। करोड़ों लोग शहीद हुए तब जाकर 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। भारत से अंग्रेज चले गये लेकिन इसके बाद पुर्तगाली तथा फ्रांसीसियों का शासन भारत के कुछ हिस्सों में बना रहा, जिसमें भारत सरकार की उदासीनता बनी रही। लेकिन देशभक्त नेताओं और संघ के स्वयं सेवकों की जागरूकता के कारण दादर नागर की हवेली, पणजी, गोवा को भी स्वतंत्र कराया गया।

भारत सरकार ने इस वर्ष आजादी अमृत महोत्सव मनाने का निर्णय किया है, जिसके कारण ज्ञात एवं अज्ञात शहीदों को और देश भक्तों को याद करने का मौका हमें मिला है। हमें आजादी को बनाए रखने के लिए सदैव सजग रहना चाहिए। ooo

भारतीय अर्थव्यवस्था और कोरोना संकट : चुनौतियाँ और समाधान

डॉ. तरूण बाबू
असिस्टेंट प्रोफेसर
वाणिज्य संकाय

वित्त वर्ष 2021–22 में भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 11 प्रतिशत और सांकेतिक जीडीपी वृद्धि दर 15.4 प्रतिशत रहेगी, जो देश की आजादी के बाद सर्वाधिक है। व्यापक टीकाकरण अभियान, सेवा क्षेत्र में तेजी से हो रही बेहतरी और उपभोग एवं निवेश में त्वरित वृद्धि की संभावनाओं की बदौलत देश में 'ट' आकार में आर्थिक विकास संभव होगा। केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने संसद में आर्थिक समीक्षा 2020–21 पेश की, जिसमें कहा गया है कि पिछले वर्ष के अपेक्षा से कम रहने वाले संबंधित आंकड़ों के साथ–साथ कोविड–19 के उपचार में कारगर टीकों का उपयोग शुरू कर देने से देश में आर्थिक गतिविधियों के निरंतर सामान्य होने की बदौलत ही आर्थिक विकास फिर से तेज रफ्तार पकड़ पाएगा। देश के बुनियादी आर्थिक तत्व अब भी मजबूत हैं क्योंकि लॉकडाउन को क्रमिक रूप से हटाने के साथ–साथ आत्मनिर्भर भारत मिशन के जरिए दी जा रही आवश्यक सहायता के बल पर अर्थव्यवस्था बड़ी मजबूती के साथ बेहतरी के मार्ग पर अग्रसर हो गई है। इस मार्ग पर अग्रसर होने की बदौलत वर्ष 2019–20 की विकास दर की तुलना में वास्तविक जीडीपी में 2.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज होगी जिसका मतलब यही है कि अर्थव्यवस्था दो वर्षों में ही महामारी पूर्व स्तर पर पहुंचने के साथ–साथ इससे भी आगे निकल जाएगी। ये अनुमान दरअसल आईएमएफ के पूर्वानुमान के अनुरूप ही हैं, जिनमें कहा गया है कि भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर वित्त वर्ष 2021–22 में 11.5 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2022–23 में 6.8 प्रतिशत रहेगी। आईएमएफ के अनुसार भारत अगले दो वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि 'सौ साल में एक बार' भारी कहर ढाने वाले इस तरह के गंभीर संकट से निपटने के लिए भारत ने अत्यंत परिपक्वता दिखाते हुए जो विभिन्न नीतिगत कदम उठाए हैं, उससे विभिन्न देशों को अनेक महत्वपूर्ण सबक मिले हैं, जिससे वे अदूरदर्शी नीतियां बनाने से बच सकते हैं। इसके साथ ही भारत के ये नीतिगत कदम दीर्घकालिक लाभों पर फोकस करने के महत्वपूर्ण फायदों को भी दर्शाते हैं। भारत ने नियंत्रण, राजकोषीय, वित्तीय और दीर्घकालिक ढांचागत सुधारों के चार स्तम्भों वाली अनूठी रणनीति अपनाई। देश में उभरते आर्थिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए सुव्यवस्थित ढंग से राजकोषीय और मौद्रिक सहायता दी गई। इसके साथ ही इस दौरान क्रमिक रूप से अनलॉक करते समय संबंधित सरकारी उपायों के राजकोषीय प्रभावों और कर्जों की निरंतरता को भी ध्यान में रखते हुए लॉकडाउन के दौरान सर्वाधिक असुरक्षित पाए गए लोगों को आवश्यक सहायता दी गई और इसके साथ ही विभिन्न वस्तुओं के उपभोग एवं निवेश को काफी बढ़ावा मिला। अनुकूल मौद्रिक नीति से पर्याप्त तरलता सुनिश्चित हुई। इसी तरह मौद्रिक नीति के कदमों का लाभ प्रदान करते समय कर्जदारों को अस्थायी मोहलत के जरिए तत्काल राहत प्रदान की गई।

आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2020–21 में भारत की जीडीपी वृद्धि दर (–) 7.7 प्रतिशत रहने का अनुमान है। प्रथम छमाही में जीडीपी में 15.7 प्रतिशत की तेज गिरावट और दूसरी छमाही में 0.1 प्रतिशत की अत्यंत कम गिरावट को देखते हुए ही यह अनुमान लगाया गया है। विभिन्न क्षेत्रों पर नजर डालने पर यही पता चलता है कि कृषि क्षेत्र अब भी आशा की किरण है, जबकि लोगों के आपसी संपर्क वाली सेवाओं, विनिर्माण और निर्माण क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुए थे, जिनमें धीरे–धीरे सुधार देखे जा रहे हैं। सरकारी उपभोग और शुद्ध निर्यात के बल पर ही आर्थिक विकास में ज्यादा गिरावट देखने को नहीं मिल रही है।

जैसा कि अनुमान लगाया गया था, लॉकडाउन के कारण प्रथम तिमाही में जीडीपी में (–) 23.9 प्रतिशत की भारी गिरावट दर्ज की गई। वहीं, बाद में 'ट' आकार में वृद्धि यानी निरंतर अच्छी बढ़ोतरी देखने को मिल रही है जो दूसरी

तिमाही में जीडीपी में 7.5 प्रतिशत की अपेक्षाकृत कम गिरावट और सभी महत्वपूर्ण आर्थिक संकेतकों में हो रही बेहतरी में प्रतिबिंबित होती है। गत जुलाई माह से ही 'ट' आकार में आर्थिक बेहतरी निरंतर जारी है जो प्रथम तिमाही में भारी गिरावट के बाद दूसरी तिमाही में जीडीपी में दर्ज की गई अपेक्षाकृत कम गिरावट में परिलक्षित होती है। भारत में महामारी के प्रकोप के बाद बढ़ती गतिशीलता पर ध्यान देने पर यह पता चलता है कि विभिन्न संकेतक जैसे कि ई–वे बिल, रेल माल भाड़ा, जीएसटी संग्रह और बिजली की मांग बढ़कर न केवल महामारी पूर्व स्तरों पर पहुंच गई है, बल्कि पिछले वर्ष के स्तरों को भी पार कर गई है। राज्य के भीतर और एक राज्य से दूसरे राज्य में आवाजाही को फिर से चालू कर देने और रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गए मासिक जी.एस.टी. संग्रह से यह पता चलता है कि देश में औद्योगिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियों को किस हद तक उन्मुक्त कर दिया गया है। वाणिज्यिक प्रपत्रों की संख्या में तेज वृद्धि, यील्ड में कमी आने और एम.एस.एम.ई. को मिले कर्जों में उल्लेखनीय वृद्धि से यह पता चलता है कि विभिन्न उद्यमों को अपना अस्तित्व बनाए रखने और विकसित होने के लिए व्यापक मात्रा में कर्ज मिल रहे हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में बेहतरी के रुख को ध्यान में रखते हुए आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि वित्त वर्ष के दौरान विनिर्माण क्षेत्र में भी उल्लेखनीय मजबूती देखी गई, ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती मांग से समग्र आर्थिक गतिविधियों को आवश्यक सहारा मिला और इसके साथ ही तेजी से बढ़ते डिजिटल लेन–देन के रूप में उपभोग संबंधी ढांचागत बदलाव देखने को मिले। समीक्षा में कहा गया है कि कृषि क्षेत्र की बदौलत वर्ष 2020–21 में भारतीय अर्थव्यवस्था को कोविड–19 महामारी से लगे तेज झटकों के असर काफी कम हो जाएंगे। कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर पहली तिमाही के साथ–साथ दूसरी तिमाही में भी 3.4 प्रतिशत रही है। सरकार द्वारा लागू किए गए विभिन्न प्रगतिशील सुधारों ने जीवंत कृषि क्षेत्र के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है जो वित्त वर्ष 2020–21 में भी भारत की विकास गाथा के लिए आशा की किरण है।

वित्त वर्ष के दौरान औद्योगिक उत्पादन में 'ट' आकार में बेहतरी देखने को मिली विनिर्माण क्षेत्र ने फिर से तेज रफ्तार पकड़ी। इसी तरह औद्योगिक मूल्य या उत्पादन फिर से सामान्य होने लगा। भारत का सेवा क्षेत्र महामारी के दौरान गिरावट दर्शाने के बाद फिर से बेहतरी के मार्ग पर निरंतर अग्रसर हो गया है। दिसम्बर में पीएमआई सेवाओं के उत्पादन और नए कारोबार में लगातार तीसरे महीने बढ़ोतरी दर्ज की गई।

जोखिम न उठाने की प्रवृत्ति और कर्जों की घटती मांग के कारण वित्त वर्ष 2020–21 में बैंक कर्जों का स्तर निम्न स्तर पर बना रहा। हालांकि, कृषि एवं संबंधित गतिविधियों के लिए दिए गए कर्ज अक्टूबर 2019 के 7.1 प्रतिशत से बढ़कर अक्टूबर 2020 में 7.4 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गए। अक्टूबर 2020 के दौरान निर्माण, व्यापार एवं आतिथ्य जैसे क्षेत्रों में कर्ज प्रवाह में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, जबकि विनिर्माण क्षेत्र में बैंक कर्ज का प्रवाह धीमा ही बना रहा। सेवा क्षेत्र को कर्ज प्रवाह अक्टूबर 2019 के 6.5 प्रतिशत से बढ़कर अक्टूबर 2020 में 9.5 प्रतिशत हो गया।

खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतों के कारण ही वर्ष 2020 में महंगाई उच्च स्तर पर बनी रही। हालांकि, दिसम्बर 2020 में महंगाई दर गिरकर 4.2 प्रतिशत की लक्षित रेंज में आकर 4.6 प्रतिशत दर्ज की गई, जबकि नवम्बर में यह 6.9 प्रतिशत थी। खाद्य पदार्थों विशेषकर सब्जियों, मोटे अनाजों और प्रोटीन युक्त उत्पादों की कीमतों में गिरावट होने और पिछले वर्ष के अपेक्षाकृत कम आंकड़ों से ही संभव हो पाया।

बाह्य क्षेत्र से भी भारत में विकास को काफी सहारा मिला। दरअसल, चालू खाते में अधिशेष वर्ष की प्रथम छमाही के दौरान जीडीपी का 3.1 प्रतिशत रहा, जो सेवा निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि और कम मांग की बदौलत संभव हुआ। इस वजह से निर्यात (वाणिज्यिक निर्यात में 21.2 प्रतिशत की गिरावट के साथ) की तुलना में आयात (वाणिज्यिक आयात में 39.7 प्रतिशत की गिरावट के साथ) में तेज गिरावट दर्ज की गई। इसके परिणामस्वरूप देश में विदेशी मुद्रा भंडार इतना अधिक बढ़ गया जिससे 18 माह के आयात को कवर किया जा सकता है।

जीडीपी के अनुपात के रूप में बाह्य या विदेशी ऋण मार्च 2020 के आखिर के 20.6 प्रतिशत से मामूली बढ़कर सितम्बर 2020 के आखिर में 21.6 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गया।

हालांकि, विदेशी मुद्रा भंडार में उल्लेखनीय वृद्धि की बदौलत विदेशी मुद्रा भंडार और कुल एवं अल्पकालिक ऋण (मूल एवं शेष) का अनुपात बेहतर हो गया।

भारत वित्त वर्ष 2020–21 में भी पसंदीदा निवेश गंतव्य बना रहा, जो वैश्विक निवेश को शेयरों में लगाने और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में तेजी से बेहतरी आने की संभावनाओं के मद्देनजर संभव हो पाया है। देश में शुद्ध एफपीआई प्रवाह नवम्बर 2020 में 9.8 अरब डॉलर के सर्वकालिक मासिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गया जो निवेशकों में फिर से जोखिम उठाने की प्रवृत्ति बढ़ने, वैश्विक स्तर पर मौद्रिक नीति को उदार बनाने और घोषित किए गए राजकोषीय प्रोत्साहन पैकेजों के मद्देनजर अनुकूल यील्ड हासिल करने पर विशेष जोर देने और अमेरिकी डॉलर के कमजोर होने से संभव हुआ। भारत वर्ष 2020 में विभिन्न उभरते बाजारों में एकमात्र ऐसा देश रहा जहां इक्विटी में एफआईआई का प्रवाह हुआ।

तेजी से ऊंची छलांग लगाते सेंसेक्स और निफ्टी की बदौलत भारत ने बाजार पूंजीकरण और सकल घरेलू उत्पाद द्धजीडीपीऋ अनुपात अक्टूबर 2010 के बाद पहली बार 100 प्रतिशत के स्तर को पार कर गया। हालांकि, इससे वित्तीय बाजारों और वास्तविक क्षेत्र में कोई सामंजस्य न होने पर चिंता जताई जाने लगी है।

वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में निर्यात में 5.8 प्रतिशत और आयात में 11.3 प्रतिशत की गिरावट होने की संभावना है। भारत में चालू खाते में अधिशेष वित्त वर्ष 2021 में जीडीपी का 2 प्रतिशत रहने की संभावना है जो 17 वर्षों के बाद ऐतिहासिक उच्चतम स्तर है।

जहाँ तक आपूर्ति से जुड़ी स्थिति का सवाल है, सकल मूल्य वर्द्धित (जीवीए) की वृद्धि दर वित्त वर्ष 2020–21 में (–) 7.2 प्रतिशत रहने की संभावना है, जबकि वित्त वर्ष 2019–20 में यह 3.9 प्रतिशत आंकी गई थी। कोविड–19 महामारी के कारण वित्त वर्ष 2020–21 में भारतीय अर्थव्यवस्था को लगे तेज झटकों का असर कृषि क्षेत्र की बदौलत कम हो जाने की संभावना है क्योंकि इसकी वृद्धि दर 3.4 प्रतिशत रहने की आशा है, जबकि वित्त वर्ष के दौरान उद्योग एवं सेवा वृद्धि दर क्रमशः (–) 9.6 तथा (–) 8.8 प्रतिशत रहने की संभावना है।

आर्थिक समीक्षा में यह बात रेखांकित की गई है कि वर्ष 2020 के दौरान जहां एक ओर कोविड–19 महामारी ने व्यापक कहर ढाया, वहीं दूसरी ओर वैश्विक स्तर पर आर्थिक सुस्ती गहरा जाने की आशंका है जो वैश्विक वित्तीय संकट के बाद सर्वाधिक गंभीर स्थिति को दर्शाती है। लॉकडाउन और सामाजिक दूरी से जुड़े विभिन्न मानकों के कारण पहले से ही धीमी पड़ रही वैश्विक अर्थव्यवस्था और भी अधिक सुस्त हो गई। वर्ष 2020 में वैश्विक स्तर पर आर्थिक उत्पादन में 3.5 प्रतिशत (आईएफएम ने जनवरी 2021 में यह अनुमान लगाया है) की गिरावट आने का अनुमान है, जो पूरी शताब्दी में सर्वाधिक गिरावट को दर्शाती है। इसे ध्यान में रखते हुए दुनिया भर की सरकारों और केन्द्रीय बैंकों ने अपनी –अपनी अर्थव्यवस्था को आवश्यक सहारा देने के लिए अनेक नीतिगत उपाय किए जैसे कि महत्वपूर्ण नीतिगत दरों में कमी की गई, मात्रात्मक उदारीकरण उपाय किए गए, कर्जों पर गारंटी दी गई, नकद राशि हस्तांतरित की गई और राजकोषीय प्रोत्साहन पैकेज घोषित किए गए। भारत सरकार ने महामारी से उत्पन्न विभिन्न व्यवधानों को पहचाना और इसके साथ ही कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा भारत के लिए निराशाजनक विकास अनुमानों को व्यक्त किए जाने के बीच देश की विशाल आबादी, उच्च जनसंख्या घनत्व और अपेक्षा से कम स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी ढांचागत सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए अपने देश के लिए विशिष्ट विकास मार्ग पर चलना सुनिश्चित किया।

आर्थिक समीक्षा में इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि देश में महामारी का प्रकोप शुरू होने के समय (जब भारत में कोविड के केवल 100 पुष्ट मामले ही थे) ही जिस तरह से काफी सख्त लॉकडाउन लागू किया गया, वह यह दर्शाता है कि इससे निपटने के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदम कितने मायनों में अनूठे थे। पहला, महामारी विज्ञान और आर्थिक अनुसंधान दोनों से ही प्राप्त निष्कर्षों को ध्यान में रखकर नीतिगत उपाय किए गए। विशेषकर महामारी के फैलने को लेकर व्याप्त अनिश्चितता को ध्यान में रखते हुए सरकारी नीति के तहत हैनसन और सार्जेंट के नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले अनुसंधान (2001) को लागू किया गया, जिसके तहत ऐसी नीति अपनाने की सिफारिश की गई है, जिसमें बेहद विषम परिदृश्य में भी कम–से–कम लोगों की मृत्यु हो।

अप्रत्याशित महामारी को ध्यान में रखते हुए इस बेहद विषम परिदृश्य में अनेकों जिंदगियां बचाने पर विशेष जोर दिया गया। इसके अलावा, महामारी विज्ञान संबंधी अनुसंधान में विशेषकर ऐसे देश में शुरू में ही अत्यंत सख्त लॉकडाउन लागू किए जाने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है जहां अत्यधिक जनसंख्या घनत्व के कारण सामाजिक दूरी के मानकों का पालन करना काफी कठिन होता है। अत: लोगों की जिंदगियां बचाने पर फोकस करने वाली भारत के नीतिगत मानवीय उपाय के तहत यह बात रेखांकित की गई कि शुरू में ही सख्त लॉकडाउन लागू किए जाने से भले ही लोगों को थोड़े समय तक कष्ट हों, लेकिन इससे लोगों को मौत के मुंह से बचाने और आर्थिक विकास की गति तेज करने के रूप में दीर्घकालिक लाभ प्राप्त होंगे। दीर्घकालिक लाभ हेतु अल्पकालिक कष्ट उठाने के लिए हमेशा तैयार रहने वाले भारत द्वारा किए गए विभिन्न साहसिक उपायों से ही देश में अनेकों जिंदगियों को बचाना और 'ट' आकार में आर्थिक विकास संभव हो पाया है। दूसरा, भारत ने इस बात को भी अच्छी तरह से काफी पहले ही समझ लिया कि महामारी से देश की अर्थव्यवस्था में वस्तुओं की आपूर्ति और मांग दोनों ही प्रभावित हो रही हैं। इसे ध्यान में रखते हुए अनेक सुधार लागू किए गए, ताकि लॉकडाउन के कारण वस्तुओं की आपूर्ति में लंबे समय तक कोई खास व्यवधान न आए। इस दृष्टि से भी भारत का यह कदम सभी प्रमुख देशों की तुलना में अनूठा साबित हुआ है। वस्तुओं की मांग बढ़ाने वाली नीति के तहत इस बात को ध्यान में रखा गया कि विभिन्न वस्तुओं, विशेषकर गैर-आवश्यक वस्तुओं की कुल मांग के बजाय बचत पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो व्यापक अनिश्चितता की स्थिति में काफी बढ़ जाती है। अत: महामारी के आरंभिक महीनों, जिस दौरान अनिश्चितता बेहद ज्यादा थी और लॉकडाउन के तहत आर्थिक पाबंदियां लगाई गई थीं, में भारत ने अनावश्यक वस्तुओं के उपभोग पर बहुमूल्य राजकोषीय संसाधन बर्बाद नहीं किया। इसके बजाय नीति में सभी आवश्यक वस्तुओं को सुनिश्चित करने पर फोकस किया गया। इसके तहत समाज के कमजोर तबकों को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरित करने और 80.96 करोड़ लाभार्थियों को लक्षित करने वाले विश्व के सबसे बड़े खाद्य सब्सिडी कार्यक्रम पर ध्यान केन्द्रित किया गया। भारत सरकार ने संकटग्रस्त सेक्टरों को आवश्यक राहत प्रदान करने के लिए आपातकालीन ऋण गारंटी योजना भी शुरू की जिससे कि विभिन्न कंपनियों को अपने यहां रोजगारों को बनाए रखने और अपनी देनदारियों की अदायगी में मदद मिल सके।

'अनलॉक' चरण, जिस दौरान अनिश्चितता के साथ-साथ बचत करने की जरूरत कम हो गई और आर्थिक आवाजाही बढ़ गई, में भारत सरकार ने अपने राजकोषीय खर्च में काफी वृद्धि कर दी है। अनुकूल मौद्रिक नीति ने पर्याप्त तरलता या नकदी सुनिश्चित की और मौद्रिक नीति का लाभ लोगों को देने के लिए अस्थायी मोहलत के जरिए कर्जदारों को तत्काल राहत दी गई। अत: भारत की मांग बढ़ाने संबंधी नीति के तहत यह बात रेखांकित की गई है कि केवल बर्बादी को रोकने पर ही ब्रेक लगाया जाए और विभिन्न गतिविधियों में तेजी लाने का काम निरंतर जारी रखा जाए।

वर्ष 2020 में नोवल कोविड-19 वायरस का व्यापक कहर पूरी दुनिया पर ढाया जिससे लोगों की आवाजाही, सुरक्षा और सामान्य जीवन यापन सभी खतरे में पड़ गया। इस वजह से भारत सहित समूची दुनिया पूरी शताब्दी की सबसे कठिन आर्थिक चुनौती का सामना करने पर विवश हो गई। इस महामारी के मद्देनजर इस व्यापक संकट से निपटने की रणनीति सरकारों की सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति पर ही केन्द्रित हो गई। जहां एक ओर महामारी के बढ़ते प्रकोप को नियंत्रण में रखने की अनिवार्यता महसूस की जा रही थी, वहीं दूसरी ओर इसे काबू में रखने के लिए लागू किए गए लॉकडाउन के तहत विभिन्न आर्थिक गतिविधियों पर लगाई गई पाबंदियों से उत्पन्न आर्थिक सुस्ती से लोगों की आजीविका भी संकट में पड़ गई। आपस में जुड़ी इन समस्याओं के कारण ही 'जान भी है, जहान भी है' की नीतिगत दुविधा उत्पन्न हो गई। ●●●

1. मैं सिर्फ लोगों के अच्छे गुणों को देखता हूं, ना कि उनकी गलतियों को गिनता हूं।
2. दुनिया हर किसी की जरूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन हर किसी के लालच को पूरा करने के लिए नहीं है।

– विवेकानन्द

राष्ट्रीय ई–कॉमर्स पॉलिसी

डॉ. राजीव कुमार गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
वाणिज्य विभाग

पिछले कुछ दिनों से ई–कॉमर्स यानी कि इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स सुर्खियों में है। इसकी वजह से एक ओर जहाँ राष्ट्रीय ई–कॉमर्स पॉलिसी का ड्राफ्ट खबरों में रहा तो वहीं दूसरी ओर, ऑनलाइन शॉपिंग कंपनी फ्लिपकार्ट का अधिग्रहण अमेरिकी कंपनी वॉलमार्ट द्वारा किया गया। देश में एक तरफ, जहाँ ऑन–लाइन शॉपिंग का क्रेज बढ़ रहा है, तो वहीं दूसरी तरफ, उपभोक्ताओं को इससे नुकसान भी उठाना पड़ रहा है। लोगों की इन्हीं समस्याओं को देखते हुए सरकार ने इस पर प्रभावी कदम उठाने के लिये राष्ट्रीय ई–कॉमर्स पॉलिसी लाने का फैसला किया है। इसके लिये सरकार ने एक टास्क फोर्स का गठन किया है, जिसने ई–कॉमर्स पॉलिसी पर एक ड्राफ्ट तैयार करके सरकार को सौंप दिया है। इस ड्राफ्ट में कई सुझाव दिये गए हैं, जिनको यदि सरकार 'स्वीकार कर लेती है तो ऑनलाइन शॉपिंग के तौर– तरीके पूरी तरह बदल जाएंगे। इनमें डिस्काउंट देने की प्रक्रिया, नए प्रोडक्ट की उपलब्धता और शिकायतों का निवारण कैसे सरल तरीके से किया जाए इत्यादि मुद्दे शामिल हैं। बहरहाल, इस ड्राफ्ट का अध्ययन करने के लिये वाणिज्य मंत्रालय ने एक थिंक टैंक का गठन किया है। इस आर्टिकल के माध्यम से हम कई सवालों के जवाब तलाशने की कोशिश करेंगे, जैसे– ई–कॉमर्स किसे कहते हैं, इसके क्या लाभ हैं, इससे चुनौतियाँ क्या हैं और इसमें आगे की राह क्या है? तो चलिये एक–एक कर इन सभी पहलुओं पर विचार करते हैं।

ई–कॉमर्स क्या है? –

- दरअसल, इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स को ही शॉर्ट फॉर्म में ई–कॉमर्स कहा जाता है। यह ऑनलाइन व्यापार करने का एक तरीका है। इसके अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम के द्वारा इंटरनेट के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं की खरीद–बिक्री की जाती है।'
- आज के समय में ई–कॉमर्स के लिये इंटरनेट सबसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। यह बुनियादी ढाँचे के साथ–साथ उपभोक्ता और व्यापार के लिये कई अवसर भी प्रस्तुत करता है। इसके उपयोग से उपभोक्ताओं के लिये समय और दूरी जैसी बाधाएँ बहुत मायने नहीं रखती हैं।
- इसमें कंप्यूटर, इंटरनेट नेटवर्क, वर्ल्डवाइड वेब और ई–मेल को उपयोग में लाकर व्यापारिक क्रियाकलापों को संचालित किया जाता है।

यहाँ सवाल यह उठता है कि ई–कॉमर्स में उपभोक्ता यानी कि कंज्यूमर और बिजनेसमैन के बीच संबंधों की प्रक्रिया कैसे सुचारु रूप से संचालित होती है? आपको बता दें कि पॉपुलर तरीके से इनके बीच कई प्रकार के मॉडल कार्य करते हैं, जिसमें कुछ प्रमुख हैं।

- इनमें पहला है B2B यानी कि बिजनेस टू बिजनेस मॉडल। इसके अंतर्गत एक कंपनी किसी दूसरी कंपनी या फर्म को सामान बेचती है। इसके अंतर्गत वे कंपनियाँ या फर्म आते हैं जो खुद के प्रयोग के लिये सामान खरीदते हैं या फिर कच्चा माल खरीदकर उससे सामान तैयार करते हैं।
- दूसरे प्रकार का मॉडल है B2C यानी कि बिजनेस टू कंज्यूमर। इसके तहत कंज्यूमर किसी कंपनी से सीधे सामान खरीदता है।
- इसी प्रकार तीसरे तरह का मॉडल है C2C यानी कि कंज्यूमर टू कंज्यूमर। इसके तहत कंज्यूमर सीधे कंज्यूमर से संपर्क करता है। इसमें कंपनियों की कोई भूमिका नहीं होती है।
- चौथे प्रकार का मॉडल है C2B यानी कि कंज्यूमर टू बिजनेस। इसमें कंपनी सीधे कंज्यूमर से संपर्क करती है।
- इसी तरह बाजार में बढ़ती सामानों की मांग और उसकी आपूर्ति को देखते हुए ई–कॉमर्स की ऑनलाइन शॉपिंग में दो तरह के मॉडल अब ज्यादा पॉपुलर हो रहे हैं, जिनमें पहला है– मार्केटप्लेस मॉडल। इस मॉडल में ऑनलाइन कंपनियाँ केवल एक प्लेटफॉर्म उपलब्ध करा देती हैं, जहाँ से कंज्यूमर अपनी जरूरत के मुताबिक सामान खरीद सकता है। जैसे कि अमेजन, स्नैपडील, फ्लिपकार्ट इत्यादि। इसमें अन्य ऑनलाइन कंपनियों का कोई रोल नहीं होता है। इसी प्रकार दूसरा है इन्वेंटरी मॉडल, इसके तहत ऑनलाइन कंपनियाँ इस प्लेटफॉर्म पर अपनी कंपनी के द्वारा सामान बेचती हैं। इसमें अलीबाबा का नाम सबसे ऊपर आता है।

ई–कॉमर्स के लाभ –

- गौरतलब है कि ई–कॉमर्स के जरिये सामान सीधे उपभोक्ता

को प्राप्त होता है। इससे बिचौलियों की भूमिका तो समाप्त होती ही है, सामान भी सस्ता मिलता है। इससे बाजार में भी प्रतिस्पर्धा बनी रहती है और ग्राहक बाजार में उपलब्ध सामानों की तुलना भी कर पाता है, जिसके कारण ग्राहकों को उच्च गुणवत्ता वाला सामान मिल जाता है।

- ➢ एक तरफ ऑनलाइन शॉपिंग में ग्राहकों की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार तक पहुँच आसान हो जाती है तो वहीं दूसरी तरफ, ग्राहकों का समय भी बचता है।
- ➢ ई–कॉमर्स के जरिये छोटे तथा मझोले उद्यमियों को आसानी से एक प्लेटफॉर्म मिल जाता है, जहाँ वे अपने सामान को बेच पाते हैं। साथ ही इसके माध्यम से ग्राहकों को कोई भी स्पेसिफिक प्रोडक्ट आसानी से मिल सकता है।
- ➢ ई–कॉमर्स के जरिये परिवहन के क्षेत्र में भी सुविधाएँ बढ़ी हैं, जैसे ओला और उबेर की सुविधा। इसके अलावा मेडिकल, रिटेल, बैंकिंग, शिक्षा, मनोरंजन और होम सर्विस जैसी सुविधाएँ ऑनलाइन होने से लोगों की सहूलियतें बढ़ी हैं। इसलिये बिजनेस की दृष्टि से ई–कॉमर्स काफी महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है।
- ➢ ई–कॉमर्स के आने से विज्ञापनों पर होने वाले बेतहाशा खर्च में भी कमी देखी गई है। इससे सामान की कीमतों में भी कमी आती है।
- ➢ इसी तरह एक ओर, जहाँ शो–रूम और गोदामों के खर्चों में कमी आती है, तो वहीं दूसरी ओर, नए बाजार की संभावनाएँ भी बढ़ती हैं। साथ ही इससे वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति में तीव्रता आती है और ग्राहकों की संतुष्टि का ध्यान भी रखा जाता है।

इन्हीं तमाम खूबियों की वजह से ई–कॉमर्स से अनेक लाभ मिलते हैं। किन्तु इससे कुछ समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं, जिनको समझना भी अत्यन्त आवश्यक है।

चुनौतियाँ – गौरतलब है कि ऑनलाइन शॉपिंग को लेकर कंज्यूमर्स के मन में हमेशा संदेह का भाव बना रहता है कि उन्होंने जो प्रोडक्ट खरीदा है वह सही होगा भी या नहीं। इस वर्ष सरकार को ई–कॉमर्स से जुड़ी बहुत सी वेबसाइट्स के खिलाफ शिकायतें भी मिलीं, जिनमें कंज्यूमर का कहना था कि उन्होंने जो सामान बुक किया था, उसके बदले उन्हें किसी और सामान की डिलीवरी की गई या फिर वह सामान खराब था।

- ➢ इसी तरह कई बार लोगों की शिकायतें रहती हैं कि अब वे कहाँ इसके खिलाफ शिकायत करें, किससे इसकी क्षतिपूर्ति की मांग करें।
- ➢ एक तरफ, जहाँ इसको लेकर किसी ठोस कानून का अभाव है, तो वहीं दूसरी तरफ, लोगों में जागरूकता की कमी भी दिखती है।
- ➢ स्पष्ट नियम और कानून न होने की वजह से छोटे और मझोले उद्योगों के सामने कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं। वे बाजार की इस अंधी दौड़ में इन बड़ी–बड़ी कंपनियों का सामना नहीं कर पा रहे। ऐसे में बेरोजगारी के बढ़ने की आशंका भी जताई जा रही है।
- ➢ ऑनलाइन शॉपिंग के मामले में सुरक्षा को लेकर लोगों ने पहले से ही चिंता जाहिर की है। उनका मानना है कि ये कंपनियाँ उनका डेटा कलेक्ट कर रही हैं, जोकि चिंता की बात है।
- ➢ इसी प्रकार ऑनलाइन शॉपिंग में लोगों के क्रेडिट या डेबिट कार्ड की क्लोनिंग कर उनके बैंक खाते से रुपए निकाल लेना या फिर हैकरों के द्वारा बैंकिंग डेटा की हैकिंग कर लेना भी एक समस्या है। इतना ही नहीं, ऑनलाइन शॉपिंग के क्षेत्र में कार्यरत कुछ बड़ी कंपनियाँ अब सामानों की डिलीवरी ड्रोन से करने का मन बना रही हैं, जिसको लेकर सरकार और लोगों के चेहरों पर चिंता की लकीरें स्पष्ट दिख रही हैं।

आगे की राह– आज देश में ई–कॉमर्स सेक्टर से जुड़ा व्यापार करीब 25 अरब डॉलर का है। ऐसा अनुमान है कि अगले 40 वर्षों में यह व्यापार करीब 200 अरब डॉलर का हो जाएगा। अब सवाल यह उठता है कि इस क्षेत्र में इतनी तेज वृद्धि की आखिर वजह क्या है? आपको बता दें कि एक ओर देश की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर, स्मार्टफोन और डेटा टैरिफ सस्ते हो रहे हैं। इतना ही नहीं, नेटवर्क कनेक्टिविटी में वृद्धि होना भी इसका एक कारण है। इन्हीं सब वजहों को देखते हुए विशेषज्ञों का मानना है कि यह देश के लिये एक अवसर है, किंतु समस्या यह है कि ई–कॉमर्स को लेकर देश में अब तक कोई स्पष्ट नीति नहीं है। इस क्षेत्र में बढ़ रही संभावनाओं के मद्देनजर सरकार को एक स्पष्ट नीति लाने की जरूरत है, जिस तरह से ई–कॉमर्स क्षेत्र की कंपनियाँ लोगों का डेटा कलेक्ट कर रही हैं, उससे लोगों की चिंता बढ़ गई है। इधर डेटा सुरक्षा को लेकर गठित जस्टिस श्रीकृष्ण समिति ने भी सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। कुल मिलाकर, अब समय आ गया है कि सरकार इस पर विचार करे। इसी प्रकार ई–कॉमर्स पर गठित टास्क फोर्स के द्वारा तैयार किये गए ड्राफ्ट में उल्लिखित बातों पर भी अमल किये जाने की जरूरत है।

वस्तु एवं सेवा कर (GST) : एक आसान व्याख्या

डॉ. विशाल शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
वाणिज्य विभाग

वस्तु एवं सेवा कर या जीएसटी एक व्यापक, बहु–स्तरीय, गंतव्य–आधारित कर है, जो प्रत्येक मूल्य में जोड़ पर लगाया जाएगा। इसे समझने के लिए, हमें इस परिभाषा के तहत शब्दों को समझना होगा। आइए हम 'बहु–स्तरीय' शब्द के साथ शुरू करें। कोई भी वस्तु निर्माण से लेकर अंतिम उपभोग तक कई चरणों के माध्यम से गुजरता है। पहला चरण है कच्चे माल को खरीदना। दूसरा चरण उत्पादन या निर्माण होता है, फिर, सामग्रियों के भंडारण में डालने की व्यवस्था है। इसके बाद, उत्पादन रिटेलर या फुटकर विक्रेता के पास आता है और अंतिम चरण में रिटेलर अंतिम उपभोक्ता को माल बेचता है। भारत सरकार ने भारत में कई मौजूदा अप्रत्यक्ष करों को एक करने के उद्देश्य से जीएसटी की शुरूआत की। सरकार ने जीएसटी बिल 1 जुलाई, 2017 को पूरे देश के लिए माल और सेवाओं के निर्माण, बिक्री और उपभोग पर लगाए जाने वाले एक व्यापक कर के रूप में पेश किया।

जीएसटी की शुरूआत और कार्यान्वयन भारतीय कर सुधार में एक महत्वपूर्ण कदम था, इसने व्यवसायों के टैक्स को देखने के तरीके को बदल दिया है। जीएसटी लागू करने के पीछे का विचार कर व्यवस्था को सरल बनाना और इसे अधिक सुव्यवस्थित बनाना है। जीएसटी का लक्ष्य कर संग्रह के नेटवर्क को विस्तृत करना और प्रक्रिया को व्यापार और विकास के अनुकूल बनाना है।

उपभोक्ताओं को जीएसटी के लाभ : जीएसटी यानी गुड्स एण्ड सर्विसेज टैक्स को लागू किए जाने के बाद इसके फायदे–नुकसान के बारे में चर्चा होती रही है। पहले कई सारे टैक्स होते थे जैसे एक्साइज ड्यूटी, सैस, प्रवेश कर, सर्विस टैक्स, वैट आदि। हर लेवल पर टैक्स लगता था जबकि अब कैटेगरी के हिसाब से एक कर की दर तय कर दी गई है। यहाँ जानें कि क्या हैं जीएसटी के फायदे....

1. वस्तुओं और सेवाओं की कीमत में कमी –

➢ जीएसटी ने सेवा कर, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, लक्जरी कर, बिक्री कर आदि जैसे कई करों को जोड़ दिया है। इससे कर गणना और संग्रह प्रक्रिया काफी सरल हो गई है।

➢ जीएसटी ने कर एकत्रित करने की प्रक्रिया की पारदर्शिता में सुधार किया है।

➢ उद्योग के विशेषज्ञों का मानना है कि जीएसटी के कारण लंबे समय में वस्तुओं और सेवाओं की लागत में कमी आएगी, इसका कारण यह है कि पहले कई मूल्य वर्धित कर (वैट) की वजह से माल और सेवाओं की कीमत में बढ़ोत्तरी का कारण बने। अब एक कर उस समस्या को मिटा देगा।

➢ 20 लाख से कम टर्नओवर वाले सेवा प्रदाताओं को जीएसटी का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है। उत्तर–पूर्वी राज्यों में यह सीमा 10 लाख रुपये है। यह छोटे व्यवसायों के लिए एक बड़ा लाभ है, क्योंकि वे समय बर्बाद करने वाली कराधान प्रक्रिया से बच सकते हैं और अपनी व्यावसायिक गतिविधियों पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

➢ जी.एस.टी. कपड़ा उद्योग जैसे असंगठित क्षेत्रों के लिए बहुत आवश्यक विनियमन लाएगा। भारत में, असंगठित क्षेत्र बड़े पैमाने पर रोजगार प्रदान करने के साथ भारी रेवन्यु जनरेट करते हैं, लेकिन जब कर की बात आती है, तो वे काफी अनियमित रहते हैं। जीएसटी इस विसंगति को ठीक करने का प्रयास करना है।

➢ वर्तमान कराधान प्रणाली के तहत, वस्तुओं और सेवाओं के लिए अलग–अलग कर हैं। इसके लिए, कर देयता निर्धारित करने के लिए लेन–देन मूल्यों को माल और सेवाओं के मूल्यों से अलग करना होगा। यह जटिलता सिरदर्द के समान है। जीएसटी इस समस्या का समाधान साबित होगा।

➢ इससे पहले, सरकार को कई अप्रत्यक्ष करों को संचालित करने का जटिल कार्य करना पड़ता था। लेकिन GST की रीढ़ समान GST नेटवर्क (GST), GST ऑपरेशन से संबंधित सभी प्रक्रियाओं को संचालित करेगा। यह पूरी तरह से एक संघटित प्लेटफॉर्म है, जो जीएसटी गतिविधियों के संचालन को सरल और सुनिश्चित करेगा।

➢ उपभोग के अंतिम स्थान पर ही जीएसटी लगाया जाएगा, जिससे निर्माता से लेकर रिटेल आउटलेट तक दोहरे कराधान को हटाया जा सकेगा। यह आर्थिक समस्याओं को खत्म करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

2. देश भर में समान कीमत –

➢ जीएसटी ने भारत जीडीपी (ग्रास डोमेस्टिक प्रोडक्ट) को बढ़ावा दिया है। देश की जीडीपी समय के साथ देश की आर्थिक दक्षता और वृद्धि को दर्शाती है। जी.एस.टी. ने विविध उद्योग को समान कर कानून के तहत शामिल किया है, जिससे व्यवसायों के लिए काम करना आसान हो गया है।

➢ जीएसटी के मुख्य लाभ में से एक यह है कि करदाता ऑन

लाइन पंजीकरण, रिटर्न दाखिल करना और कर का भुगतान सब कुछ ऑनलाईन जीएसटी पोर्टल के माध्यम से कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में ऐसा सिस्टम है, जो सप्लायर और खरीद्दार के चालान की तुलना करती है। यह सिस्टम कर धोखाधड़ी और कर चोरी को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करेगा। साथ ही यह राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एक संरचित और संगठित तरीके से व्यापार को सुनिश्चित करेगा।

➢ पहले की वैट प्रणाली में, ई-कॉमर्स व्यवसायों का कर अनुपालन के संबंध में काफी अंतर था। लेकिन जी.एस.टी. ने इससे संबंधित सभी उलझनों को दूर कर दिया है। संपूर्ण ई-कॉमर्स क्षेत्र, पैन-इंडिया सभी को अब जी.एस.टी. कानून के तहत रखे गए प्रावधानों का पालन करना होगा। इसने अंतर्राज्यीय माल की आवाजाही से संबंधित जटिलताओं को भी समाप्त कर दिया है।

3. सरलीकृत कर प्रणाली :

➢ जीएसटी पूरी तरह से एक आईटी-संचालित कानून है। जबकि यह विचार भारत में काफी नया है, इस प्रणाली को पूर्ण रूप से लागू करने के लिए आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर की जरूरत पड़ती है लेकिन सभी राज्यों में इसके लिए जरूरी ढांचे की अभी भी कमी है।

➢ जो कंपनियां कई राज्यों में अपना कारोबार संचालित करती हैं, उन्हें उन सभी राज्यों में पंजीकरण कराना होगा। यह जटिलता पैदा करता है, जो कि पहले की प्रणाली में मौजूद नहीं था।

➢ जीएसटी लागू होने के बाद कुछ वस्तुओं पर अधिक खर्च होगा, ऐसी संभावना की जा रही है, जिन वस्तुओं का उपयोग लाखों लोग हर दिन करते हैं जैसे- बीमा रिन्युअल प्रीमियम, हेल्थ केयर, कूरियर सेवाएं, डीटीएच सेवाएं महंगी हो जाएँगी।

➢ जीएसटी को "विकलांगता कर" उपनाम भी दिया गया है, क्योंकि इसमें दिव्यांग लोगों के लिए जरूरी व्हीलचेयर, श्रवण यंत्र, ब्रेल पेपर आदि जैसे आइटम को कर के दायरे में रखा गया है।

➢ जीएसटी नेट ने अब तक पेट्रोल और पेट्रोलियम उत्पादों को बाहर रखा है। यह 'कर एकीकरण' के विचार से अलग है। हर राज्य इन उत्पादों पर अलग-अलग कर लगाता है। ये उद्योग या उनसे जुड़े लोग इनपुट टैक्स क्रेडिट का दावा नहीं कर सकते।

➢ कर अधिकारियों और अन्य संबंधित अधिकारियों को प्रभावी तरीके से नए नियमों को लागू करने और निगरानी करने के लिए व्यापक और संपूर्ण प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष : जीएसटी लगभग एक दर्जन करों की जगह पर लगाया गया है। पहले टैक्सपेयर को हर स्तर पर पहले ही लग चुके टैक्स पर भी टैक्स देना होता था। पहले की व्यवस्था में 5 लाख से ज्यादा के टर्नओवर वाले किसी भी बिजनस को वैट (वैल्यू ऐडेड टैक्स) चुकाना होता था। 10 लाख से कम टर्नओवर वाले सर्विस प्रोवाइडर्स के लिए सर्विस टैक्स में छूट थी। जीएसटी में अब इसे 20 लाख तक कर दिया गया है, जिससे छोटे व्यापारी व सर्विस प्रोवाइडर्स को लाभ मिला है।

छोटे व्यापारियों और करदाताओं को टैक्स फाइलिंग में राहत मिली है। जीएसटी के अंतर्गत छोटे व्यापारियों (20-75 लाख टर्नओवर) को कंपोजिशन स्कीम का लाभ लेने पर कम टैक्स होने का लाभ मिलता है। पहले की व्यवस्था में सर्विस टैक्स में कंप्लायंस और रिटर्न अलग-अलग होता था। जीएसटी ने दोनों को मिलाकर नंबर ऑफ रिटर्न्स कम हो गए हैं। साथ ही कंप्लायंस पर खर्च किया गया वक्त भी बचता है। ○○○

उड़ान है हौंसलों की

छाया शर्मा
बी.ए., तृतीय वर्ष

होंसला रख आगे बढने का
मुश्किलों से लड़ने का
यही तो एक तरीका है
ऊंची उड़ान भरने का

लड़खड़ा भी जाए गर
कदम तो गम ना कर
यही तो वक्त है तेरा
कुछ गुजर जाने का

भले ही राहों में मिले
पत्थर तो मिलने दो
हिम्मत कर आगे बढ़
तेरे पास ही है हर पल

बस एक बार भरोसा
कर ले तू खुद पर
मजा आने लगेगा तुझे
फिर गिरते-गिरते संभलने का

बस सब्र रख के देख
यही तो वक्त है
पत्थर के फूल बनाने का
हौंसला रख आगे बढ़ने का
मुश्किलों से लड़ने का।।

○○○

गणित का व्यवहारिक मूल्य

गुरूदत्त शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
बी० एड० विभाग

आज से 4000 वर्ष पहले बेबीलोन तथा मिश्र सभ्यताएं गणित का प्रयोग पंचाग बनाने में किया करती थीं, जिससे उन्हें पूर्व जानकारी रहती थी कि कब फसल की बुआई की जानी चाहिए या कब नील नदी में बाढ़ आयेगी। अंकगणित का प्रयोग व्यापार में रुपये–पैसों और वस्तुओं के विनिमय या हिसाब–किताब रखने के लिये भी किया जाता था। ज्यामिति का प्रयोग खेतों के चारों तरफ की सीमाओं के निर्धारण तथा पिरामिड जैसे स्मारकों के निर्माण में होता था। अपने दैनिक जीवन में रोजाना ही हम गणित का प्रयोग करते हैं। जैसे जब हम समय जानने के लिये घड़ी देखते हैं, अपने खरीदे गए सामान के खरीदने या बेचने के बाद रुपये–पैसों का हिसाब जोड़ते हैं या फिर फुटबॉल, टेनिस, क्रिकेट आदि खेल खेलते समय बनने वाले स्कोर का लेखा–जोखा रखते हैं।

आधुनिक युग में सभ्यता का आधार गणित ही है। मातृभाषा के अलावा ऐसा कोई विषय नहीं हैं जो दैनिक जीवन में इतना अधिक संबंधित हो। गणित को व्यापार का प्राण एवं विज्ञान का जन्मदाता माना जाता है। वर्तमान में गणित को विद्यालय के पाठ्य विषयों में विशेष स्थान प्रदान किया गया है। इसका मुख्य कारण है कि गणित विद्यार्थी को अपनी जीविका कमाने के योग्य बनाने के साथ वो उसके ज्ञान में वृद्धि करता है तथा जीवन के विभिन्न कार्यों को सीखने और करने में सहायता करता है। विद्यार्थियों का मानसिक विकास करके उनकी बुद्धि को प्रखर बनाता है।

यह विद्यार्थियों में स्पष्टता, आत्म विश्वास, शुद्धता, व एकाग्रता आदि गुणों का विकास करता है तथा चरित्र का निर्माण करता है। गणित के बौद्धिक मूल्य पर प्रकाश डालते हुए महान शिक्षा शास्त्री प्लेटो ने स्पष्ट किया है कि– *"गणित एक ऐसा विषय है जो मानसिक शक्तियों को प्रशिक्षित करने का अवसर प्रदान करता है। एक सुसुप्त आत्मा में चेतना एवं नवीन जागृति उत्पन्न करने का कौशल गणित ही प्रदान कर सकता है।"*

हमारे दैनिक जीवन में घर, बाहर, बाजार, आदि सभी में गणित के ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। गणित के ज्ञान के अभाव में व्यक्ति न तो परिवार को सुचारू ढंग से चला सकता है और न ही समाज में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर सकता है। इस प्रकार हमारे जीवन का कोई भी पहलू गणित के प्रयोग से अछूता नहीं है। हमारी दैनिक क्रियाएं, माप–तौल और गणनाएं गणित पर ही आधारित हैं। प्रातः काल जागने के बाद और रात को सोने से पूर्व तक गणित का उपयोग हमारी महती आवश्यकता है। कब सोना है? कब जागना है? कब ऑफिस जाना है? तथा किस समय पर कौन सा कार्य करना है? आदि सभी व्यवस्थाएं गणित पर ही आधारित हैं। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को गणित के ज्ञान की आवश्यकता होती है। चाहे वह व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित हो अथवा महत्वपूर्ण। ऐसा नहीं है कि गणित के ज्ञान की आवश्यकता केवल इंजीनियर, उद्योगपति, बैंककर्मी, डॉक्टर अथवा गणित के अध्यापक को ही होती है। बल्कि समाज का छोटे से छोटे व्यक्ति यथा मजदूर, रिक्शा चालक, बोझ ढोने वाले कुली, सब्जी बेचने वाला, बढ़ई, मोची आदि अन्य सभी व्यक्तियों को अपनी रोजी–रोटी कमाने तथा अपने परिवार की देखभाल करने के लिये गणित की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि हमारे समाज में प्रत्येक व्यक्ति जो अपनी जीविका कमाता है तथा आय–व्यय करता है। उसे किसी न किसी रूप में गणित के ज्ञान की आवश्यकता होती है। इस सम्बन्ध में यह कथन सत्य ही प्रतीत होता है कि लौह, वाष्प और विद्युत के इस युग में जिस ओर भी मुड़कर देखें गणित ही सर्वोपरि है। यदि यह रीढ़ की हड्डी निकाल दी जाए तो हमारी भौतिक सभ्यता का अन्त ही हो जाएगा।

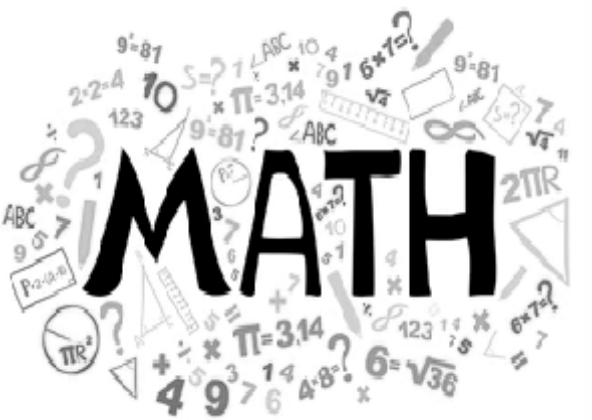

महर्षि गौतम का न्याय दर्शन

देव स्वरूप गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बी.एड. विभाग

भूमिका –

बचपन में हम लोगों को चंद्रमा में नजर आने वाले धब्बे को लेकर कई तरह की कहानियां सुनाई जाती हैं, ध्रुव तारे को लेकर कई तरह की बातें बताई जाती हैं। वैसे ही सप्तर्षियों के बारे में भी कई तरह की गौरव गाथा सुनाई जाती रही है। जहां आकाश में आकाश गंगा नजर आती है और उसके पास सप्त ऋषियों का एक झुंड भी नजर आता है ये सब ध्रुव तारे का चक्कर 24 घंटे में लगाते हैं। इन सप्तर्षियों के बारे में भी अलग–अलग रोचक कहानियां है और जिनका वर्णन वेद और पुराणों में किया गया है। उन सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार हैं वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र और भारद्वाज।

इन सप्तर्षियों में से महर्षि गौतम को न्याय दर्शन का प्रथम प्रवर्तक माना गया है, जिन्हें अक्षपाद गौतम के नाम से भी प्रसिद्धि प्राप्त है। ऐसा मानते हैं कि इनके पद अर्थात पैर में भी आँख थी। महर्षि गौतम की पत्नी अहिल्या थी जिन्हें गौतम ऋषि ने पाषाण होने का श्राप दिया था और भगवान राम के द्वारा ही अहिल्या इस श्राप से मुक्त हो पाई थी। महर्षि गौतम के पुत्र शतानंद और पुत्री का नाम विजया था। शतानंद महाराज जनक के पुरोहित थे। श्री महर्षि गौतम और अहिल्या के पुत्र शतानंद जी ने श्री राम विवाह में पुरोहित का कार्य किया था।

न्याय दर्शन–

न्याय का शाब्दिक अर्थ तर्क या निर्णय है जो इस बात का सूचक है कि यह दर्शन मुख्य रूप से बौद्धिक, विश्लेषणात्मक तथा तार्किक है इसे तर्कशास्त्र, प्रमाण शास्त्र, वादविद्या, वेतुविद्या, आनविक्षिकी आदि नामों से भी जाना जाता है। इसका मूल ग्रंथ गौतम कृत्य 'न्यायसूत्र' है।

न्याय दर्शन के आदि प्रवर्तक गौतम ऋषि माने गए हैं। इन्होंने न्यायसूत्रों का प्रणयन किया तथा शास्त्ररूप में प्रतिष्ठापित किया। सांख्य और योग दर्शन की तरह न्याय दर्शन का उद्देश्य मानव कल्याण रहा है। न्याय दर्शन भारत के छः वैदिक दर्शनों में से एक है, जिसके प्रवर्तक ऋषि अक्षपाद गौतम हैं। न्याय दर्शन की उत्पत्ति मिथिला प्रदेश में हुई मानी जाती है। इसका मूल ग्रंथ गौतम ऋषि का न्याय सूत्र माना जाता है।

ऋषि गौतम के 'न्यायसूत्र' से ही न्यायशास्त्र का इतिहास स्पष्ट होता है। न्याय दर्शन एक यथार्थवादी दर्शन है। गौतम ऋषि के न्याय दर्शन में सोलह तथ्यों का उल्लेख प्राप्त होता है, जिसमें प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रह स्थान हैं। न्याय चार तरह के प्रमाणों की चर्चा करता है– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

न्याय दर्शन के अनुसार बारह प्रकार के प्रमेय होते हैं जैसे आत्मा, शरीर, इंद्रियां, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रत्ययभाव, फल, दुःख और अपवर्ग। न्याय तर्क के द्वारा सत्य तक पहुंचने का मार्ग है। न्याय दर्शन से नित्य या प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य दुखों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

गौतम ऋषि वैदिक काल के प्रमुख ऋषियों में से एक माने गए हैं। गौतम ऋषि को मंत्रदृष्टा भी कहा गया है। वह अनेक मंत्रों के रचयिता भी माने गए हैं। न्याय दर्शन के आदि प्रवर्तक महर्षि गौतम हैं और यही अक्षपाद नाम से भी प्रसिद्ध हैं। भारतीय धर्म शास्त्रों के ज्ञाता गौतम ऋषि ने अपने ज्ञान कर्म द्वारा ऋषि–मुनि परंपरा में अग्रणी स्थान प्राप्त किया।

गौतम ऋषि के अनुसार प्रमाण, यथार्थ ज्ञान के चार साधन हैं–

1. **प्रत्यक्ष प्रमाण –** इन्द्रियों का विषय के साथ संबंध होने पर जो ज्ञान मिलता है, जो शब्दात्मक नहीं होता, तथा जो बाद में खंडित या बाधित न होने वाला निश्चयात्मक ज्ञान होता है, वही प्रत्यक्ष है। गौतम ऋषि ने, प्रमा–यथार्थ अनुभव और प्रमाण, उस यथार्थ अनुभव का कारण याने साधन, इनमें अन्तर नहीं किया, इसीलिए उन्होंने प्रत्यक्ष प्रमाण को ही प्रत्यक्ष प्रमाण कर दिया है। पश्चातवर्ती नैयायिकों ने प्रमा और प्रमाण में होने वाला अन्तर स्पष्ट किया। जयंतभट्ट ने अपनी 'न्यायमंजरी' में लिखा है कि

प्रत्यक्ष प्रमाण के इस गौतमकृत लक्षण में खंडित न होने वाला निश्चयात्मक ज्ञान, यह वर्णन सब प्रमाणों में समान रूप से लागू होता है।

2. **अनुमान प्रमाण –** प्रत्यक्ष के बाद गौतम ऋषि ने अनुमान का वर्णन किया है। गौतम ऋषि ने अनुमान का लक्षण नहीं दिया। अनुमान 'प्रत्यक्षपूर्वक' ज्ञान है। लेकिन प्रत्यक्ष पूर्वकत्व तो उपमान और शब्द प्रमाण में भी समान है। इसलिए गौतम ऋषि द्वारा किये हुए अनुमान के वर्गीकरण के आधार पर अनुमान का अन्य प्रमाणों से भेद करने की कोशिश न्यायसूत्र के टीकाकारों ने की है। गौतम ऋषि के अनुसार अनुमान तीन प्रकार का है– पूर्ववत, शेषवत और सामान्यतोदृष्ट। इस वर्गीकरण का निश्चित अर्थ बताने में वात्सायन, उद्योतकर आदि असफल रहे हैं। लेकिन सांख्यकारिका की गौडपादकृत टीका तथा दिङ्नागपूर्व बौद्ध तर्कग्रन्थों में पाये जाने वाले उल्लेखों के आधार पर हम इस वर्गीकरण का अर्थ स्थूल रूप में इस प्रकार बता सकते हैं–

जिसमें पूर्वकालीन उदाहरणों के आधार पर वर्तमानकालीन या भविष्यकालीन साध्य सिद्ध किया जाता है, वह पूर्ववत अनुमान है। जैसे कि आसमान में बादल घिरे हुए देखकर हम अनुमान लगाते हैं कि अब बारिश होगी। या धूम और अग्नि का हमेशा साथ रहना हमने देखा है, इससे हम वर्तमान में देखे गए धूम के बारे में अनुमान लगाते हैं कि यह धूम भी किसी अग्नि से उत्पन्न हुआ है।

जिसमें वर्तमान वस्तु स्थिति का ही एक देश देखकर उसके अवशिष्ट देश के सम्बन्ध में अनुमान किया जाता है, वह शेषवत अनुमान है। जैसे कि समुद्र की एक बूँद चखकर समुद्र का सारा पानी खारा है, ऐसा अनुमान मान लिया जाता है।

जिस अनुमान में दिये जाने वाले प्रत्यक्ष दृष्ट उदाहरण साध्य के साक्षात् उदाहरण नहीं है, साध्य की जाति के नहीं हैं, बल्कि साध्य के सदृश हैं। वह अनुमान सामान्य यानी सादृश्य पर आधारित होने के कारण सामान्यतोदृष्ट कहलाता है, बल्कि साध्य का दर्शन सादृश्य के माध्यम से ही हो सकता है। जैसे कि चंद्र की गति हम प्रत्यक्षतः नहीं देख सकते, लेकिन चंद्र अपना स्थान बदलता है, इतना हम देख सकते हैं। इस स्थानान्तरण से हम अनुमान लगाते हैं कि चंद्र जरूर गतिमान है। उसी प्रकार ज्ञानेन्द्रियों का प्रत्यक्ष ज्ञान हमें कभी नहीं होता है, बल्कि दूसरे क्रिया साधकों के साथ सादृश्य जानकर ज्ञान साधन के रूप में हम सिर्फ उनका अनुमान ही कर सकते हैं।

3. **उपमान प्रमाण –** तीसरा उपमान प्रमाण है। उपमान किसी अप्रसिद्ध वस्तु की ऐसी जानकारी है, जो प्रसिद्ध वस्तु के साथ उसका साधर्मय जानकर होती है। जैसे हमें अगर गवय नामक प्राणी की जानकारी न हो और हमें किसी सत्य वक्ता ने बताया हो कि गवय बैल होता है, तो उसके बताए हुए सादृश्य के आधार पर हम गवय को पहचान सकते हैं। चौथा शब्द प्रमाण है, जो आप्त (यथार्थवक्ता) का वचन है।

4. **शब्द प्रमाण –** आत्मा, शरीर, इन्द्रिय एवं ज्ञानेन्द्रियाँ, अर्थ बुद्धि (ज्ञान) मानस प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव (मरणोत्तर अस्तित्व) फल, दुरुख और अपवर्ग (मोक्ष) यह बारह प्रमेय हैं। इनके स्वरूप का ज्ञान अपवर्ग के लिए उपयोगी है। गौतम मानते हैं कि अपवर्ग के लिए सर्वप्रथम मिथ्या ज्ञान का नाश होना चाहिए। उसी से काम, क्रोधादि दोषों का नाश हो सकता है। उससे कर्म के प्रति प्रवृत्ति का नाश होगा तथा प्रवृत्ति नाश से ही पुनर्जन्म श्रृंखला खंडित होगी। पुनर्जन्म श्रृंखला खंडित होने से ही दुरूख का नाश होगा और दुरुख नाश ही अपवर्ग का स्वरूप है। इसीलिए यह स्वाभाविक है कि दुरूख, जन्म (प्रत्यभाव), प्रवृत्ति, दोष, ज्ञान तथा अपवर्ग और इनके आश्रयभूत द्रव्य आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ और मनस के स्वरूप के बारे में मिथ्या ज्ञान नष्ट हो, क्योंकि यथार्थ ज्ञान होना अपवर्ग के लिए अत्यावश्यक है। इस प्रकार गौतम के प्रमेयों की सूची उनके द्वारा प्रतिपादित मोक्ष मार्ग से ताल्लुक रखती है।

जब किसी वस्तु में किसी अन्य वस्तु के अनेक समान धर्म दिखाई देते हैं, जैसे– खम्भे में ऊँचाई, कालापान आदि जो किसी मनुष्य में भी दिखाई देते हैं, लेकिन जिनके आधार पर भेद किया जा सके, ऐसे विशेष धर्म स्पष्ट नहीं दिखाई देते, तब संशय पैदा होता है, जैसे– खम्भे के बारे में यह खम्भा है,ऐसा निश्चय न हो, बल्कि खम्भापन और

मनुष्यत्व इन दोनों विशेष धर्मों का स्मरण हो, तब दोनों विशेष धर्मों में से कौन-सा विशेष धर्म है, आगे आने वाली वस्तु खम्भा है या मनुष्य, ऐसा संशय हो सकता है। न्याय दर्शन में संशय का बड़ा महत्व है। प्राचीन नैयायिकों ने कहा है कि संशय ही न्याय का द्वार है।

सिद्धांत के प्रकार –

जिस उद्देश्य से कोई प्राणी प्रवृत्त होता है, वह प्रयोजन है, जिसके बारे में सामान्य जन तथा परीक्षक दोनों की सहमति होती है, वह दृष्टांत कहलाता है। सिद्धांत चार प्रकार का होता है।

सर्वतंत्र – यह सब शास्त्रकारों को मान्य है।

प्रतितंत्र – यह थोड़े ही शास्त्रकारों को मान्य है।

अधिकरण – जिसके आधार पर दूसरे सिद्धांत सिद्ध किए जाते हैं।

अभ्युपगम – जो किसी दूसरे सिद्धांत की सिद्धि के लिए थोड़ी देर के लिए स्वीकृत किया जाता है।

न्याय में अवयव एक विशेष तत्व है। अवयव का अर्थ है, अनुमान के घटक, जब कोई व्यक्ति किसी हेतु पर आधारित अनुमान का प्रयोग करता है, तब उसे विशिष्ट आकार में ही प्रस्तुत करना चाहिए, ऐसा तार्किक मानते हैं। वह उचित आकार क्या है, इसके बारे में दार्शनिकों में मतभेद है। गौतम ऋषि और बाद में हुए वैशेषिकों के अनुसार यह आकार पांच घटकों से बनता है। प्रतिज्ञा (साध्य का कथन), हेतु या (साधन का कथन), दृष्टांत (उदाहरण), उपनय (दृष्टांत और साध्य में अपेक्षित साधर्मय या वैधर्मय का प्रदर्शन) और निगमन (निष्कर्ष का प्रतिपादन)। कारणोत्पत्ति (कार्य, कारण भाव) के आधार पर तत्व निश्चित की दिशा में जो विचार किया जाता है, वह विचार तर्क है। पक्ष और प्रतिपक्ष का विचार करते हुए जो पदार्थ का निश्चय किया जाता है, वही निर्णय है।

ooo

छात्र जीवन में पुस्तकालय का महत्व

के. के. श्रीवास्तव
पुस्तकालय प्रभारी

विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय बहुत महत्वपूर्ण संसाधन है। ऐसी बहुत–सी पुस्तकें होती हैं जो अत्यन्त दुर्लभ होती हैं और मंहगी भी होती हैं। हर व्यक्ति उसे नहीं खरीद सकता। इस तरह की पुस्तकें हमें पुस्तकालय में आसानी से प्राप्त हो जाती है। पुस्तकालय में हजारों–लाखों की संख्या में विभिन्न प्रकार की किताबें होती हैं। पढ़ने वालों के लिए यह किसी स्वर्ग से कम नहीं होता है।

पुस्तकालय का बहुत बड़ा फायदा यह है कि किसी भी विषय पर सैकड़ों किताबें मिल जाती हैं जिससे छात्र अच्छे नोट्स बनाकर अच्छे नंबर पा सकते हैं। आजकल पुस्तकालय का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। डिजिटल क्रांति आने के बाद ऑनलाइन पुस्तकालय की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

दुर्लभ किताबों को पढ़ने का अवसर –

पुस्तकालय में हर प्रकार की नई–पुरानी के साथ ही दुर्लभ किताबें भी उपलब्ध होती हैं। ऐसी बहुत सी किताबें होती हैं, जो बाजार में आसानी से नहीं मिल पाती हैं। उन्हें खरीदने के लिए बहुत भटकना पड़ता है और धन भी व्यय करना पड़ता है। इस तरह की पुस्तकें भी पुस्तकालय में आसानी से मिल जाती हैं।

गरीब छात्र–छात्राओं को लाभ –

देश में ऐसे बहुत से छात्र हैं, जिनके पास किताब खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता। आजकल तो किताबें भी बहुत महंगी मिलती हैं। ऐसी स्थिति में पुस्तकालय वरदान साबित होता है।

वहां पर कोई भी छात्र किसी भी किताब को पढ़ सकता है और उसे पुस्तकालय से निर्गमित कराकर घर भी ले जा सकता है और पढ़ाई जारी रख सकता है। इसलिए पुस्तकालय गरीब छात्रों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

अच्छे नोट्स बनाने में सहायक –

पुस्तकालय में जाकर विभिन्न किताबों से पढ़कर छात्र अच्छे नोट्स बना सकते हैं। और परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास कर अपना भविष्य उज्जवल कर सकते हैं। अच्छी पढ़ाई के लिए अच्छी पुस्तकों का होना बहुत आवश्यक है।

एक विषय की अनेक किताबें मिलती हैं –

पुस्तकालय में एक ही विषय की बहुत–सी किताबें होती हैं जिसको पढ़ कर छात्र अच्छा स्टडी मैटेरियल तैयार करते हैं। वे अच्छे नोट्स भी बना पाते हैं। यदि एक विषय की एक ही किताब होगी तो उससे अच्छा स्टडी मैटेरियल नहीं बन पाएगा। बहुत–सी किताबों से पढ़ने में ज्ञान की वृद्धि होती है और परीक्षा में अच्छे नंबर आते हैं।

शांत वातावरण –

पुस्तकालय ऐसा स्थान होता है जहां पर शांति होती है। लोग सिर्फ पढ़ते हैं। इसलिए यदि आपको शांति चाहिए और पढ़ना चाहते हैं तो पुस्तकालय सबसे अच्छी जगह है। बहुत से लोगों के घरों में लोगों की संख्या ज्यादा होती है। पारिवारिक सदस्य हमेशा बातें करते रहते हैं। ऐसे लोगों को पढ़ने का मौका कम मिल पाता है। इस तरह के लोग पुस्तकालय में आकर पढ़ सकते हैं।

अच्छी पुस्तकों की प्राप्ति –

पुस्तकालय में बहुत–सी अच्छी पुस्तकें होती हैं, जिन्हें विद्यार्थी आसानी से लेकर पढ़ सकते हैं। उन्हें यह पुस्तकें फ्री में मिल जाती हैं और कोई पैसा भी नहीं देना होता है।

यदि सभी पुस्तकालय को हटा दिया जाए तो छात्र–छात्राओं की पढ़ाई पर गहरा असर पड़ेगा। उन्हें पढ़ने के लिए अच्छी किताबें नहीं मिल पाएंगी और परीक्षा में अच्छे नंबर भी नहीं पा सकेंगे।

पुस्तकालय मानव इतिहास की रक्षा करती हैं –

सभी प्रकार की घटनाएं और ज्ञानवर्धक तथ्यों को इतिहास की किताबों में दर्ज की जाती हैं। इस तरह यह भी कहा जा सकता है कि पुस्तकें हमारे इतिहास की रक्षा करती हैं। पुस्तकालय में हजारों पुस्तकें सुरक्षित रूप में रखी रहती हैं। इसलिए मनुष्य का ज्ञान, उसकी संस्कृति और उसकी सारी घटनाओं को पुस्तकालय सुरक्षित रूप में रखती हैं जिससे भविष्य की पीढ़ी को पुराने समय के बारे में पता चल सके। ○○○

1. मैं सिर्फ लोगों के अच्छे गुणों को देखता हूं, ना कि उनकी गलतियों को गिनता हूं।
2. दुनिया हर किसी की जरूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन हर किसी के लालच को पूरा करने के लिए नहीं है।

–महात्मा गांधी

माँ

डॉ. सुनीता गौड़
असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

आँख में बदली-सी फिर यूँ छा गयी,
आज माँ तू फिर मुझे या आ गयी।

इन कंटीली झाड़ियों में मैं उलझ कर,
तेरी सीखों से ही मैं संभली थी थोड़ा।
कंटकों से पार अब मैं पा गयी,
आज माँ तू फिर मुझे याद आ गयी।
आंख में बदली-सी फिर क्यूँ छा गयी,
आज माँ ....।।

थी पिरोयी मोतियों की तूने माला,
हर किसी अंदाज में तूने था ढाला।
तेरी कायल मैं बनी, तुझे पा गयी,
आज माँ तू फिर मुझे याद आ गयी।
आज माँ ....।।

इतनी यादों का बसेरा क्या बताऊँ?
मुझमें तेरी सारी खूबी आ गयी।
आज माँ तू फिर मुझे याद आ गयी,
आँख में बदली-सी फिर क्यूँ छा गयी।
आज माँ ....।।

हर कोई कहता है मैं हूँ तेरी जैसी,
मुझको होता रश्क ये है बात ऐसी।
तेरा मैं समरूप सबको भा गयी,
आज माँ तू फिर मुझे याद आ गयी।
आँख में ....।।
आज माँ ....।।

अपना घर

साक्षी शर्मा
बी.सी.ए. प्रथम वर्ष

अपने घर की बात भी कमाल की होती है,
चारों तरफ फैले खुशियों के जाल-सी होती है।
शब्द भी कम पड़ जाते हैं इसे बयाँ करने में,
यहाँ रहने वाला हर कोई सीप के मोती है।।

न जाने क्यूँ कभी माँ की गोद से पेट नहीं भरता,
कभी बाप के साये से दूर जाने का मन नहीं करता।
पर कर भी क्या सकते हैं साहब,
इस जिन्दगी में मजबूरियाँ भी कम नहीं होती ।।

बात ये भी नहीं कि दूर रहने से माँ की ममता कम होती है,
माँ तेरी याद में, तेरी बेटी, हर पल आँसुओं से रोती है।
याद तो तुम्हें भी आती होगी मेरी,
पर बारिश से बिछुड़ी बूँद की तड़प, बादलों को नहीं उस बूंद को पता होती है।।

इस बात से भी वाकिफ हूँ कि आग में,
तपकर ही लोहा कठोर होता है।
पर माँ एक बार उस लोहे से पूछकर तो देख,
आग में जलने से दर्द कितना होता है।।
पर धीरे-धीरे दर्द सहने की आदत-सी हो गई है,
अब तो यादों से ही मोहब्बत-सी हो गई है।
बस एक ही बात दिमाग में आ जाती है,
क्या-क्या पल देखे होंगे मेरे माँ-बाप ने,
बच्चों को पालना बात आसान थोड़े ही होती है।।

मेरा भी वादा है ओ मेरी माँ तुझसे,
गर्व होगा एक दिन तुझे भी मुझपे।
बस कुछ दिन की मोहलत चाहिए,
ज्यादा नहीं थोड़ा वक्त चाहिए।।

तेरा नाम माँ मैं रोशन करूँगी,
पर बदले में तुझसे एक चीज़ जरूर लूंगी।
तेरा प्यार मुझे हर रोज चाहिए,
तेरी नरम-नरम वो गोद चाहिए,
हाँ माँ तेरी नरम-नरम वो गोद चाहिए।।

पर्यावरण संरक्षण : आज की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता

मोनिका सिंह
बी0एड0 द्वितीय वर्ष

पर्यावरण शब्द परिआवरण के संयोग से बना हुआ है। परि का आशय चारों ओर तथा आवरण का आशय परिवेश से हैं। वास्तव में पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़ पौधे, जीव जन्तु मानव और इसकी विविध गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता हैं। अर्थात हमारे चारों तरफ का वह प्राकृतिक आवरण जो हमें सरलता पूर्वक जीवन यापन करने में सहायक होता है, पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण से हमें वह हर संसाधन उपलब्ध हो जाते हैं, जो किसी सजीव प्राणी को जीने के लिए आवश्यक है। पर्यावरण ने हमें वायु, जल, खाद्य पदार्थ, अनुकूल वातावरण आदि उपहार स्वरूप भेंट दिया है। हम सभी ने हमेशा से पर्यावरण के संसाधनों का भरपूर इस्तेमाल किया है और आज हमारे इतना विकास कर पाने के पीछे भी पर्यावरण का एक प्रमुख योगदान रहा है।

हमारे देश भारत में पर्यावरण संरक्षण के प्रति वैदिक काल से ही जागरूकता रही है, विभिन्न पौराणिक ग्रंथो में पर्यावरण के विभिन्न कारकों का महत्व व उनको आदर देते हुए संरक्षण की बात कही गई है। भारतीय ऋषियों ने सम्पूर्ण प्राकृतिक शक्तियों को ही देवता का स्वरूप माना है, सूर्य जल, वनस्पति, वायु व आकाश को शरीर का आधार बताया गया है। अथर्ववेद में भूमिसूक्त पर्यावरण संरक्षण का प्रथम लिखित दस्तावेज है, ऋग्वेद में जल की शुद्दता, यजुर्वेद में सभी प्रकृति तत्वों को देवता के समान आदर देने की बात कही गई है। वैदिक उपासना के शांति पाठ में भी अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, वनस्पति, आकाश सभी में शान्ति एवं श्रेष्टता की प्रार्थना की गई है। वेदों में ही एक वृक्ष लगाने का पुण्य सौ पुत्रो के पालन के समान बताया गया है, हमारे राष्ट्र गीत वंदेमातरम् में पृथ्वी को ही माता मानकर उसे पूजनीय माना गया है। पर्यावरण ही हमारी वैदिक परम्परा रही है कि प्रत्येक मनुष्य पर्यावरण में ही पैदा होता है, पर्यावरण में ही जीता है और पर्यावरण में ही लीन हो जाता है। हमारी संस्कृति को अरण्य संस्कृति भी कहा जाता है. इसके पीछे भाव यही है कि वन हरे भरे वृक्षों से सदैव यहाँ का पर्यावरण समृद्ध रहा है, महाभारत व रामायण में वृक्षों के प्रति अगाध श्रद्धा बताई गई है। विष्णु धर्म सूत्र, स्कन्द पुराण तथा याज्ञवल्क्य स्मृति में वृक्षों को काटने को अपराध बताया गया है तथा वृक्ष काटने वालों के लिए दंड का विधान किया गया है।

धरती पर जनसंख्या की निरंतर वृद्धि, औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण की तीव्र गति से जहाँ प्रकृति के हरे भरे क्षेत्रों को समाप्त किया जा रहा है, वहां ईधन चालित यातायात वाहनों, खदानों, प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन और आण्विक ऊर्जा के प्रयोग से सारा प्राकृतिक संतुलन डगमगाता जा रहा हैं। वर्तमान समय में गैसीय पदार्थों, अपशिष्ट पदार्थों, विभिन्न यंत्रों की कर्णकटु ध्वनियों एवं अनियंत्रित भूजल के उपयोग आदि कार्यों से भूमि, जल, वायु, भूमंडल तथा समस्त प्राणियों का जीवन पर्यावरण प्रदूषण से ग्रस्त हो रहा हैं, ऐसे में पर्यावरण का संरक्षण करना और इसमें संतुलन बनाएं रखना कठिन कार्य बन गया हैं। वर्तमान में पर्यावरण चेतना के प्रति जागरूकता अत्यंत आवश्यक है, पर्यावरण संरक्षण व पर्यावरण शिक्षा का प्रचार जरुरी है। हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कई अहम कदम सरकार के स्तर से उठाए गये हैं। पर्यावरण संरक्षण हेतु कुछ महत्वपूर्ण अधिनियम पारित किए गए है, साथ ही विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के द्वारा विभिन्न पर्यावरण संबंधी दिवसों पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिससे छात्र छात्राओं के साथ साथ समाज भी जन जागरूक होता है।

पर्यावरण संरक्षण से संबंधित पारित हुए महत्वपूर्ण भारतीय अधिनियम :

1. वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972
2. जल (प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण) अधिनियम 1974, 1977
3. वन संरक्षण अधिनियम 1980
4. वायु (प्रदूषण एवं नियंत्रण) अधिनियम 1981
5. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986
6. जैव विविधता अधिनियम 2002
7. राष्ट्रीय जल नीति 2002
8. राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2004
9. अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वनवासी (अधिकारों की मान्यता) अधिनियम 2006
10. राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण अधिनियम 2010

पर्यावरण संरक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण दिवस :

1. विश्व नम भूमि (विश्व आर्द्र भूमि) दिवस – 2 फरवरी
2. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस – 28 फरवरी
3. विश्व वन्यजीव दिवस – 3 मार्च
4. विश्व गौरैया दिवस – 20 मार्च
5. विश्व वन (वानिकी) दिवस – 21 मार्च
6. विश्व जल दिवस – 22 मार्च
7. विश्व पृथ्वी दिवस – 22 अप्रैल
8. विश्व जैव विविधता दिवस – 22 मई
9. विश्व स्वास्थ्य दिवस – 7 अप्रैल
10. विश्व तंबाकू मुक्ति दिवस – 31 मई
11. विश्व दुग्ध दिवस कब मनाया जाता है – 1 जून
12. विश्व पर्यावरण दिवस – 5 जून
13. विश्व महासागर दिवस – 8 जून
14. विश्व मरूस्थलीकरण दिवस – 17 जून
15. अंतरराष्ट्रीय योग दिवस – 21 जून
16. वन महोत्सव सप्ताह – 1 से 7 जुलाई
17. विश्व जनसंख्या दिवस – 11 जुलाई
18. अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस – 29 जुलाई
19. राष्ट्रीय हैंडलूम (हथकरघा) दिवस – 7 अगस्त
20. विश्व हाथी दिवस कब मनाया जाता है – 12 अगस्त
21. विश्व साक्षरता दिवस – 8 सितम्बर
22. विश्व ओजोन दिवस – 16 सितंबर
23. विश्व वन्यजीव सप्ताह – 2 से 8 अक्टूबर
24. विश्व आपदा नियंत्रण दिवस – 13 अक्टूबर
25. विश्व खाद्य दिवस – 16 अक्टूबर
26. राष्ट्रीय शिक्षा दिवस – 11 नवम्बर
27. राष्ट्रीय पक्षी दिवस – 12 नवंबर
28. विश्व मधुमेह दिवस – 14 नवंबर
29. बाल दिवस – 14 नवम्बर
30. राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस – 2 दिसंबर
31. विश्व मृदा दिवस – 5 दिसंबर
32. अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस – 11 दिसंबर
33. राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस – 14 दिसंबर
34. राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस – 24 दिसंबर

पर्यावरण संरक्षण किसी एक व्यक्ति या किसी एक देश का काम न होकर समस्त विश्व के लोगों का कर्तव्य है। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले सभी कारकों को अतिशीघ्र रोका जाए। युवा वर्ग द्वारा वृक्षारोपण किया जाए व पर्यावरण संरक्षण हेतु जन जागरण का अभियान चलाया जाए, तभी पर्यावरण सुरक्षित रह सकेगा और इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण कर हम सभी सच्चे अर्थों में भारतीय संस्कृति के वाहक साबित हों सकेगें। ooo

जिन्दगी की डोर

विपिन कुमार
बी०ए० द्वितीय वर्ष

जिन्दगी की डोर एक चलती हुई नाव की तरह होती है, जिस प्रकार नाव धाराओं के साथ मिलकर आगे की ओर चलकर किनारों को प्राप्त कर लेती है। उसी प्रकार जिंदगी की डोर भी उस डगमगाती नाव की तरह चलती है, यदि हमने जिन्दगी उसके समय के हाल में ढाल लीं तो हम मंजिल को प्राप्त कर लेंगे। किंतु यदि हम जिंदगी को उसके समय के हाल में नहीं ढाल पाये तो ठीक उसी प्रकार हमारी कश्ती भी डूब जायेगी, जिस प्रकार चलती नाव धाराओं का साथ नहीं दे पाती तो वह बीच में ही डूब जाती है और हमारे जीवन का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा।

जो हो गया उसे सोचा नहीं करते,
जो मिल गया उसे खोया नहीं करते।
हासिल उन्हें मिलती है सफलता,
जो वक्त और हालात पर रोया नहीं करते।।

dfork&

नारियाँ

प्राची शर्मा
बी०कॉम० प्रथम वर्ष

ऐसी-ऐसी नारियाँ जग में,
जिन पर करता देश गुमान,
क्यों माने हम वो हैं नाजुक,
क्यों माने वो है नादान-नादान।

1. *नारी है इस जग की शान,*
धरती को बेटी है 'मान'
धरती ने संभाला है जग को,
नारी ने संवारा है घर को।
माँ शारदा भी नारी है,
देती है विद्या का दान।
माँ जगदम्बे भी तो बेटी है,
देती सबको अभय प्रदान।।
माँ लक्ष्मी को कैसे भूलें ?
वो करती सबको खुशहाल।
माँ काली, जो सर्वव्यापक है,
पल में करती है रिपु संहार।।
माँ सीता पतिव्रता नारी,
अग्नि परीक्षा कर गई पार।
क्यूँ माने हम वो नाजुक ....

2. *कल्पना चावला को मत भूलो,*
उसने अंतरिक्ष दिया था माप।
उसके बाद सुनीता राव ने भी,
संभाली वही कमान।।
शक्ति की पहचान है नारी,
मानव तूं अब ले ये जान।
खुशियों की मेहमान है नारी,
अपने दिल की बात ये जान।

मेरा कॉलेज महान

सोनी गौतम
बी०ए० तृतीय वर्ष

हिन्दुस्तानी चित्रकार ने,
ऐसा चित्र बनाया।
डी.पी.बी.एस. कॉलेज
को महान बनाया।
कितनी सुन्दर इसकी वसुधा,
कितना सुंदर इसका जहान।
प्राकृतिक सुविधाओं का है,
यहाँ पर भरपूर योगदान।।
अध्ययन करने हेतु बना देते हैं,
ये बहुत अच्छा परिवेश यहाँ।
निकट अचल पर्यावरण है इसके,
पेड़ों की छटा निराली है।
जिसने इसकी रचना की है,
वह कौन अनौखा माली है।
डॉ. जी. के. सिंह है प्राचार्य इसके,
कितने गौरवशाली हैं।
होकर निडर कार्य वो करते,
कितने वैभवशाली हैं।।
अनुशासन में रहना छात्रों का,
अनुशासन वर्ग सिखलाते हैं।
उल्टा काम देख छात्रों का,
सीधा कर दिखलाते हैं।
शिक्षा के अतिरिक्त होते हैं,
यहाँ अनेकों प्रोग्राम।
खेलों की प्रतियोगिता का,
जीतने में भी इसका नाम।
प्राध्यापक वर्ग यहाँ सभी छात्रों के,
बड़े हितकारी हैं।
समय पर अधिक ध्यान देकर
परीक्षा फल अच्छा दिखलाते हैं।
प्रकृति माँ निज कर कमलों से,
कॉलेज का मान बढ़ाती है।
छात्रों की किलकारी से,
वसुधा कितनी हर्षाती है।। ooo

नौकरी

बड़ी हसीन होगी तू ऐ 'नौकरी'
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते हैं।
सुख चैन खोकर चटाई पर सोकर
सारी रात जग कर पन्ने पलटते हैं।
दिन में तहरी और रात को मैगी
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते हैं।
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते हैं।
अंजान शहर में छोटा रूम लेकर
किचन बैडरूम सब उसी में सहेज कर
चाहत में तेरी अपने माँ–बाप और
दोस्ती से दूर रहते हैं।
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते हैं।
राशन की गठरी सिर पर उठाए,
अपनी मायूसी व मजबूरियाँ खुद ही छुपाये।
खचाखच भरी ट्रेन में बिना टिकट के,
रिस्क लेकर आज भी सफर करते हैं।
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते हैं।
इंटर नेट अखबारों में तुझको तलाशते हैं,
तेरे लिए पत्र–पत्रिकाएं पढ़ते–रहते हैं।
बत्तीस साल तक के जवान कुँवारे फिरते हैं।
तू कितनी हसीन है ए नौकरी,
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते हैं। ooo

माता-पिता एक वृक्ष की तरह

कु0 कविता
बी0ए0 तृतीय वर्ष

एक बच्चे को आम के पेड़ से बड़ा ही लगाव था, जब भी फुर्सत मिलती वो आम के पेड़ के पास पहुँच जाता था।

पेड़ के ऊपर चढ़ता, आम खाता, खेलता और थक जाने पर उसी की छाया में सो जाता था। उस बच्चे और आम के पेड़ के बीच एक अनौखा रिश्ता बन गया था। बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता गया, वैसे-वैसे उसने पेड़ के पास आना कम कर दिया, कुछ समय बाद तो बिल्कुल ही बंद कर दिया। आम का पेड़ उस बालक को याद करके अकेला रोता। एक दिन अचानक पेड़ ने उसे अपनी ओर आते देखा और पास आने पर कहा कि तू कहाँ चला गया था? मैं रोज तुम्हें याद करता था! चलो आज फिर से दोनों खेलते हैं। बच्चे ने आम के पेड़ से कहा कि मेरी उम्र अब खेलने की नहीं रही, अब मैं बड़ा हो गया हूँ, मैं पढ़ना चाहता हूँ। परन्तु पढ़ने के लिए पैसे नहीं हैं तो आम ने कहा, 'तू मेरे सारे आम तोड़ ले और इन्हें बाजार में बेच दे। इससे जो पैसे मिलें, अपनी फीस भर देना। उस बच्चे ने आम के पेड़ से सारे आम तोड़ लिए और उन सब आमों को लेकर वहाँ से चला गया। उसके बाद फिर कभी दिखाई नहीं दिया।

आम का पेड़ उसकी राह देखता रहता। एक दिन वो फिर आया और कहने लगा। अब मुझे नौकरी मिल गई है। मेरी शादी हो चुकी है। मुझे अपना घर बनाना है। इसके लिए मेरे पास पैसे नहीं है। आम के पेड़ ने बड़े ही दुःख से कहा, "तू मेरी सारी डालियों को काट कर ले जा।"

उस जवान ने पेड़ की सभी डाली काट लीं और ले के चला गया। आम के पेड़ के पास अब कुछ नहीं बचा था। पेड़ बिल्कुल बंजर हो गया था। कोई उसे देखता भी नहीं था। पेड़ ने भी अब वो बालक/जवान उसके पास फिर आयेगा। यह उम्मीद छोड़ दी थी। फिर एक दिन अचानक वहाँ एक बूढ़ा आदमी आया। उसने आम के पेड़ से कहा, शायद आपने मुझे नहीं पहचाना, मैं वही बालक हूँ, जो बार-बार आपके पास आता था और आप हमेशा अपने टुकड़े काटकर भी मेरी मदद करते थे।

आम के पेड़ ने दुःख के साथ कहा, 'परन्तु बेटा! मेरे पास अब ऐसा कुछ भी नहीं है, जो मैं तुम्हें दे सकूं। वृद्ध ने आँखों में आँसू लिए हुए कहा।' वह व्यक्ति बोला, ''आज मैं आपसे कुछ लेने नहीं आया हूँ। बल्कि आज तो मुझे आपके साथ जी भर कर खेलना है। आपकी गोद में सर रखकर सो जाना है।'' इतना कहकर वो आम के पेड़ से लिपट गया और आम फिर से अंकुरित हो उठा। ●●●

वो आम का पेड़ कोई और नहीं, हमारे माता पिता हैं दोस्तों। जब हम छोटे थे, उनके साथ खेलना अच्छा लगता था। जैसे-जैसे बड़े होते चले गये, उनसे दूर होते गये। पास भी तब आये जब कोई जरूरत पड़ी, कोई समस्या खड़ी हुई। आज वही माँ-बाप उस बंजर पेड़ की तरह अपने बच्चों की राह देख रहे हैं। जाकर उनसे लिपटें उनके गले लग जायें, फिर देखना वृद्धावस्था में उनका जीवन फिर से अंकुरित हो उठेगा। ●●●

जीवन की प्रेरणा

खुशी चौधरी
बी0ए0 प्रथम वर्ष

मुश्किलों से भाग जाना आसान नहीं है,
हर पहलू जिंदगी का इम्तिहान होता है।
डरने वालों को मिलता नहीं कुछ जिंदगी में,
लड़ने वालों के कदमों में जहान होता है।।

जो मुस्कुरा रहा है, उसे दर्द ने पाला होगा।
जो चल हरा है, उसके पांव में छाला होगा।।
बिना संघर्ष के इंसान, चमक नहीं सकता।
जो जलेगा उसी दिये से तो उजाला होगा।।

डर मुझे भी लगा फॉसला देखकर,
पर मैं बढ़ती गयी रास्ता देखकर।
खुद व खुद आती गई मेरी मंजिल,
नजदीक मेरे मेरा हौसला देखकर।। ●●●

सच्चे शब्द (True Words)

शाजिया खाँन
बी०ए० प्रथम वर्ष

तू अपनी खूबियाँ ढूंढ़,
खामिया निकालने के लिए लोग हैं ना।
अगर रखना है कदम तो आगे रख,
पीछे खींचने के लिए लोग हैं ना।
सपने देखने हैं तो ऊँचे देख,
नीचा दिखाने के लिए लोग हैं ना।
तू अपने अंदर जुनून की चिंगारी भड़का,
जलने के लिए लोग हैं ना।
प्यार करना है तो अपने आपसे कर,
नफरत करने के लिए लोग हैं ना। ●●●

बीती यादें : माँ के साथ

दिल की हर बात लफ्जों में बयां नहीं होती।
क्या गुजरती है उस पर, जिसकी मां नहीं होती।।
जिम्मेदारियों की तो जैसे, इंतिहा नहीं होती।
माँ की गोद के सिवा, दिल की कोई तमन्ना नहीं होती।।
क्या गुजरती है उस पर, जिसकी माँ नहीं होती।
कहने को तो बहुत कुछ है पर, बताने को दिल नहीं करता।
अपनों के पास बैठकर भी,
बिन माँ के अकेलेपन का अहसास खत्म नहीं होता।
क्या गुजरती है उस पर, जिसकी माँ नहीं होती। ●●●

आजादी का अमृत महोत्सव

शिवानी नागर
बी०ए०, तृतीय वर्ष

आजादी का अमृत महोत्सव
हम सबको मिलकर मनाना है
जन जन की भागीदारी से
आत्मनिर्भर भारत बनाना है।
आजादी की वीरगाथा को
जन जन तक पहुंचाना है
अनगिनत वे देश पर मिटने वाले
आखिर कितनों को हमने जाना है
खोए बैठे थे जो कहीं अतीत में
अब सामने उनको लाना है
लहू तो उनका भी बहा था
ठाना उन्होंने भी था कि
देश को आजाद कराना है
किस्सा उनकी वीरता का
देश के हर बच्चे को बतलाना है
कुछ नया हमको कर जाना है
लेने है 75 नये संकल्प
भारत को विश्व गुरू देश बनाना है।

●●●

रचनात्मक और सकारात्मक
दृष्टिकोण से ओतप्रोत व्यक्तित्व वाले
आयोग से चयनित नवागत

प्राचार्य प्रोफेसर गिरीश कुमार सिंह जी

का महाविद्यालय परिवार
हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करता है

ANOOPSHAHR
41 UP Bn. NCC

TAGORE

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह
स्नातकोत्तर महा विद्यालय
SCHEME

TAGORE BHAWAN

DURGA PRASAD BALJEET SINGH PG COLLEGE
ANOOPSHAHR
BULANDSHAHR
NATIONAL SERVICE SCHEME

STAG

2
1
3

मंजिल पाना है जरूरी

प्रशान्त राज
बीसीए प्रथम वर्ष

vc ihN eMd D;k n[k] eftय dk tc py fn;A
e>Hkh d ihN tkuk ugh] blfy, jkLr cny fn;AA
cMh ef'dyk l tkxk g] dl fQj l lk tkÅ\
lQj rk ijk djd jgxk] c'kd vdyk gk tkÅAA
j¶rkj dk;e jgxh [kn dh] eUn ugh gku nxkA
,d fpxkjh vHkh ckdh g] bl B.Mk ugh gku nxkAA
fny e Tokyk g viu] ijk ry ldu e j[krk gA
dkb D;k tku bu vk[kk e] fdruk tuu e j[krk g\
ge ok ugh tk n[k e lhcr] eMuk dcy djr gA
ge ok g tk lkgl l] pVVku l /ky djr gAA
mMk ogh tk fxjk dHkh] bl fdLer dk ok HkDr ughA
dkb jkd vkj e :d tkÅ] bruk e>i oDr ughAA
tk e>dk ihN [khp] mu lcl ejh njh gA
e tku x;k dN iku dk] dN djuk Hkh t:jh gAA

○○○

कोरोना काल

अभिषेक कौशिक
बी०ए० प्रथम वर्ष

जिसके नाम से सब डरें, मैं वो बला हूँ।
कोई फैलेगा क्या ऐसे, जैसे मैं फैला हूँ।।
पैर घर से संभाल के रखना बाहर।
पहले देख जाके, न्यूज में कितनों में फैला हूँ।।
लोगों को लोगों से, दूर मैंने ही किया,
परिचय Social Distancing का मैंने दिया।
सड़कें सूनी गलियाँ सूनी, सब कुछ मैंने किया।
इक्का, दुक्का नहीं, मैंने लाखों को तबाह किया।।
अब Practical बात करूं, तो मैं हूँ खराब।
तुम अब तक नहीं ढूंढ़ सके मेरा इलाज।।
सारा सिस्टम मेरे आगे झुका हुआ।
दहशत का दूसरा नाम, मैं ही तो हुआ।।
क्यों छोड़ा तुमने, अपनों का साथ।
घूम रहे बेफिक्र होकर, सड़कों पे आज।।
तुमें सिखा दिया Social Distancing का पाठ।

○○○

आत्मविश्वास (Confidence)

शिवानी चौधरी
बी०ए० प्रथम वर्ष

आत्मविश्वास यानी कॉन्फिडेंस –

आत्मविश्वास वह ऊर्जा है, जो सफलता की राह में आने वाली हर कठिनाई से मुकाबला करने के लिए व्यक्ति को बल देता है। यह गुण मनुष्य को परिवार समाज एवं शिक्षा से मिलता है, जिसके पास आत्मविश्वास का बल है वह पराजय के क्षणों में भी विचलित नहीं होता है। आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है। जीवन में सफलता के लिए आत्मविश्वास उतना ही आवश्यक है। जितना मनुष्य के लिए पानी। अगर आप किसी भी काम को पूरे आत्मविश्वास से करते हैं तो वह काम बहुत अच्छे से होता है यह मानव चरित्र का वह गुण है, जिसके द्वारा उसके व्यक्तित्व में निखार आता है। आत्म विश्वास से मनुष्य की कार्यक्षमता बढ़ती है, तथा वह हर एक कार्य को कुशलतापूर्वक कर पाता है। आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों का मुकाबला भी हँसते हुए करता है।

अतः अंत में हम यह कह सकते हैं कि अपने अन्दर का विश्वास ही किसी व्यक्ति को सफल बना सकता है। ○ ○ ○

माँ कहा करती थी...

रिचा राय
बी०एड० प्रथम वर्ष

माँ कहा करती थी
बेटी
फलदार वृक्ष की तरह
झुक कर रहना
कितना भी ऊँचा उठना
आकाश की बुलंदियाँ छूना
पर धरती पर पाँव
टिकाए रखना
माँ तुम कहती थी
'बेटी'
विनम्र रहना
सादा और उच्च ख्याल रखना
अपनी बड़ाई स्वयं न करना
ऐसे कर्म करना
लोग तुम्हें चाहे
लोग तुम्हें जाने
लोग तुम्हें पहचाने
तुम सिर झुका कर रहना
पर माँ
अमेरिका में तेरी सीख
मेरे काम न आई –
यहाँ तो
सब उलटा है।
फीके पकवान सजाए जाते हैं।
अपनी बड़ाई न करो
तो आप पिछड़ जाते हैं।
गर्दन न अकड़ाओ तो
लोग उखड़ जाते हैं। ○ ○ ○

माँ की कविता

साक्षी शर्मा
बी०एड० प्रथम वर्ष

माँ तो आखिर होती है माँ।।
अपने सपनों को त्यागकर,
रातों को जागकर
हमारी ख्वाहिशें करती है पूरी
उनके बिना जिंदगी अधूरी।
ममता मयी आंचल है जिनकी
जैसे गौरी और जानकी।
खुशियों की तो यह है मोती,
माँ की आँखों में करूणा की ज्योति
रिश्तों को ये संजोए रखती,
सारे दर्द खुद ही सह लेती
अपनों पे जब संकट आता है
मौत से भी लड़ जाती है।
कभी दुर्गा कभी चंडी बन जाती,
जब बात अपने बच्चों पर आती है।
रब की परछाई होती है माँ,
माँ तो आखिर होती है माँ ।।

बेशर्त प्यार

मनु स्मृति
बी०एड० प्रथम वर्ष

*दुनिया में आके जो सबसे पहला शब्द,
जो तुम बोलना सीख जाते हो।
शायद आज भी घर आकर वही पुकारते हो,
जब कभी बाहर से आते हो।।*

*जो आराम तुम दुनिया–भर,
में तलाशते हो।
वह सुकून, वह रात,
आखिर उसी की गोद में पाते हो।।*

*जब कभी भूख लगे,
तो उसे ही बुलाते हो।
और जब बावर्ची बनने का मन करे,
तब भी उसे ही साथ पाते हो।।*

*जब कभी देर हो जाने पर,
तुम जो जल्दी मचाते हो।
हाथ में रोटी का रोल बनाए हुए,
दरवाजे पे, उसे टाइम पे खड़ा पाते हो।।*

*जब कभी मन परेशान हो,
और बाकी सब इससे अनजान हो।
उस बात का भी वह पता लगा लेती है,
क्योंकि तुम उसकी जान हो।।*

*तुम्हें डांट कर भी
वह सुकून से नहीं सो पाती है।
और फिर तुम्हें मनाने के,
नए–नए नुस्खे आजमाती है।।*

*तुम्हारे खुश होने पर
दुगनी खुशी मनाती है।
और तुम्हारी सफलता पर,
दुनिया भर में पेड़े बांट आती है।।*

*जो अनंकंडीशनल लव के किस्से
पूरी दुनिया तुम्हें सुनाती है,
शायद सिर्फ वो ही तुम्हें दे पाती है।
क्यूंकि वो ''मां'' है
जो बदले में कुछ नहीं चाहती है।।*

लक्ष्मण-रेखा

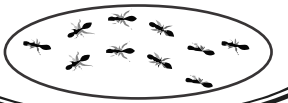

शिवा भारद्वाज
(बी०एड० द्वितीय वर्ष)

एक दिन की बात है कि घर में चींटियाँ बहुत हो रही थीं, तो मैं बाजार में चींटियों को भगाने के लिए लक्ष्मण रेखा खरीद कर ले आयी। अब मैंने लक्ष्मण रेखा से एक रेखा (लाइन) खींच दी, जहाँ चींटियाँ पंक्ति में चल रही थीं। पंक्ति में चल रही पहली चींटी जैसे ही लक्ष्मण रेखा के पास पहुंची, वह तुरंत पीछे आ गई और बाकी सभी चींटियों ने भी ऐसा ही किया। सभी लक्ष्मण रेखा के पास गईं और फिर वापस आ गई। अब थोड़ी देर बाद सारी चींटियाँ एक जगह पर ही एकत्रित हो गईं। अब कुछ चींटियाँ दूसरी दिशा में जा रही थीं, जहाँ लक्ष्मण रेखा से लाइन नहीं खींची हुई थी, तो मेरे मन में विचार आया कि क्यों न मैं अब साधारण चॉक (कक्षा में उपयोग करने वाला) उससे रेखा खींचू। तो मैंने ऐसा ही किया और चींटियों के रास्ते में चॉक से रेखा खींच दी। अब तो आश्चर्यचकित करने वाली बात यह हो गई कि अब वह चॉक के द्वारा खींची रेखा को भी पार नहीं कर पा रही थीं और वह सभी वहीं पर रुक गईं। करीब 3-4 मिनट तक मैं उन्हें देखती रही और थोड़ी देर बाद वो अपने प्राण छोड़ती चली गईं। वो सारी चींटियाँ जो चॉक को पार करके जा सकती थीं वो सभी वहीं पर मर गईं। मुझे बहुत दुःख हुआ कि वो एक साधारण चॉक को भी पार न कर सकीं।

अब इस प्रयोग के आधार पर जो मुझे समझ आया वो मैं आप सभी से कहना चाहती हूँ कि कभी भी अगर समूह में चलो तो एक के हार मान जाने पर कभी भी अपना हौंसला मत तोड़ो। हो सकता है कि तुम उसे जीत जाओ। समूह में होते हुए भी चींटियों ने अपनी मानसिक स्थिति को ऐसा बना लिया था कि सभी साधारण चॉक से खींची हुई रेखा को भी लक्ष्मण रेखा ही मान लिया था और इस प्रकार उन्होंने हार मान ली। अगर एक चींटी भी उस रेखा को पार करने की हिम्मत करती तो शायद सारी चींटियाँ बच जातीं पर ऐसा नहीं हुआ।

अब मेरा कहना यह है कि अगर आपके जीवन में एक साथ कोई बड़ी समस्या आती है तो आप उसे पहले समझो फिर उसका हल ढूंढ़ने का प्रयास करो और किसी भी समस्या को कभी बड़ी समस्या मत समझो, क्या पता वह छोटी समस्या हो, बड़ी समस्या के जैसी दिखने में लग रही है शायद वह आँखों का धोखा हो जैसा धोखा इस कहानी में चींटियाँ को हुआ था।

अब दूसरी तरफ मैंने एक प्रयोग किया। वो यह था कि फर्श पर एक अकेली चींटी जा रही थी। तो मैंने लक्ष्मण रेखा से उसके चारों तरफ रेखा खींच दी। पहले तो वह रेखा के चारों तरफ गई जब उसे कोई सही रास्ता नहीं मिला तो उसने लक्ष्मण रेखा ही पार कर दी। मुझे बड़ा अचम्भा हुआ कि कहाँ वह इतनी सारी चींटियाँ लक्ष्मण रेखा को पार नहीं कर पायी थीं और इस अकेली चींटी ने वह रेखा पार कर दी और इस अकेली चींटी ने वह रेखा पार कर दी। अब जैसे ही वह रेखा को पार करके निकली। फिर मैंने उसके चारों तरफ लक्ष्मण रेखा खींच दी। वो तो इस बार बिना इधर-उधर देखे ही निकल गई। अब मैंने उस चींटी के चारों तरफ कई बार लक्ष्मण रेखा और चॉक दोनों से रेखा खींची। पर वह हर बार आसानी से निकल गई। यह क्रम कुछ देर तक चलता रहा। फिर मैंने उस चींटी को परेशान करना छोड़ दिया और वह स्वतंत्रता रूप से इधर-उधर घूमती रही।

अब इसके आधार पर मैं आप सभी से कहना चाहती हूँ। वो चींटी अकेली होते हुए भी अपने रास्ते की सारी रुकावटों को निडरतापूर्वक पार करती चली गई। हर बार वह लक्ष्मण-रेखा को निडरतापूर्वक पार करती गई और उसने अपने प्राणों की रक्षा कर ली। अतः अगर आप समूह में चलते हो तो फिर सभी को अच्छे कामों में हार नहीं मानना सिखाओ, अगर आप हमेशा अकेले ही चलते हो तो उस अकेली चींटी की तरह बनो।

जो हर परीक्षा में पास हो गई अतः अंतिम पंक्ति यही है कि जिंदगी में कभी भी हार मत मानो। हर मुश्किल का हल होता है। समझो तो आसान, ना समझो तो कठिन। ठीक वैसे ही जैसे- मानो तो गंगा माँ है ना मानो तो बहता पानी। ●●●

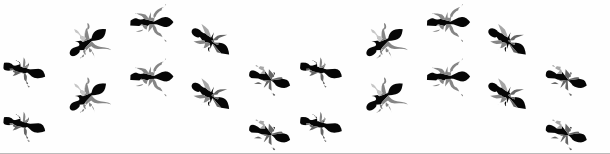

शुभांगी
(बी०एड० द्वितीय वर्ष)

मताधिकार जागरूकता

मताधिकार के बारे में बताने से पूर्व मैं आप सभी को यह बताना चाहती हूँ कि मताधिकार कैसे और क्यों होता है? किसी भी देश की व्यवस्था को संचालित करने के लिए एक शासक की आवश्यकता होती है। जो अलग–अलग प्रकार के होते हैं। जो लोकतंत्र तथा राजतंत्र के रूप में होते हैं। राजतंत्र में एक व्यक्ति विशेष (राजा) की मनमानी नीतियाँ लागू होती हैं। जबकि लोकतंत्र में देश की जनता द्वारा अपने क्षेत्र के जनप्रतिनिधि को चुनकर उनके माध्यम से सरकार बनाकर व्यवस्थाएं संचालित की जाती हैं। इस व्यवस्था में एक निर्धारित समय में अपने प्रतिनिधि को बदले जाने की व्यवस्था मतदान के माध्यम से की जाती है। इस व्यवस्था को लोकतंत्र कहते हैं। क्योंकि जनता के मत द्वारा ही सरकार का निर्माण होता है। इसलिए प्रत्येक नागरिक को अपने मताधिकार का अनिवार्य रूप से प्रयोग करते हुए मतदान करना चाहिए, जिससे वो अच्छी सरकार के लिए सकारात्मक भूमिका निभा सके। इसे जनता तक पहुंचाने का स्थाई साधन यह है कि जनता को इसका महत्व बताया जाये।

मतदान करने की निश्चित आयु 18 वर्ष है –

- भ्रष्टाचार मिटाना है, अच्छा नेता लाना है।
- मतदाता का मतदान, लोकतंत्र की शान है।
- भारत का अभिमान है, लोकतंत्र हमारी शान है।
- वोट देने जाना है, अच्छा नेता लाना है।

कोर्ट (कचहरी) के चक्कर

ऐसे धरे धूप ने धौल,
शरीर सबका काला हो गया है।

जब चाहें तब पांव भगाए, कोर्ट कचहरी ने।
जब पहुंचे तारीख डार दई, गूंगी बहरी ने।।

इतनी करी परेड, देह सरकारी हो गई।
असल मुसीबत गौड़ हो गई।।

इत वकील, उत थानेदार लहू पीवत हैं।
दोनों तरफ गांठ के ग्राहक, बड़ी मुसीबत है।
इनके मारे भूख–प्यास, पटवारी हो गई।।

महंगाई की मार, गवाही वारेन के नखरे।
पेट काट कर झेलूँ, फिर भी पूरे नहीं पड़ते।

सुन लो सारे गम, गरीबी गाली हो गई है।
ऐसे धरे धूप ने धौल, देह सब कारी हो गई है।।

मेरी माँ

सृष्टि अग्रवाल
(बी०एड० प्रथम वर्ष)

वो मेरे माथे की शिकन को देखकर,
मेरा हाल जान लेती है। वो मेरी माँ है।

मेरी बस आवाज सुनकर,
मेरी तबियत तक पहचान लेती है। वो मेरी माँ है।

जो बैठी हूँ अगर मैं गुम-सुम,
वो बिना पूछे मेरी चुप्पी के पीछे की भी,
वो बात जान लेती है। वो मेरी माँ है।

बिना बताये मेरे अंधेरे में बैठने की,
दास्तान जान लेती है। वो मेरी माँ है।

ईंटों के उस ढांचे को,
वो घर बना देती है। वो मेरी माँ है।

मेरी भूख भले ही हो एक रोटी की,
पर वो दो खिला देती है। वो मेरी माँ है।

○○○

हाँ, मैं एक डॉक्टर हूँ

फिजा
(बी०एड० प्रथम वर्ष)

मुझे भगवान ना समझो,
शायद मैं हकदार नहीं।
मगर एक इंसान हूं,
इससे तुम्हें भी इंकार नहीं.......।।

जब तुम जिंदगी में मस्त थे,
मैं किताबों में व्यस्त थी।
तुम्हारे घर जश्न था,
मैं अस्पताल में मगन थी।।

तुम परिवार संग त्यौहारों की,
खुशियां मना रहे थे।
मेरी मां और मैं,
दूर-दूर दीये जला रहे थे।।

तुम्हें दुनिया में लाने वाली मां थी,
संग में मैं भी खड़ा था।
तुम्हारी जिंदगी और मौत में,
बीच में न जाने कितनी बार अड़ा था।।

भगवान के बाद किसी से,
उम्मीद रखी जाती है, वह डॉक्टर है।
उसका केवल मुस्कुराकर कह देना,
कि चिंता की कोई बात नहीं,
मन को सुकून मिल जाता है।।
भगवान का दूसरा रूप है डॉक्टर......।।

○○○

अपने बदल गये...

मुजम्मिल
(बी०एड० प्रथम वर्ष)

गैरों का क्या गिला करें, अपने बदल गये।
आइने वहीं हैं मगर, चेहरे बदल गये।।

दौलत थी मेरे पास तो, बस रिश्तेदार थे।
मैं हो गया गरीब तो, रिश्ते बदल गये।।

जब तक थे वो गरीब तो, रहते थे मेरे पास।
दौलत जो पास आ गयी, कमरे बदल गये।।

मेहंदी के रंग का ये करिश्मा तो देखिये।
घर में बहू के आते ही, बेटे बदल गये।।

दोनों जहां में हो न, तुझको सुकूं नसीब।
दिल अपनी मां का तोड़के, अच्छा नहीं किया।।

बदली जो तेरी नजर तो, नजारे बदल गये।
ये चांदनी, ये चांद, ये सितारे बदल गये।।

हमने अपने प्यार को, कभी रूसवा नहीं किया।
खाके जिगर पे चोट भी, शिकवा नहीं किया।।

गैरों का क्या गिला करें, अपने बदल गये।
आइने वही हैं मगर, चेहरे बदल गये।।

०००

बेटी तो बेटी होती है

ईशा सिंघल
(बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष)

ये सोच ही कितनी छोटी है,
आज भी बुद्धि कितनी खोटी है।
कि लड़कियों का कोई घर नहीं,
अपने घर पे गैरों की अमानत,
ससुराल में पराये घर की औरत।
अपना कहने को कोई घर नहीं,
ये सोच ही कितनी छोटी है।
आज भी बुद्धि कितनी खोटी है।।

बिन बेटी के घर में खुशहाली कहाँ?
जैसे रंग बिन होली।
बिन रोशनी दीपावली कहाँ?
बेटी का तो हर रूप है सुहाना।
ना कोई ठिकाना, न कोई बहाना,
मुस्कुराकर सब पीते जाना।।

हक है उसका.......
हां हक है उसका,
पिता के घर पे भी,
और ससुराल में भी।
पूरे संसार पर हक है उसका,
क्योंकि बेटी तो बेटी होती है।

असीम दुलार पाने की हकदार है बेटी,
समझो भगवान का आशीर्वाद है बेटी।। ०००

कोरोना काल में ऑनलाइन अध्ययन के मानसिक प्रभाव

साक्षी चौधरी
(बी०एड० द्वितीय वर्ष)

पिछले लगभग एक माह से देश भर में कोरोना वायरस के नए वैरिएण्ट ओमिक्रोन के बढ़ते असर और कोरोना संक्रमण के मामलों में एक बार फिर से वृद्धि होने के कारण दिल्ली समेत देश के कई अन्य क्षेत्रों में शिक्षण कार्य ऑनलाइन किया जा रहा है। कोरोना वायरस के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन के आसन्न सकंट को देखते हुए एक बार फिर से अनेक प्रकार की आशंकाएं गहराने लगी हैं। इसके कारण सबसे पहले बच्चों के दुष्प्रभावित होने की आशंका को देखते हुए ऑफलाइन स्कूल शिक्षा को एक बार फिर रोकने का खतरा मंडराने लगा है। पिछले दो वर्ष से जारी महामारी के कारण देश में अभी कुछ माह पूर्व से ही ऑफलाइन कक्षाओं का आरम्भ हुआ था। अब कक्षाओं के पुनः ऑन लाइन प्रारंभ होने की खबरें आ रही हैं। सभी स्कूलों को बंद करने की घोषणा कर दी गई है। दिल्ली सरकार ने भी सभी कोरोना संक्रमण के तेजी से बढ़ते मामलों को देखते हुए स्कूलों को बंद कर दिया है और बच्चों को फिर से ऑनलाइन कक्षाओं की ओर धकेल दिया गया है। यहाँ धकेलना इसलिए कहा जा रहा है। क्योंकि ऑनलाइन शिक्षा को लेकर हमारे यहाँ कोई शोध अध्ययन, तय मानक और पर्याप्त तकनीकी यंत्र विकसित नहीं थे, केवल मजबूरीवश, इसे अपनाया गया। पूर्व में न केवल हमारे देश में, बल्कि पूरी दुनिया में कभी भी ऑनलाइन शिक्षण के दूरगामी प्रभावों को लेकर विचार–विमर्श नहीं किया गया। बहरहाल, दिल्ली में स्कूलों के बंद होने के बाद दूसरे राज्यों के अभिभावकों की चिंता बढ़ने लगी है। कोविड संक्रमण के कारण जब ऑनलाइन शिक्षा शुरु हुई, तो एक समय बाद इसके कई नकारात्मक प्रभाव देखने में आए। हालांकि अल्पावधि के लिए ऑनलाइन शिक्षण का उपयोग इतना खतरनाक नहीं रहा, जितना इसके लंबे समय तक उपयोग के कारण खतरे सामने आ रहे हैं। इसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव बच्चों के **मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर दिखाई देने लगा है।** स्मार्ट फोन, टेबलेट, लैपटॉप, कम्प्यूटर आदि के स्क्रीन पर लम्बी अवधि तक समय बिताने से बच्चों में मानसिक तनाव, हताशा, व्यग्रता आदि नकारात्मक प्रभाव परिलक्षित हो रहे हैं। इस संबंध में हाल ही में कनाडा में हुआ शोध देखा जाना चाहिए, जिसका निष्कर्ष बेहद डरावना है। **"टोरंटो स्थित–हॉस्पीटल फॉर सिक चिल्ड्रेन के विशेषज्ञों"** ने अपने अध्ययन में विभिन्न प्रकार के स्क्रीन टाइम के उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध होने का अध्ययन किया गया है। इसमें बताया गया है कि ऑनलाइन शिक्षण के कारण बड़े बच्चों में अवसाद (Dipression) और अति व्यग्रता बढ़ने का खतरा बहुत बढ़ गया है। कनाड़ा में महामारी के दौरान दो हजार स्कूली छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य रिपोर्ट के विश्लेषण से यह बात सामने आयी है। इस रिपोर्ट के विश्लेषण की खास बात यह है कि यह इन छात्रों के अभिभावकों ने ही उपलब्ध कराई थी। रिपोर्ट के डाटा विश्लेषण में उन्होंने पाया है कि बड़ी उम्र के छात्रों में अभिभावक द्वारा दी गई रिपोर्ट और अवसाद एवं व्यग्रता बढ़ने के बीच स्पष्ट संबंध है। अध्ययन में शामिल विशेषज्ञों ने यह भी पाया कि महामारी के दौरान छोटे बच्चों में अधिक देर तक स्क्रीन पर समय बिताने से, जिसमें पढ़ाई के साथ ही अन्य गैर शैक्षणिक गतिविधियों जैसे–गेम खेलने से भी भारी मात्रा में अवसाद, व्यग्रता और व्यवहार संबंधी अनेक समस्याएं देखी गई हैं।

स्मार्टफोन, टीवी या डिजिटल मीडिया में अधिक समय देने वाले बड़े बच्चों में गहरे अवसाद, व्यग्रता और असावधानी की समस्याएं देखी गईं। उन्होंने कहा कि इस तरह की समस्याएं लम्बे समय तक स्क्रीन पर बैठने और सामाजिक संपर्क के लिए बहुत कम समय देने के कारण हो सकती हैं। इस तरह इस रिपोर्ट से शोधकर्ताओं ने यह स्पष्ट संकेत दिया कि कोविड महामारी के कारण किए गए शैक्षिक बदलावों से बच्चों की दिनचर्या और मानसिकता में बड़ा बदलाव आया है। अतः हमारे देश में भी ऑनलाइन शिक्षा के बच्चों पर प्रभाव को लेकर एक व्यापक शोध कार्य किया जाना चाहिए ताकि हम समय रहते उसके व्यावहारिक असर से अवगत हो सकें।

अभिभावकों की राय – सरकार को स्कूलों को बंद करने से पहले अभिभावकों की राय जाननी चाहिए। अभिभावकों के निर्णय को जानने के लिए लिखित में फार्म भरवा कर सर्वे किया जाना चाहिए। उसके बाद ही स्कूलों को बंद करने या नहीं करने जैसा कोई बड़ा निर्णय लेना चाहिए। इस बात पर गौर किया जाना चाहिए कि अधिकांश अभिभावकों का कहना है कि– "सावधानी के साथ स्कूली कक्षाएं चालू रखनी चाहिए। ध्यान यह रखना है कि स्कूल संचालकों को समयानुसार व्यवहार का सख्ती से पालन करना चाहिए। साथ ही शासन–प्रशासन द्वारा बराबर निगरानी की जाए तो संभावित खतरे से बचा जा सकता है।"

कई अन्य विकल्पों के बारे में भी सोचा जाना चाहिए। सम–विषम के आधार पर बच्चों की स्कूल में उपस्थिति को सुनिश्चित किया जा सकता है। इससे छात्र नियमित कक्षा से जुड़े रह सकते हैं। वहीं जो अभिभावक चाहते हैं कि उनका बच्चा घर पर ही ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाई करे तो उसके लिए वैकल्पिक व्यवस्था को जारी रखा जाना चाहिए। बच्चा अपनी सुविधा के अनुसार ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करे, इसका पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। ताकि बड़ी संख्या में बच्चों को ऑनलाइन स्टडी के मानसिक दुष्प्रभावों से बचाया जा सके।

बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा की गारंटी – यह जरूरी नहीं कि जो बच्चे हमेशा घर के भीतर ही रहते हैं, वे कोरोना से संक्रमित नहीं हो सकते। यहाँ स्वास्थ्य विशेषज्ञों की एक महत्वपूर्ण बात को नजरांदाज नहीं किया जा सकता, जिसमें उन्होंने आशंका व्यक्त की है कि बच्चों को घर पर ही रखना, इस बात की गारंटी नहीं है कि वे कोविड संक्रमित नहीं होंगे। घर में अक्सर स्वजन और दूसरे पारिवारिक सदस्य भीड़भाड़ वाली जगहों जैसे– बाजार, कार्यस्थल, कार्यक्रम आदि में जाने के अलावा रिश्तेदारों व मित्रों से मिलते रहते हैं। फिर वे जब घर आते हैं तो बच्चों से उनकी मुलाकात संक्रमण की आशंका को बढ़ा देती है।

वैसे भी घरों में कोविड प्रोटोकॉल का पालन सख्ती से नहीं किया जा सकता, क्योंकि यहां उनका मामला काफी हद तक निजी हो जाता है। इसलिए सर्वोत्तम उपाय यह है कि बच्चों का टीकाकरण जल्द से जल्द शुरू करके शिक्षण संस्थानों को ऑफलाइन पढ़ाई के लिए चालू किया जाए। इन तमाम बातों को ध्यान में रखते हुए बच्चों की सुरक्षा और शिक्षा को लेकर निर्णय किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष – कोरोना महामारी एक अत्यंत गंभीर विषय है, अतः सरकारें एवं प्रशासन को सही कदम उठाने की आवश्यकता है, जिससे कहीं कोरोना महामारी में ऑनलाइन अध्ययन बच्चों के लिए मानसिक महामारी न बन जाए। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सही एवं उचित कार्यवाही द्वारा कोरोना महामारी पर विजय प्राप्त की जाए तथा बच्चों के भविष्य के साथ उचित उपाय किये जाएं। ooo

कोरोना

आरिफ अली
बी०एड० प्रथम वर्ष

इतनी बड़ी दुनिया को, एक उंगली पे नचा गया।
छोटा सा एक वायरस, एक इतिहास रचा गया।।

बंद घरों में हो गए सब जो हवा में ये छा गया।
बाहर की दुनिया को महज एक, सपना दिखा गया।।

फुरसत चाहती दुनिया को, दे के ऐसी सजा गया।
हर काम से मुक्त करा, सबसे नफरत करा गया।।

तनहाई की डोर में कुछ यूं, हमको उलझा गया।
कि अकेलेपन की धूप में, हर चेहरा मुरझा गया।।

जाने कितने घरों के ये, चिराग बुझा गया।
जाने कितने घरों में, बनके ये अंधेरा छा गया।।

करके अपनों से दूर, अपनों की कीमत समझा गया।
इसका ये खेल जिंदगी को, जीना सिखा गया।।

जिंदा है तो सब पा लेंगे, सबको ये समझा गया।
मौत का ऐसा रूप, दुनिया को दिखा गया।।

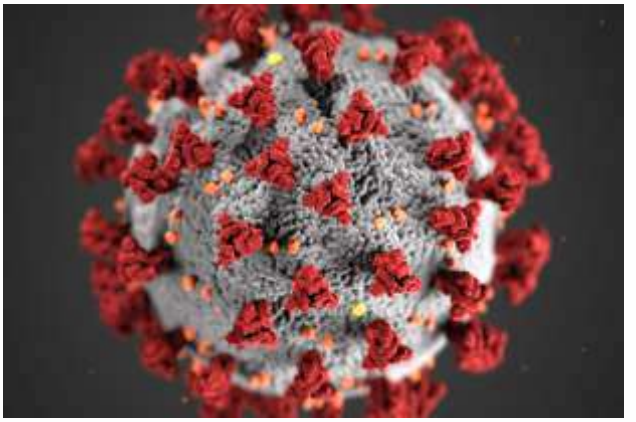

●●●

एक शब्द

मोहित कुमार
बी०एड० प्रथम वर्ष

एक शब्द है 'मोहब्बत'
इसे करके तो देखो,
तुम तड़प ना जाओ तो कहना।

एक शब्द है 'मुकद्दर'
इससे लड़कर देखो,
तुम हार ना जाओ तो कहना।

एक शब्द है 'वफा'
जमाने में नहीं मिलती कहीं
इसे ढूंढ पाओ तो कहना।

एक शब्द है 'आँसू'
इसे दिल में छुपाकर रखो,
तुम्हारी आँखों से ना निकल जाएं तो कहना।

एक शब्द है 'जुदाई'
इसे सहकर तो देखो,
तुम टूटकर बिखर ना जाओ तो कहना।

एक शब्द है 'ईश्वर'
इसे पुकार कर के देखो,
सब कुछ ना पा जाओ तो कहना।

●●●

Statistics For Development

Dr. P. K. Tyagi
Head, Statistics Deptt.

Statistics is a mathematical science involving the collection, analysis, and interpretation of data, as well as the effective communication and presentation of results relying on data. Through application of various tools and techniques in statistics, the raw data becomes meaningful and generates the information for decision making purpose. Statistics is very important when it comes to the conclusion of research. Statistical methods and analyses are often used to communicate research findings and give credibility to research findings and conclusions. It is important for the users of research to understand statistics so that they can be informed, evaluate the credibility and usefulness of information, and make appropriate decisions.

Today, statistical methods are applied in most of the fields that involve decision making, for making accurate inferences from arranged data. Different evidence-based policies of the government are based on statistics. For instance, statistics holds a central position in fields like industry, commerce, trade, economics, biology, astronomy, etc., hence application of statistics is very wide.

Specialties have evolved to apply statistical theory and methods to various disciplines. For example, Econometrics is a branch of economics that applies statistical methods to the empirical study of economic theories and relationships; Business analytics is a rapidly developing business process that applies statistical methods to data sets to develop new insights and understanding of business performance and opportunities; Actuarial science is the discipline that applies mathematical and statistical methods to assess risk in the insurance and finance industries, etc. Further, the use of modern computers has expedited large-scale statistical computations, and has also made possible new methods that are impractical to perform manually. Statistics continues to be an area of active research, for example on the problem of how to analyse big data.

Reliable statistics describe the reality of people's everyday lives. The role of statistics in national development is very critical. The importance and availability of timely and reliable statistics on socio-economic life of a sovereign nation cannot be over-stressed. For instance, a number of goals have become generally accepted as the objective of economic policy and development. Movement towards their attainment is deemed to lead to macroeconomic stability and increased national welfare. Timely, complete, accurate and reliable statistics is critical for creating and sustaining an environment which fosters strong, equitable development. Also, this is an essential ingredient for formulation of sound economic development policies, by which the decision making and development plans of the government becomes

concentric. From the United Nations view point, statistics is a pathfinder for solution as well as a veritable tool in assessing the extent or level of national development of a country in a given period.

The national economic policies and complex interactions among various sectors of the economy make it imperative for building up macroeconomic planning models. This kind of model build-up is only possible with availability of timely and reliable statistical information. Thus, statistics plays a vital role to attain national development goals based on the availability of timely and reliable statistical indices such as GDP, inflation rate, poverty headcount, income per capita, labour force, housing, schooling, health outcomes, etc. Further, timely, accurate and reliable statistics are widely used for the design and implementation stages of country policy frameworks. It is increasingly important to have high quality statistics on the population and projections of the population, for policy development and for planning and providing public services. This information is used for: central and local finance allocation; housing and land use planning; health care planning; providing education facilities; bench marking other projections and as a control for smaller area projections; looking at the implications of an ageing population and making national and international comparisons, etc.

For instance, preparation of central and provincial government budgets mainly depends upon statistics because it helps in estimating the expected expenditures and revenue from different sources. And good statistics are essential to manage the effective delivery of basic services. Good statistics also improve the transparency and accountability of policy making, both of which are essential for good governance, by enabling people to judge the success of government policies and to hold their government to account for those policies. For example, if government plans to introduce a universal pension plan, statistical methods will be used to determine the forecasted cost for planned pension scheme with using population projections and inflation data. Hence, statistics are the eyes of administration of the state. Also, good statistics help donors by informing aid allocation decisions and by monitoring the use of aid and development outcomes. The Paris Declaration on Aid Effectiveness recognises the need for better statistics for more effective aid.

Monitoring is a continuous process that requires data which is generated to assist in establishing whether planned targets are likely to

be achieved or not. This is another area where statistics plays an important role. In monitoring and evaluation of ongoing economic reform programmes, statistical data is vital, as it will provide the necessary information on performance indicators which serve to measure the impact of policy and programmes on the quality of life of target populations. Thus, statistics on these issues serves as monitoring indicators which are vital for development plans.

The field of statistics is the science of learning from data. Statistical knowledge helps to use the proper methods for collecting the data, employ the correct analyses, and effectively present the results. Statistics is a crucial process behind how we make discoveries in science, make decisions based on data, and make predictions. Statistics helps very much in development and progress. ooo

An Overview of Water Pollution in India with Especial Reference to River Ganga

Dr. Chandrawati
Head, Chemistry Deptt.

Water pollution is one of the biggest issues facing India right now. Untreated sewage is the biggest source of such form of pollution in India. There are other sources of pollution such as runoff from the agricultural sector as well as unregulated units that belong to the small-scale industry. The situation is so serious that perhaps there is no water body in India that is not polluted to some extent or the other. Water pollution is a serious problem in India as almost 70 per cent of its surface water resources and a growing percentage of its groundwater

reserves are contaminated by biological, toxic, organic, and inorganic pollutants. In many cases, these sources have been rendered unsafe for human consumption as well as for other activities, such as irrigation and industrial needs. Th is shows that degraded water quality can contribute to water scarcity as it limits its availability for both human use and for the ecosystem.

The level of water pollution in the country can be gauged by the status of water quality around India. The water quality monitoring results carried out by CPCB particularly with respect to the indicator of oxygen consuming substances (Biochemical Oxygen Demand, BOD) and the indicator of pathogenic bacteria show that there is gradual degradation in water quality. In fact, it is said that almost 80% of the waterbodies in India are highly polluted. This is especially applicable of ones that some form or the other of human habitation in their immediate vicinity. Ganga and Yamuna are the most polluted rivers in India.

The single biggest reason for water pollution in India is urbanization at an uncontrolled rate. The rate of urbanization has only gone up at a fast pace in the last decade or so, but even then, it has left an indelible mark on India's aquatic resources. This has led to several environmental issues in the long term like paucity in water supply, generation and collection of wastewaters to name a few. The treatment and disposal of wastewater has also been a major issue in this regard. The areas near rivers have seen plenty of towns and cities come up and this has also contributed to the growing intensity of problems. Uncontrolled urbanization in these areas has also led to generation of sewage water. In the urban areas water is used for both industrial and domestic purposes from waterbodies such as rivers, lakes, streams, wells, and ponds. Worst still, 80% of the water that we use for our domestic purposes is passed out in the form of wastewater. In most of the cases, this water is not treated properly and as such it leads to tremendous pollution of surface-level freshwater. Following are some other important reasons of increasing levels of water pollution in India :

- Industrial waste
- Improper practices in agricultural sector
- Reduction in water quantity in rivers in plains
- Social and religious practices like dumping dead bodies in water, bathing, throwing waste

in water
- Oil leaks from ships
- Acid rain
- Global warming
- Eutrophication
- Inadequate industrial treatment of wastes
- Denitrification

The water quality monitoring network was strengthened to 4111 monitoring locations by adding 611 new monitoring locations to the existing network. CPCB monitors 2021 locations on Rivers, 608 on Lakes/ Ponds/ Tanks, 63 on Creeks/Seawater/marine water, 65 on Canals, 60 on Drains, 56 on Sewage Treatment Plants, 5 on Water Treatment Plants (Raw Water) and 1233 Wells as part of National Water Quality Monitoring Programme (NWMP).

River Water Quality of River Ganga :

The Ganga River water quality data for the year 2019 indicates that the pH and DO is meeting the primary water quality criteria for bathing at all monitoring locations along entire stretch of River Ganga.

BOD is meeting the primary water quality criteria for bathing from origin to u/s Kannauj, Bithoor to u/s Kanpur, Prayagraj (Rasoolabad), Prayagraj d/s (Sangam) to u/s Mirzapur and u/s Varanasi. In Bihar, the entire stretch is meeting the bathing criteria. In West Bengal, the stretch from Tribeni to Garden reach is not meeting the primary water quality criteria for bathing except Shivpur (Howrah) in terms of BOD.

FC is meeting the primary water quality criteria for bathing from origin to u/s Kannauj. The stretch from Kannauj d/s to Uluberia is not meeting the primary water quality criteria for bathing in terms of FC except five monitoring locations namely: Bithoor (Kanpur), UP Bathing Ghat (Bharaoghat), UP U/s Vindhyachal, UP U/s Varanasi, UP and Arrah-chapra road bridge (u/s Doriganj), Bihar Improvement in Ganga River Water Quality of 2019 w.r.t. 2018 Monthly data of parameters such as Dissolved Oxygen (DO), Biochemical Oxygen Demand (BOD) and Faecal Coliform (FC) of year 2018 and 2019 is compared for 90 locations and following observations are made :

Out of 90 locations, DO has improved at 51 locations Out of 90 locations, BOD has been improved at 74 locations Out of 79 locations, FC has been improved at 51 locations An improvement in terms of BOD compliance has been observed in 2019 as compared to 2018 in the following stretch/locations. U/s Kannauj (Rajghat), UP Bithoor (Kanpur) to Kanpur u/s, UP Prayagraj (Rasoolabad), UP Prayagraj d/s (Sangam), UP and Uluberia, WB.

The 2021 edition of the United Nations World Water Development Report (UN WWDR 2021) entitled 'Valuing Water ' groups current methodologies and approaches to the valuation of water into five interrelated perspectives: valuing water sources, in situ water resources and ecosystems; valuing water infrastructure for water storage, use, reuse or supply augmentation; valuing water services, mainly drinking water, sanitation and related human health aspects; valuing water as an input to production and socio-economic activity, such as food and agriculture, energy and industry, business and employment; and other sociocultural values of water, including recreational, cultural and spiritual attributes. These are complemented with experiences from different global regions; opportunities to reconcile multiple values of water through more integrated and holistic approaches to governance; approaches to financing; and methods to address knowledge, research and capacity needs. ooo

Build an Impactful Career in Chemistry

Dr. Jagriti Singh
Asst. Professor,
Deptt. of Chemistry

Chemistry is also known as the central science since it brings together mathematics, physics and environmental science. It is the knowledge of the nature of chemical processes and chemicals within, the realm of biological and physical phenomena. The knowledge of chemistry is important because it provides a basis for understanding the universe we live in. Therefore a career in chemistry could be the best career choice for those who like chemistry and want to achieve excellence in this subject.

Students who wish to pursue a career in chemistry may find the following higher education, degree options :

- Masters in Chemical Engineering
- Masters of Science in Chemistry
- Masters of Science in Analytical Chemistry
- Masters of Science in Drug Chemistry
- Masters of Science in Organic Pharmaceutical Chemistry
- Masters of Science in Physical & Materials Chemistry
- Master of Business Administration
- Doctorate/PhD

A degree in chemistry or an inherent specialization in any of the subsets in the subject can help an individual take up the following job posts :

- Lecturer
- Cytologist
- Chemist
- Clinical Research Specialist .
- Laboratory Technician
- Geneticist
- Radiologist
- Plant Biochemist
- Researcher
- Toxicologist
- Scientist
- Technical Writer/Editor

A career in chemistry in India has been untapped, for several years. But with industry prospects for careers changing, there is an increasing demand in this career field. Hence, Chemistry engineers or graduates are highly in. demand by international companies.

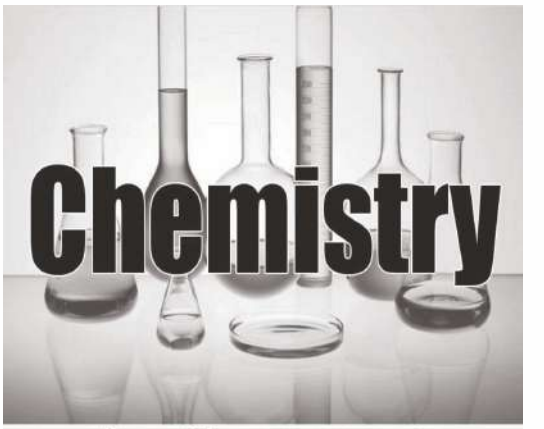

Role of Chemistry in Human Life

Dr. G. K. Bansal
Asst. Professor,
Deptt. of Chemistry

Human life is inseparable from Chemistry. Everything whether living or non-living, solid, liquid or gas, from the softest mineral (Talc) to hardest material (diamond), is made up of basic building blocks called chemical elements.

Human body itself is made up of chemical compositions & the environment required for the human life to sustain is inseparable from the chemical composition of matters. Some of the uses of the chemistry in our daily life which are discussed below :

Health Care & Beauty : Preserving health from the impurities present in the environment is the biggest challenge in today's polluted world. Medicines which are made up of chemical compounds are the most essential part of our daily life.

The diagnostic tests, vaccines laboratory tests of diseases, monitoring and curing are the parameters of health control system. From injection to antiseptic pills, chemotherapy till reproduction of human organs, all are using the services of chemistry directly or indirectly.

In beauty treatments a lot of chemicals are used like ammonia, hydrogen and bleach. A latest invention is to use chemical compounds to reduce the effect of aging. Although some of the chemicals have adverse effect on our health and specially skin yet it is the main ingredient to protect our body and life.

Industries and Transportation : Cloth Mills, Metal industry, Leather Factories, Petro chemical industries and the other industries make extensive use of chemicals in one or the other form which has developed chemistry as a service to the mankind.

The fuel used and gases formed during these processes harm human life sometimes but at the same time the procurement and treatments are also done by using chemicals. For example, petrol and diesel are distilled fuels formed after chemical reactions which cause pollution in the air. At the same time the anti pollutant methods also use chemical products.

Food Security and Agriculture : The refrigeration of food used for cold storage and Poly Urethanes Foam (PUF) used for vegetable preservation are the gases which have some adverse effect on the health.

Inorganic fertilizers are used to protect our crops from getting spoiled. The green revolution is an achievement in this area. Many of the fertilizers, pesticides increase the fertility of the soils. Even in food preservation techniques, grain mixing and crop maintenance the chemical compounds are used. The seed are mixed and modified with chemicals to enhance the production and earn profits.

Science and Technology : Apart from these major fields, the new innovative discoveries using services of chemistry are coming up like waste management systems, forensic science, crime investigation chemicals, telecommunication systems, Information technology and space missions.

In the modern world, no field is left untouched with the extended hand of chemistry. Chemistry is important because everything you do is chemistry! Even your body is made of chemicals. Chemical reactions occur when you breathe, eat, or just sit there reading. ○○○

Importance of Programming Languages in our Daily Life

Pankaj Kumar Gupta
Head, Deptt. of BCA

Computer programming is important today **because so much of our world is automated.** Humans need to be able to control the interaction between people and machines. Since computers and machines are able to do things so efficiently and accurately, we use computer programming to harness that computing power. Programming skills are important for speeding up the input and output processes in a machine. Programming is important to automate, collect, manage, calculate, analyze the processing of data and information accurately.

Programming skills are important to create software and applications that help computer and mobile users in daily life. Due to all these reasons, it's really important to learn how to use programming languages in our daily life.

Java, Java Script, C^{+}, C^{++}, PHP, Python, Swift, SQL, Ruby. etc. programming languages are the reasons behind the innovations in information technologies. If today we are seeing robots, artificial intelligence, machine learning, bitcoins, the blockchain, IOT (Internet of Things), Cloud Computing, etc. new technology and products in IT industry, then it's because of programming languages. A programming language is a method to communicate with machines in a systematic format. To understand programming languages first we need to start from programs. A program is a group of logical, mathematical, systematical and managed functions grouped together to perform a specific task. Just like there are various programs in the marriage such as Shanti, Barat Prasthan, Lagan, Vadhu Pravesh, reception, dham etc. Computer education in schools plays an important role in students' career development. Computer with the internet is the most powerful device than students can use to learn new skills and a more advanced version of current lessons. Universities and Schools are around the globe teaching student's basics of computers and the internet online and offline.

The uses of computers and the internet are growing day by day at high speed. Almost all businesses, companies, schools using computers for various official operations. New tech tools are coming that helping students to learn better.

Computers help students to draw creativity on the computer such as by using the windows paint programs. If students are taking Hindi Classes or poem writing then they can do it by typing in Hindi on computers. If students are taking Mathematical classes they can use Microsoft Excel application to solve and understand questions. ooo

Implementation of LAN using Wireless Technology

Mayank Sharma
Asst. Professor,
Deptt. of BCA

Wireless LANs offer the obvious advantage of avoidance of cabling costs, which can be especially important in a dynamic environment where there is frequent reconfiguration of the workplace. Additionally, wireless LANs provides LAN capabilities in temporary quarters where costly cabling would have to be abandoned. Each work station is fitted with a low power radio antenna.

The antenna is then connected to other hub antennae and to the servers peripherals, and hosts via cabled connections, which also connect together multiple hub antennae for transmission between rooms, floors, and buildings. In order to serve multiple workstations, spread-spectrum radio technology is used to make effective use of limited bandwidth. Spread spectrum involves scattering packets of a data stream across a range of frequencies, rather than using a single transmission frequency. A side benefit of spread-spectrum is thai of increased security, as the signal is virtually impossible to intercept.

1. Wireless LANs are a relatively immature technology.
2. Acquisition costs are not particularly low when compared to wired LANs, although reconfiguration costs are virtually non existent.
3. Frequency range - 900 MHz, 2 GHz, and 5 GHz bands.
4. A hub antenna is located at a central point where line-of-sight can be established with the various terminal antennae.
5. Bandwidth of a wireless radio LAN - 4 Mbps
6. The effective through pout is more in the range of 1 to 2 Mbps per hub.
7. The infrared transmission technique can also be used. PDA (Personal Digital Assistant) make widespread use of infrared to establish links with workstations and other PDA for data transfer. Enhanced infrared technology recently has been demonstrated at speeds of 1.5, 4, and even 155 Mbps.
8. Error performance and security are issues of some significance.

Some wireless LANs also use direct sequence transmission meaning that a signal is sent simultaneously over several frequencies increasing the chances that the signal will get through to the access hub.

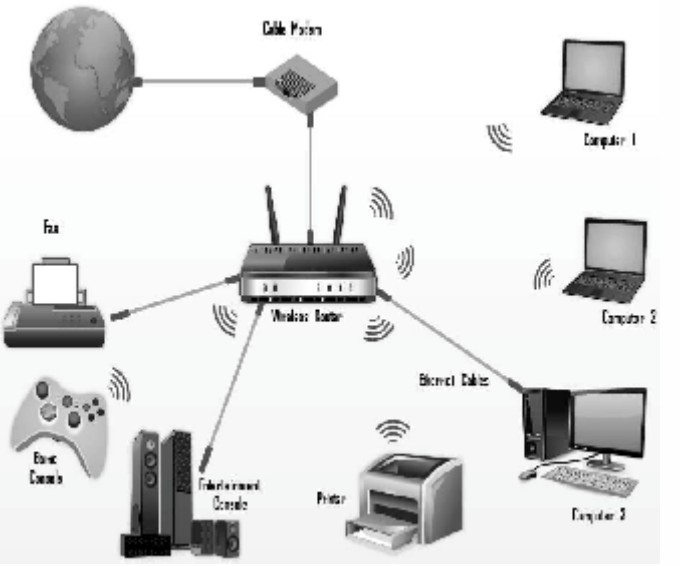

⚬ ⚬ ⚬

Impact of Artificial Intelligence in our daily life

Sachin Agrawal
Asst. Professor,
Deptt. of BCA

Google uses AI to ensure that nearly alt of the email landing in your inbox is authentic. Their filters attempt to sort emails into the following categories Primary, social, Promotions, Updates, Spam. The program helps your emails get organized so you can find your way to important communications quicker. Smart replies offer users a way to respond to emails with simple phrases like "Thanks!" or "Let's do it!" with the click of a button. Artificial intelligence makes it easier for users to locate and communicate with friends and business associates. Some of the ways you may be benefitting from Al on social media is **Linkedin**. AI is used to help match candidates to jobs with the hopes of creating better employee-employer matches. Al detects suicidal thinking patterns, the Al-powcred program sends mental health resources to the person and. Sometimes, also to his friends. Chat bots recognize words and phrases in order to (hopefully) deliver helpful content to customers who have common questions. Sometimes, chatbots are so accurate that it seems as if you're talking to a real person, Google search engines evolved over time by studying the linguistics used in searches. Its Al learns from results and adapts over time to better meet the needs of users. Amazon and other online retailers use Al to gather information about your preferences and buying habits. Then, they personalize your shopping experience by suggesting new products tailored to your habits. When you search for an item such as "Bose headsets," the search engine also shows related items that other people have purchased when searching for the same product. Music services use Al to track your listening habits. Then, they use the information to suggest other songs you might like to hear. For example. Spotify offers suggestions for new discoveries, new releases, and old favourites, based on your listening habits. Al is used by many banks to personalize your experience on their mobile apps. For example, account information in order to provide personalized alerts such as Bill Par reminders, Pre-overdraft alerts. Transfer prompts. Another way that banks use Al is by sending mobile alerts to help prevent against fraud. For example, if an unusually large transaction takes place in your account, you might get a warning alert on your phone. When apps like Google Maps calculate traffic and construction in order to find the quickest route to your destination, that's Al at work. Google Maps offers directions based on the fastest route according to the usual traffic. Ride-sharing service. Uber uses Al to determine how long it will take to get from your location to your destination. This lets you know when to expect a driver or food delivery. You might be surprised to discover how little flying your friendly pilot actually does in the cockpit. ○○○

"ROLE OF INFORMATION TECHNOLOGY FOR TEACHER EMPOWERMENT"

Dr. Krishna Chandra Gaur
Head, B. Ed. Deptt.

INTRODUCTION

Education can be provided in different ways but the ultimate aim of education is the transformation and the uplift of the man, the society, the nation and the transformation and strengthening of global concerns. In today's global world this assumption of education has become complicated and challenging. The cases of human life viz. knowledge, skill, aptitude, and values can be achieved or their development is possible only through education. Thus teaching occupies topmost priority in comparison to training and instruction and the effectiveness of teaching and teacher is a subject of universal importance. The need of the hour is to lay emphasis on determinants of effective teachers and the methods of making effective teacher. It will result in development of teacher empowerment which is affected by two most important factors of 21st Century i.e. globalization and ignorance technology.

WHAT IS TEACHER EMPOWERMENT ?

Accounting to teacher empowerment (2002). Bolin (1989, p. 82) defined teacher empowerment as 'investing teachers with the right to participate in the determination of school goals and policies and to exercise professional judgment about what and how to teach.'

Teacher empowerment is a process in which there is cultivation of ability, capacity, imagination. management, self-evaluation, and self-control of teachers keeping in account the changing concerns of education. Much, emphasis has been laid on relevancy of this process of empowerment. There has been origin of assumption of self-controlled learning, which arose when effects of constructive approach of teaching and learning came into light Teacher – empowerment is directly related to the capacity, efficacy and effectiveness of the teacher.

ROLE OF TECHNOLOGY IN EDUCATION

Teaching technology involves the mechanism of instructional process in the classroom situations. levels of teaching, theories of teaching, principal teaching operations and establishing relations between theories and teaching operations.

Teaching technology as a concept can be classified into four well-defined components. These components are : (i) Manpower, (ii) Methods, (iii) Materials, and (iv) Media

As a method, it implies making use of a few devices such as programmed learning, team teaching, micro teaching, personalized system of instruction, etc.

As materials, it comprises instructional materials, comprising programmed text books, manuals guides, text and other written/print materials, which expose to the learner the contents of these sources of materials.

As media, it implies audio or visual or both audio-visual media such as radio, tape recorders, films, and educational television as teaching aids to supplement effective teaching and to promote better learning.

Whatever be the method, material or media, it required manpower to operate/utilize in the teaching-learning environment. Thus, the four M's constitute a whole sequence of chains of inputs/ facilities in teaching technology.

Information technologies have played a vital role in higher education for decades. Television

started sending instruction to campuses and homes during the 1950s, before that, radio and film were used in a wide range of courses; and computers have populated labs in schools since the late 1960s. But only recently has interest in educational applications of information technology, which now includes the Internet and World Wide Web, reached nearly universal proportions. In the past, discussion of educational technology was limited mainly to academic and teaching journals; now almost every major newspaper has devoted at least a series of article or a Sunday supplement to "Learning in Cyberspace" touring technology as a savior for education.

ROLE OF INFORMATION TECHNOLOGY IN TEACHER EMPOWERMENT :

Our focus is on information technology as a tool to help to empower teachers. Teacher can use online Magazines and Journals, Computer - Mediated Communications Magazine Teachers can get reports on people, events, technology, public policy, "culture, practices, research and applications of computer- mediated communication. Many excellent books and online guides are available for teacher to help finding what's out there. Indexes, catalogs, and resource directories abound on the Internet, it is useful to teachers to define their Goals and identify their competition.

They can prepare lesson plan such as

- Acquiring the Material
- Scanning in text and images from paper copies
- Optical character recognition
- Uploading existing files to server
- Formatting the Material
- To translate materials to different format

FACTORS AFFECTING TEACHERS' USE OF ICT :

1. Time management problems;
2. Lack of support from the administration;
3. Teachers' perceptions;
4. Personal and psychological factors.

TEACHER EMPOWERMENT (TRAINING) PROGRAMS :

Teachers' Empowerment program is being designed to equip teachers with all sorts of arsenals for conceptual and practical teaching. The focus shall be mainly on the relevant syllabus topics. Emphasis will be given on designing the lecture required out of text data, presentation techniques, creating live practical models (with students involvement) without much work and time, task analysis methods, building in features which generates motivation for active participation and fun, keeping the lecture at learner's level sequencing the lecture content for logical and easy interpretation, incorporating students learning style, decision on how much content to be done at one go and accurately defining learners attention spans and ensuring that it is not exceeded, creating readiness lo team, techniques to be employed to ensure participation of every student, designing energizers and breaks, creating easy to update data, measuring learning level, handling responses and solving queries etc. The first section of the course shall deal with psychological aspects of the student - teacher relationship, the mode of delivery and other related general topics. The second section will have subject specific lectures. The lectures are held on each topic of the text book. The instructional notes on each topic shall be given to teachers after the lecture. The teachers are notified on suggested reading and updating websites on that particular topic. This ensures that the teacher can update the students on the latest. The entire exercise will be done, if available with the school with a lot of audio visuals, e Class and e Lab,

FACTORS THAT ENCOURAGE TEACHERS TO USE TECHNOLOGY :

Cox et al (1999) carried out a study examining

the factors relating to the uptake of ICT in teaching. The results showed that the teachers who are already regular users of ICT have confidence in using ICT, perceive it to be useful for their personal work and for their teaching and plan to extend their use further in the future. The factors that were found to be the most important to these teachers in their teaching were making the lessons more interesting, easier, more fun for them and their pupils, more diverse, more motivating for the pupils and more enjoyable. Additional more personal factors were improving presentation of materials, allowing greater access to computers for personal use, giving more power to the teacher in the school, giving the teacher more prestige, making the teachers' administration more efficient and providing professional support through the Internet.

Veen (1993) carried out a study 8 years earlier to describe the day-today practice of four teachers from a Dutch secondary school who were implementing ICT in their classrooms. The teachers were provided with a computer at home, and a computer and a liquid crystal display in their classrooms. School factors played an important role in how the teachers made use of their computers including the essential technical support of 20 hours per week and the positive attitude of the principal. However, teacher factors outweighed the school factors in explaining the teachers' use of computers. These teacher-level factors were grouped into two sub categories beliefs and skills. The most important of these were teachers' beliefs regarding what should be in the curricula (content) and the way in which their subjects should be taught (pedagogy). The skills that most influenced their uses of computers were those related to the teachers' competence in managing classroom activities; to their pedagogical skills; and, less importantly, to their computer-handling technical skills.

Several studies used survey data to identify factors likely to be in evidence in teachers who to some extent have integrated computers into their teaching practices. The three major factors involved in these 'accomplished' teachers' success were :

1. Teacher motivation and commitment to their students' learning and to their own development as teachers;
2. The support they experienced in their schools;
3. Access to sufficient quantities of technology.

In addition, these teachers worked in schools where hardware and access to resources were twice the average, were comfortable with technology and used computers for many purposes. They perceived that their teaching practices became more student centered with the integration of technology in their curriculum and they held higher expectations of their students.

Sheingold & Hadley's study also identified that the source of motivation for teachers to use technology included gains in learning and using computers for their own development as teachers. They foresaw wider success among teachers i ample technology, support, and time for teachers to learn the technology are provided, and if an academic and cultural structure exists to encourage teachers yo take an experimental approach to their work. These are all areas that created barriers to using technology identified in the earlier section.

CONCLUSION :

In the Global age Information Technology provides opportunity to know and understand the changing form of knowledge and information in every field. Teacher Empowerment in Information Technology gives really empower to him/her by getting new/changing information in every field of education and profession. Thus, Information Technology plays an important role in Teacher Empowerment in future scenario. ooo

Environmental Awareness

Dr. Sudha Upadhyaya
Asst. Prof., B. Ed. Deptt.

In an ideal world, entertainment would be regarded as what it is- entertainment - and wouldn't be valued more heavily than education, than science, than environmental awareness. ***- Chris Kluwe***

Introduction :

The international measures regarding environmental protection have been provided for, stated, or recognized at the level of international general or conventional law. May be some of you have seen posters, ads, and the like carrying the exhortation "Go Green!" But, what does it mean to "go green"? It takes a variety of forms, but essentially, going green means being mindful of the natural environment and making economic choices that aren't harmful to the earth. For example, this might mean purchasing a glass or ceramic water bottle instead of using disposable plastic water bottles. Plastic takes an incredibly long time to break down, and a significant percentage of plastic makes it to the oceans, where it kills plant and animal life. Going green might also involve using an all-natural hair-care product, instead of a can of aerosol spray containing toxic chemicals.

When people "go green," they are practicing ***environmental awareness.*** The term means exactly what you expect it to: being aware of the natural environment and making choices that benefit-rather than hurt-the earth, hi recent years, environmental awareness has gained increased attention. It is fair to say it has become a bit of a trend: from environ- mentally friendly tiny homes to organic food, environmental awareness is a hot topic. However, it is nothing new and it ought to be more than just a passing fad because of its importance. Let's dig deeper and learn more about environmental awareness. Other examples i.e. in homes, we have already cited a few examples of environmental awareness, but let's look at a few more. Environmentally friendly homes and building materials are a great place to start, hi recent years, advanced nations have become more aware of harmful building materials, such as asbestos, lead-based paint, lead pipes, and others. People can demonstrate environmental awareness by choosing to use building materials that are natural and that do not hurt the environment. Wood, stone, brick, copper, and other materials are excellent choices. For conserving energy and water, going along with the home theme, conserving energy is another way to demonstrate environmental awareness. One easy way to conserve energy is to turn off lights when not in use. Some people even install solar panels and other types of alternative energy sources. There is much potential for solar power to become mainstream and efficient in the future.

Going along with energy conservation is water conservation. People should be mindful to not waste water by leaving the faucet running while brushing teeth. Water is a valuable natural resource that we often take for granted, hi many parts of the world, clean water is scarce. Being mindful of this is a huge step in demonstrating environmental awareness. For Purchases, Recycling, and Activism, some people choose to buy clothing and products that contain natural fibers/materials, rather than synthetic ones. Obviously, recycling is another huge part of demonstrating environmental awareness. Still, others who are extremely passionate about this issue become activists. They

might march in protests or organize rallies/events. As we can see, environmental awareness takes many forms, and each person must figure out what specific practices work for them.

Environmental Awareness and Pollution Control through People's Participation :

Popular protest movements are recently on the rise in all parts of the State to counteract the increasing menace of air and water pollution by factories and the accumulation of solid waste and plastic in residential and urban areas. Threats to the environment by Persistent Organic Pollutants (POPs) and automobile pollutants are the concerns aired by some agencies like Delhi based Centre for Science & Environment through their publication, 'Down to Earth'. Pollution control through people's participation is on the main agenda of a number of organizations. (As per directions of the Ministry of Environment and Forest)

Programmes for Attitudinal Change in Children : The solution to many environmental problems lies in people's attitude towards environment. Be the awareness to keep our surroundings clean or the realization to conserve natural resources by re-using and re-cycling wherever possible, they all are attitudinal. On the surface it looks simple. But changing the attitudes of 130 crore people is not going to happen overnight. The best way to attempt to bring about a change in the attitudes in the society is through children as they have no vested interests and are impressionable. They are our future and the single most important influence in any family. The obvious place to start environmental education among the public is the classroom of schools/ colleges and centres of non-formal education. Curiosity of children is to be taken full advantage of by environmental education in schools. Its basic objective is not merely in building awareness about environment but also in assuring a positive reorientation in the attitudes of the students as well as general community and infusing in them a desirable environmental awareness, the Ministry of Environment & Forests, Government of India has decided to launch the National Green Corps Programme in all districts of our vast country. This programme of Ministry of Environment and Forests, Government of India, will be operated through a network of eco-clubs established in the schools in about 100 schools in each district, thereby covering around 50,000 schools in the country. The objective are to make children understand environment and environmental problems, to facilitate children's participation in decision making in areas related to environment and development.

Environmental Awareness through Exposure Visits : Students have very limited indoor and outdoor experience. Evaluation (to make the participants to reflect on their own obligation to contribute towards eco-restoration), quiz (to install love for nature) and action programme (nature club, reading room, tree planting, cultural programmes and demonstrations on environment, display boards) etc. are essential for environmental communication. Of course, indoor exhibits (e.g. collection of specimens in a museum) is stimulation to curiosity and is a challenge to conservation. But outdoor experience e.g. visit to a forest or factory compound, is essential for gaining first-hand knowledge.

As part of the Environmental Education Programme of CPREE, the school of environmental sciences of Mahatma Gandhi University has organized several exposure visits for the selected students, who are in charge of the environmental club of their schools, including visits to pecosystem and management of resources to the school children. Selected students and teachers from different schools have participated in the programme. The students were taken to the interior of the forest to evaluate the biodiversity and to familiarize them with medicinal plants and wild varieties. Habitat associations of each faunal assemblage were also described in detail and special classes were taken in identification and classifying the avifauna. WWF Uttar Pradesh has also done remarkable work in environmental orientation to school education. WWF Advisers' meetings were conducted at various times of the year in order to discuss the Wildlife Week celebrations, the Environmental Day celebrations and other such joint ventures and campaigns. This helped to bring the clubs closer to WWF-India. Nature Education Camps were conducted for children to provide first-hand experience for the nature club member of the State. The camps included field trips, nature trails, slide talks, quiz programmes, discussion etc. Beside this, this helped the children in highlighting the ecological importance of dry and wetland and mangrove forests and the need to protect them. Bird watch trips were conducted for the members of several Nature Clubs and they were taught how to become a good bird watcher.

Creating Public Interest in Natural History :

A number of organizations in Uttar Pradesh are engaged in the study of natural history and creating awareness in the conservation of fauna and flora. Uttar Pradesh natural History organization commenced its activities with a view to creating and promoting public interest in natural history of Uttar Pradesh, to encourage and conduct research in natural history and to give information and advice to individual and institutions engaged in similar pursuits, to create, purchase, construct or replenish a museum or museums, or other repositories for plants, animals (living and dead) and other collections necessary for the study of natural history. It used to produce education aids and an annual journal. Another organization working on this theme is Uttar Pradesh Association for Non-Formal Education and Development, it a non-profit, rural oriented society. Its mission is to eliminate illiteracy and to encourage environmental awareness and also to promote all round development of rural areas. Involvement in literacy campaigns, economic development, improving the standard of living of tribes and people in remote areas and increasing public awareness of environmental pollution are other environmentally related activities organized by them. The thrust area of conservation of Nature Trust is also conservation of nature and natural resources. Environmental related activities include organizing seminars leading to environmental awareness, bringing out environmental publications, preparation of slides on endangered species of animals, scientific study of wetlands, marine dolphins and fish ecosystems. Target groups are researchers, students of natural sciences and others.

Protest Groups against Deforestation as a Medium for Environmental Awareness :

People's protest against degradation has emerged as a powerful movement for ecological communication in different parts of Uttar Pradesh. The 'Chipko Andolan' under the leadership of Sunderlal Bahuguna against commercial feeling of trees in the Garhwal region of Uttar Pradesh during the 1970s also inspired movement throughout India. With courage and determination, the village women wrapped their

arms (hugging tees) around the trees to protect them. People's movement against depletion of ground water by the cocacola company in Plachimada is one of the latest in this series of protest. Conventions on environmental education, protest against deforestation and creating awareness among the public regarding the adverse effect of deforestation were also organized. Society for the Protection of Environment in Uttar Pradesh conducts survey of the sacred groves and organizes demonstration against the destruction of forests involving its target groups including student, teachers, policy makers and general community. National Society of the Friends of Trees (founded in 1957) is a registered non-governmental national organization with branches throughout India, established with the main mission of planting and protecting trees.

The objective of the society is preservation, protection; propagation and plantation of trees for the purpose of maintain ecological balance and the environmental all over India particularly urban areas. It is well known as a fellowship of tree lovers, which is devoted to inculcating a tree-sense amongst the people in general and students in particular. It has served the community for more than 60 years with the help of voluntary and devoted social workers. It is a non-profit, urban oriented citizen's action group, active in Uttar Pradesh and cities.

Extension Work and Campaign for Environmental Awareness :

Campaign for environmental communication is conducted by many agencies through extension work of their own activities. For example, many Grama Panchayats have to seek advice on planning their own solid waste disposal schemes after gaining confidence by seeing the setup of solid waste disposal scheme, planned and implemented by Uttar Pradesh Government. Likewise, help from CEE has been sought in resource mapping, watershed development and rain water harvesting by different panchayatas, schools and other establishments. Certain factories approached to CEE for expertise and advice in applying gasifier technology to their needs. Several batches of men and women have been trained for cultivation of mushrooms, making of soap and toiletry items. Quality fish seeds have been raised and given to fish farmers, after giving them proper instructions in fish farming. Field visits were conducted by CCE staff to evaluate the efficacy and sustainability of the above programmes. Review of existing land uses in the State and exploring the possibilities of taking steps for putting land to use according to their capabilities are the major extension activity of the Land Use Board. It is intended to take effective measures to protect good agricultural lands against depletion on account of soil erosion due to wind, water, sea, water logging and salinity, loss of fertility, urbanization and industrialization and review of agricultural laws in general with particular reference to the problems relating to conservation, development and management of lands.

Wild Life Protection Endeavours for Ecological Communication :

Of the several other organizations concerned with wild life protection. The World Wide Fund for

Nature- India (WWF India), formerly known as the World Wildlife Fund-India, today is the country's largest conservation NGO. With a network of 18 States and the Divisional offices spread across the country WWF has several programmes for the protection of wild life throughout India with a Secretariat in New Delhi. A coordinating International Secretariat, the WWF International, is located in Switzerland. WWF-India started life as a modest wildlife conservation organization with a focus on protecting particular species of wild fauna. Over the years, the perspective broadened to encompass conservation of habitats, ecosystems and support to the management of the country's protected areas. In 1989, the WWF Family worldwide articulated new Mission and Strategy statement in recognition of the increased complexity of the contemporary conservation challenges facing the world, adopted and broadened this mission statement to suit India's specific ecological & socio-cultural circumstances. The promotion of Nature conservation and environmental protection is the basis for sustainable and equitable development. The Uttar Pradesh office of World Wide Fund for nature- India is involved in conducting various educational activities for the promotion of nature conservation and environmental protection with the motto. 'Know, Love & Protect'. A major activity of WWF is celebration of Wild Life Week at different places and action plan for school nature clubs. Its mission also that to educate the public about the importance of our wild life and to create environmental awareness; to identify environmental problems and to suggest measures for solving them; to organize activities like seminars, workshops, etc. and to publish educational materials particularly for the youth.

Role of Schools Teach Environmental Awareness :

Schools must lead the conversation. Environmental awareness should be a part of the curriculum in all schools. This will encourage young people to engage in then-environment to protect it & can help communities become more environmentally aware.

Practical tips :

- Introduce the 3 R's: reduce waste, reuse resources, and recycle materials
- Organise tree planting days at school and tell them why trees are important to the environment
- Encourage children to switch off all appliances and lights when not in use
- Ensure taps are closed properly after you have used them and use water sparingly.

Teachers lead by Examples :

Most people remember things that people did more than what they said. Teaching children what it means to be environmentally aware is important but it will have a more lasting impact if teachers can lead by example.

- For teachers, when you see litter, pick it up even if it's not yours. Those little eyes might be watching you.
- Start a recycling system in your classroom and show the children how to use it and recycle their things.

Schools help Spread the Environmental Awareness :

Schools should encourage parents to share their environmental knowledge to their kids at home. It would be a good idea to let the children practice at home doing small tasks like picking up their trash and throwing the garbage, or teaching them to turn off the faucet when they're brushing their teeth or washing their hands with soap and not let water run down, or shut off the lights when they're done using them. This will help them be more knowledgeable about environmental issues.

Conclusion :

Environmental Education has been realized as a field of study that can help to mitigate future damage to the environment. It has since its initial stages received much political backup and most countries are actively promoting the inclusion of environmental education in school curricula. Environmental science which is a part of Environmental education is now an active field of study which that promotes higher studies and research to help understand the environment and work to reduce the impact of human development on it. School plays an important role in the formation of children's positive attitudes towards the environment. Text-books also play an important role in environmental education, because environmental problems have two distinct features : the quality and the quantity of environmental resources. In short, we can conclude that education plays a vital role to bring the awareness about environment.

***References* :**

Aroniwitz, S., & Giroux, H. (1991). Postmodern education : Politics, culture and social criticism. Minneapolis: university of Minnesota Press.

Ashley, M. (2000). Science : an unreliable friend to environmental education, Environmental Education Research, 6, 269-280.

Bateson, G. (1979). Mind and Nature. New York: Dutton.

Bechtel, R. & Churchman, A. (Eds.) (2002). Handbook of environmental psychology. New York : Wiley & Sons.

Bencze, J. L, (2000). Democratic constructivist science education : enabling egalitarian literacy and self actualization. Journal of Curriculum Studies, 32, 847-86.

Biesta, G., & Osberg, D. (2007). Beyond re/presentation : A case for updating the epistemology of schooling. Interchange,38,15-29.

Blum, L. (1994). Moral perception and particularity. New York : Cambridge Bonnett, M. (2004a). Retrieving nature. Education for a post-humanist age. Oxford: Basil Blackwell.

Bonnett, M. (2004b). Lost in space. Education and the concept of nature. Studies in Philosophy and Education, 23,117-130.

Bonnett, M. (2010). Environmental education and the concept of Nature. In E. The odoropoulou (Ed.), Environmental Ethics (pp. 139-158). Athens, Greece. ● ● ●

1. राजनीति में हिस्सा ना लेने का सबसे बड़ा दंड यह है कि अयोग्य व्यक्ति आप पर शासन करने लगता है।
2. एक विचार को प्रसार की उतनी ही आवश्यकता होती है जितना कि एक पौधे को पानी की आवश्यकता होती है। नहीं तो दोनों मुरझाएंगे और मर जायेंगे।
3. बुद्धि का विकास मानव के अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।
4. छीने हुए अधिकार भीख में नहीं मिलते , अधिकार वसूल करना होता है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

Use of Mathematics in Daily Life

Shiva Bharadwaj
B.Ed. II

According to some people, maths is just the use of complicated formulas and calculations which won't be ever applied in real life. But, maths is the universal language which is applied in almost every aspect of life. Yes! You read it right; basic mathematical concepts are followed all the time. You would be amazed to see the emerging of maths from unexpected situations. Let's read further to know the real-life situations where maths is applied.

Managing Time : Now managing time is one of the most difficult tasks which is faced by a lot of people. An individual wants to complete several assignments in a limited time. Not only the management, some people are not even able to read the timings on an analog clock. Such problems can be solved only by understanding the basic concepts of maths. Maths not only helps us to understand the management of time but also to value it.

Budgeting : How much should I spend today? When I will be able to buy a new car ? Should I save more? How will I be able to pay my EMIs? Such thoughts usually come in our minds. The simple answer to such type of question is maths. We prepare budgets based on simple calculations with the help of simple mathematical concepts.

Exercising : I should reduce some body fat! Will I be able to achieve my dream body ever? How? When ? Will I be able to gain muscles? Here, the simple concept that is followed is maths. Yes! based on simple mathematical concepts, we can answer to above-mentioned questions. We set our routine according to our workout schedule, count the number of repetitions while exercising, etc., just based on maths.

Sports : Maths improves the cognitive and decision-making skills of a person. Such skills are very important for a sportsperson because by this he can take the right decisions for his team. If a person lacks such abilities, he won't be able to make correct estimations. So, maths also forms an important part of the sports field.

Cooking : In your kitchen also, the maths is performed. For cooking or baking anything, a series of steps are followed, telling us how much of the quantity to be used for cooking, the proportion of different ingredients, methods of cooking, the cookware to be used, and many more. Such are based on different mathematical concepts. Indulging children in the kitchen while cooking anything, is a fun way to explain maths as well as basic cooking methods.

Driving : Operating a car or motorcycle is ultimately nothing but a series of calculations viz., How many kilometres needed to reach the destination? How much petrol in the car? How many kilometres per hour am I able to drive? How many kilometres per litre does my car get ? Oh no, I've hit a traffic jam, and now my pace has slowed, am I still going to make it to work on time? All of these questions are extremely easily answered with basic math skills.

Home Decorating : Interior designing seems to be a fun and interesting career but, do you know the exact reality ? A lot of mathematical concepts, calculations, budgets, estimations, targets, etc., are to be followed to excel in this field. Interior designers plan the interiors based on area and volume calculations to calculate and estimate the

proper layout of any room or building. Such concepts form an important part of maths.

Stitching : Just home decorating, math is also an essential concept of fashion designing. From taking measurements, estimating the quantity and quality of clothes, choosing the colour theme, estimating the cost and profit, to produce cloth according to the needs and tastes of the customers, math is followed at every stage.

Computer Access : Ever wondered how a computer works? How easily it completes every task in a proper series of action? The simple reason for this is the application of maths. The fields of mathematics and computing intersect both in computer science. The study of computer applications is next to impossible without maths. The concepts like computation, algorithms, and many more forms the base for different computer applications like PowerPoint, word, excel, etc. are impossible to run without maths.

Weather Forecasting : The weather forecasting is all done based on the probability concept of maths. Through this, we get to know about the weather conditions like whether it's going to be a sunny day or rainfall will come So, next time you plan your outing, don't forget to see the weather forecasting.

Math is a tool in our hands to make our life smoother. The more mathematical we are in our approach, the more rational would be our thoughts. It's time to understand the importance of the subject and enjoy the beauty of it. Math is a medium that should be embraced by everyone in all our walks of life. ooo

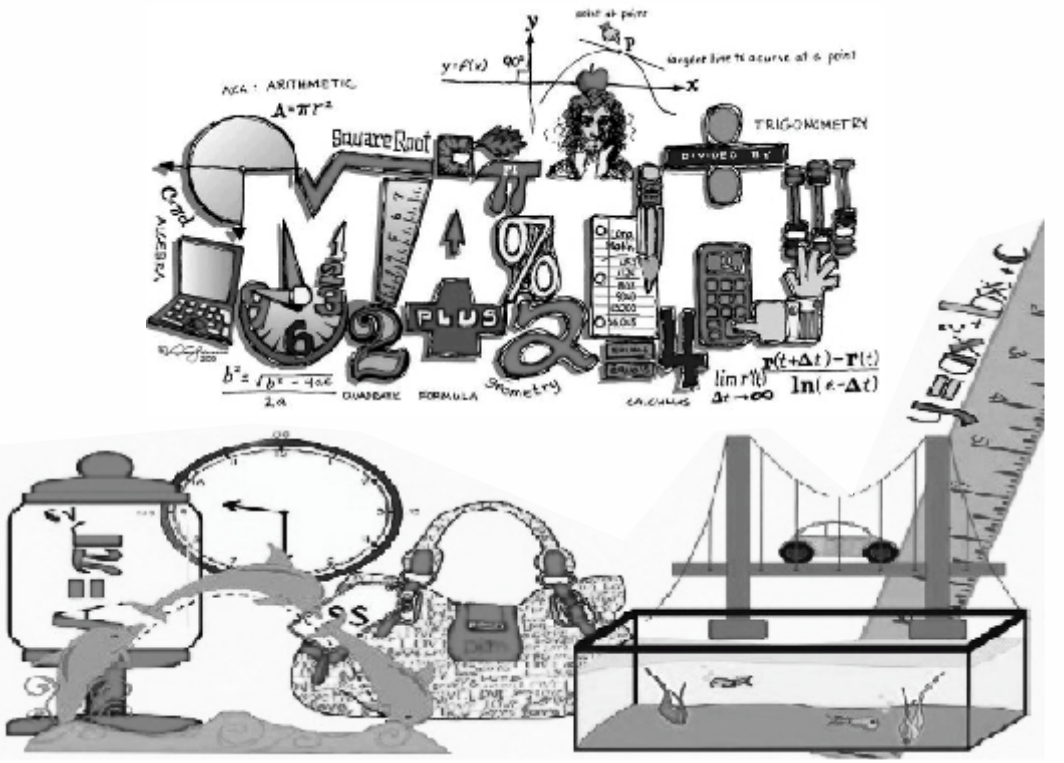

Way to Sage's Heaven (Sonnet)

Chandra Prakash
Faculty
Deptt. of English

In Heaven to be is aim of living,
For it there being only Nature,
Way that of full of secrets having.
Saints of ages made themselves aware.

As our sages uttered the place,
Where the living time for soul affixs,
Now it would be choice in race,
How much we contribute from overselves.

But there are footsteps to follow onto,
Even barriers interfere between you & heaven,
Actual both Kinds of Nature leads to,
Pain, suffering, sacrifice with hope lesson.

Oh! no, truth comes before me and reveals,
The secrets of Nature as livings or non-livings.

o o o

M assage to the Student's

Tungveer Singh
M.Sc. (Physics)

Dear yong students emulate these values in the interest of our nation, community, family and your self : Which are as mentioned here.

1. Save water and electric power.
2. Save food materials.
3. Save Petrol and other fuels.
4. Avoid our dose entertainment.
5. Avoid nereotic drugs.
6. Save yourself from deadly diseases.
7. Newer put off till tomorrow what you can do it today.
8. Work is worship.
9. Respect you elders.
10. Grow more plants and trees in your neighbour hood.
11. Be good and do good.
12. Have faith in almighty.
13. Avoid aping the west.
14. Keep the order in all your doings.
15. Try till you succeed.
16. Be healthy.
17. Concentrate on your studies.
18. Obey traffic rules.
19. Respect the national flag and anthem.
20. Respect all the religions equally. o o o

1. एक अच्छा इंसान हर जीव का मित्र होता है।
2. मौन सबसे सशक्त भाषण है। धीरे–धीरे दुनिया आपको सुनेगी।।
3. कमजोर कभी माफी नहीं मांगते। क्षमा करना तो ताकतवर व्यक्ति की विशेषता है।
4. किसी देश की संस्कृति लोगों के दिलों में और आत्मा में निवास करती है।
5. अपने ज्ञान पर जरूरत से अधिक यकीन करना मूर्खता है। यह याद दिलाना ठीक होगा कि सबसे मजबूत कमजोर हो सकता है और सबसे बुद्धिमान गलती कर सकता है।
6. अहिंसा मानवता के लिए सबसे बड़ी ताकत है। यह आदमी द्वारा तैयार विनाश के ताकतवर हथियार से अधिक शक्तिशाली है।

महात्मा गांधी

Value of Discipline

Tungveer Singh
M.Sc. (Physics)

The word "Discipline" comes form the words "disciple" which means "A Learner so discipline means learning code of conduct. It means learning to obey and observe certain rules which are necessary for peaceful life. Thus discipline means a training that teachers self-control, obedience, co-operation and order lines.

Discipline plays an important role in every walk of life. It is greatest law of nature. So It is essential for every person because it is the backbone of character. Discipline plays on important roll in school, family, factory, Office, military or nature.

Every object of nature works according to the fixed and set principles as the sum rises in the east and set in the west. The earth continuous moving round the sun. The various stars and planets have gravitational pull. ooo

Some facts of the life

Nikita Sharma
M.Sc. (Physics)

- Be confident but don't over, because over water cannot stay inside the bucket.
- Never blame a true person because he can forgive you but God cannot.
- Knowledge is same like a diamond which can rubbing gives more light but after placed in closed box becomes darken only.
- Well gives similar water for every plant but each have their own taste which comes from the seeds of sacramants.
- More knowledge for a non-deserving person is same like that tasty food which is useless for a satiate person.
- A painfull way is much better than that way on which you will loose your self respect.
- Never turn your face on that way at which you loose your self respect. ooo

"Risks"

Somya Bhardwaj
B.C.A. Ist year

To laugh is to risk appearing the fool.

To weep is to risk appearing sentimental.

To reach out for another is to risk involvement.

To expose feelings is to risk exposing your true self.

To place your ideas, your dreams, before a crowd is to risk their loss.

To love is to risk not being loved in return.

To live is to risk dying.

To hope is to risk despair.

To try is to risk failure.

But risks must be taken, because to greatest hazard in life is to risk nothing.

The person who risks nothing, does nothing, has nothing, and is nothing.

They may avoid suffering and sorrow, but they can't learn, feel, change, grow, love or live.

Changed by their attitudes, they are slaves, they have forfeited their freedom.

Only **a person who risks is free**.

ooo

What is Artificial Intelligent?

Keshav Kant Bhardwaj
B.C.A. Ist year

While man is the investor of machines, he is also highly dependent on the machines. After industrial revolution man has developed and progressed rapidly.

Machines and modern technology have given him comfort, facilities and leisure in life. From simple calculation to mass production of things everything we need in today's fast paced life is assisted by machines.

Man v/s Machine : The Products are finely made with the help of machines and have a better finish compared to the human made products. Machines can manufacture things in larger quantities compared to man and at greater speed. Whether it is clothing, footwear or jewelry, everything produced by machines has a good finish.

Artificial intelligence not only save lot of time and energy but is also a medium of entertainment for man. Today man can't imagine his life without smart phones, laptops, music systems, television sets, washing machines and other such equipment. Human and machines are not competitors, but humans collaborate with machines for more productivity. speed and accuracy. From communication to traveling everything has become simple and speedy.

Men seek help of the machines for all the activities he does. There are countless uses of Machines. Machines are responsible for rapid development in the present day world. Man is greedy animal who wants more and more. Even though machines have made the life of man easy. He has no time and patience to live peaceful life.

In a way, I think machines have made human life entertaining as well as dull as he has no time and patience to work hard or enjoy the nature beauty of the world.

The collaboration of Men and machines, I think is the best though it can have both positive as well as negative impact on mankind. ooo

Confidence

Sapna
B.Sc. IIIrd years

Confidence is not walking into a room thinking you are better than anyone. It's walking in knowing that you don't have compare yourself to anyone. Comparing yourself to another person that is not ever in your system. There is no thought of comparison. There is no competition with any other human. You are not above anyone, you are not below anyone, that's confidence.

When you can get to the place in your life where comparison is dead. Where you are good enough not to others but to yourself, that is confidence. And you can be good enough right now because you are good enough, right now. You might just need to change your mind set. Confidence can be developed in many ways. You can start with you physiology, your posture. If I asked you what a confident person looked like. Would you be able to tell me? of course you would. They look strong, sure of themselves. Anyone can develop confidence. Some might have to work on it harder than others because they have conditioned themselves into a lack of confidence for much of their life. But anyone can develop confidence even the majority of shy people have moments where they aren't shy like around people they trust may be family, friends. Moments where they can be them selves full. So the shyness is selective which means you can make confidence permanent. If you consciously decide to be the person and do the things you do.

A person with self-confidence can alone face the biggest problems or challenges in his/her life. ooo

About Nature

Khushi Tomar
B.Sc. IInd year

Nature is an important part of human life. The relation between man and nature is as a religion, that is, God. A person can feel happy and happy only in the shadow of nature. Nature has also been a favourite subject for poets, writers and painters since ancient times. Nature has given us valuable gifts. Water, air, land, trees, forest, mountains, river, sun, moon, sky is all the thing of nature.

We should enjoy its beauty without disturbing the balance of nature. It should be our endeavour to keep its appearance beautiful and prevent its destruction. So that we can enjoy it easily. God is the creator of this beautiful nature of ours. We must maintain balance without tampering with its original form. It should be enjoyed by acknowledging divine power and invisibility.

Poem on Education

Get education O! My friend O! My friend
Diamond candle is education
Came education went pollution
If you want in world promotion
So should keep in heart condition
When you meet who non-educated
A lot of problem them located
They feel thirsty for education
But how can they designation
So you learn and read by soul
Because you can self control
Parents have some dreams with you
Make new world respect with due. ○ ○ ○

Namami Gange

Chhaya Sharma
B.Sc. IIIrd year

The Modi government had launched the "Namami Gange" programme in 2015, for the period between 2014-15 and 31st Dec. 2020, in which integrates the effort to clean and protect the Ganga River in a comprehensive manner.

It's my destiny to serve Maa Ganga said PM Modi, when he was elected in May 2014 to parliament from Varanasi, situated on the banks of Ganga in U.P.

The river Ganga is important not only for its cultural and spiritual significance but also because it hosts more than 40% of the country's population. Addressing the Indian community at Madison Square Garden in New York in 2014, the PM had said, "If we are able to clean it. It will be a huge help for the 40 percent population of the country to so cleaning the Ganga is also an economic agenda.

To translate the vision, the Government launched an integrated Ganga conservation mission called "Namami Gange" to the pollution of Ganga River and revive the river. The union cabinet approved the action plan proposed by centre to spend Rs. 20,000 crores till 2019-2020 on cleaning the river, increasing the budget by four-fold and with 100% central share a central sector scheme.

Let us all join hands to save our national river Ganga which is a symbol of our civilization and is and epitome of our culture and heritage. ○ ○ ○

1. मैं बहुत मुश्किल से इस कारवां को इस स्थिति तक लाया हूं। यदि मेरे लोग, मेरे सेनापति इस कारवां को आगे नहीं ले जा सकें, तो पीछे भी मत जाने देना।
2. महात्मा आये और चले गये। परन्तु अछुत, अछुत ही बने हुए हैं।

–डॉ. भीमराव अम्बेडकर

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1.	श्री अजय गर्ग	अध्यक्ष
2.	डॉ. सुधीर कुमार	उपाध्यक्ष
3.	श्री एस. पी. एस. तोमर	सचिव
4.	श्री सुनील कुमार गुप्ता	संयुक्त सचिव
5.	श्री के. पी. सिंह	कोषाध्यक्ष
6.	श्री राजीव कुमार अग्रवाल	आन्तरिक लेखा परीक्षक
7.	डॉ. के. पी. सिंह	सदस्य
8.	कमाण्डर एस. जे. सिंह	सदस्य
9.	श्रीमती मनिका गौड़	सदस्य
10.	प्रो. गिरीश कुमार सिंह	प्राचार्य (पदेन सदस्य)
11.	श्री यजवेन्द्र कुमार	शिक्षक प्रतिनिधि
12.	श्री लक्ष्मण सिंह	तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि

महाविद्यालय परिवार

प्राध्यापक (वित्त पोषित)

1.	प्रो. गिरीश कुमार सिंह	प्राचार्य
2.	डॉ. यू. के. झा	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
3.	डॉ. प्रदीप कुमार त्यागी	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग
4.	डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग
5.	डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग
6.	श्री यजवेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
7.	डॉ. सीमान्त कुमार दुबे	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग
8.	श्री लक्ष्मण सिंह	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

प्राध्यापक (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री पंकज कुमार गुप्ता	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बी.सी.ए. विभाग
2.	श्री मयंक शर्मा	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
3.	श्री सचिन अग्रवाल	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
4.	डॉ. कृष्ण चन्द्र गौड़	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
5.	डॉ. सुनीता गौड़	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
6.	डॉ. भुवनेश कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग
7.	डॉ. सुधा उपाध्याय	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

8.	डॉ. वीरेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
9.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
10.	डॉ. तरूण बाबू	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
11.	डॉ. घनेन्द्र बंसल	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
12.	डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
13.	डॉ. राजीव गोयल	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
14.	श्री सत्य प्रकाश	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
15.	श्री देव स्वरूप गौतम	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
16.	श्री गुरूदत्त शर्मा	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
17.	डॉ. विशाल शर्मा	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
18.	श्री पंकज प्रकाश	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

प्राध्यापक (अंशकालिक)

1.	श्री गौरव जैन	अंशकालिक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
2.	श्री चन्द्र प्रकाश	अंशकालिक प्रवक्ता, अंग्रेजी विभाग
3.	श्रीमती ममता शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, अर्थशास्त्र विभाग
4.	श्री ललित कुमार शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
5.	श्री योगेन्द्र कुमार	अंशकालिक प्रवक्ता, गणित विभाग
6.	डॉ. राधा उपाध्याय	अंशकालिक प्रवक्ता, राजनीति विभाग
7.	श्री साहिल कुमार	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
8.	कु. निशा राजपूत	अंशकालिक प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग
9.	श्री योगेश कुमार लोधी	अंशकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग

शिक्षेणत्तर कर्मचारीगण (वित्त पोषित)

1.	श्री सुनील कुमार गर्ग	कार्यालय अधीक्षक
2.	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	कनिष्ठ सहायक
3.	श्री के. के. श्रीवास्तव	पुस्तकालय सहायक
4.	श्री पंकज शर्मा	प्रयोगशाला सहायक, भौतिकी विभाग
5.	श्री सुनील कुमार	प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग
6.	श्री लक्ष्मण सिंह	कनिष्ठ सहायक
7.	श्री नारायण देव मिश्र	कार्यालय दफ्तरी
8.	श्री डम्बर सिंह	अर्दली
9.	श्री गजेन्द्र सिंह	गैसमैन, रसायन विज्ञान विभाग
10.	श्री कपूर चन्द्र	चौकीदार
11.	श्रीमती पार्वती	पुस्तकालय परिचारिका

12. श्री सुनील कुमार निर्मल	प्रयोगशाला परिचर, भौतिकी विभाग
13. श्री महेश चन्द्र	सेवक, कार्यालय
14. श्री अमरनाथ राय	प्रयोगशाला परिचर, रसायन विज्ञान विभाग
15. श्री विजय पाल सिंह	माली
16. श्री राम अवतार	प्रयोगशाला परिचर, सांख्यिकी विभाग

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (स्ववित्त पोषित)

1. श्री सुरेश रावत	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
2. श्री दीपक कुमार शर्मा	लेखाकार
3. श्री आशीष कुमार	कनिष्ठ लिपिक
4. श्री जितेन्द्र कुमार	कनिष्ठ लिपिक
5. श्री पारस कुमार	प्रयोगशाला सहायक
6. श्री प्रमोद कुमार	प्रशासनिक सहायक
7. श्री चन्द्रपाल सिंह	अंशकालिक कम्प्यूटर ऑपरेटर
8. श्री विजय कुमार	दैनिक भोगी सेवक
9. श्री योगेश कुमार	दैनिक भोगी सेवक
10. श्री राम बाबू	दैनिक भोगी सेवक
11. श्री त्रिलोक चन्द्र	दैनिक भोगी सेवक
12. श्री विक्रम सिंह	दैनिक भोगी सेवक
13. श्री नेत्रपाल सिंह	दैनिक भोगी सेवक
14. श्री जितेन्द्र कुमार	दैनिक भोगी सेवक
15. श्री सुबोध कुमार	दैनिक भोगी सेवक
16. श्री नितिन कुमार	दैनिक भोगी सेवक
17. श्री साहब सिंह	दैनिक भोगी सेवक
18. श्री सुरेन्द्र पाल	दैनिक भोगी सेवक
19. श्री मान सिंह	दैनिक भोगी सेवक
20. श्री जगदीश कुमार	दैनिक भोगी सेवक
21. श्री सोनू कुमार	दैनिक भोगी सेवक
22. श्री राजीव	दैनिक भोगी सेवक
23. श्री राजू	दैनिक भोगी सेवक
24. श्री पंकज	दैनिक भोगी सेवक

विभिन्न समितियाँ

प्राचार्य परिषद्

1. प्रो. गिरीश कुमार सिंह (प्राचार्य)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. आर.के. अग्रवाल
4. डॉ. चन्द्रावती
5. श्री यजवेन्द्र कुमार
6. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
7. श्री लक्ष्मण सिंह
8. श्री पंकज कुमार गुप्ता
9. डॉ. के. सी. गौड़
10. डॉ. भुवनेश कुमार

सूचना एवं प्रौद्योगिकी समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री सचिन अग्रवाल
3. श्री सुनील कुमार गर्ग
4. श्री दीपक कुमार शर्मा

क्रीड़ा समिति

1. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री मयंक शर्मा
5. श्री गुरूदत्त शर्मा
6. डॉ. विशाल शर्मा

अनुशासन समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (मुख्यानुशासक)
2. डॉ. आर. के. अग्रवाल
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री लक्ष्मण सिंह
6. डॉ. विशाल शर्मा
7. श्री के. के. श्रीवास्तव

एंटी रैगिंग समिति

1. श्री यजवेन्द्र कुमार (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
3. डॉ. वीरेन्द्र कुमार
4. डॉ. तरूण बाबू
5. डॉ. राजीव गोयल

आन्तरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (समन्वयक)
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री पंकज कुमार गुप्ता
6. डॉ. भुवनेश कुमार
7. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
8. डॉ. आलोक गोविल (सामाजिक कार्यकर्ता)
9. श्री सुनील कुमार गर्ग

छात्र कल्याण समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री लक्ष्मण सिंह
4. डॉ. के. सी. गौड़
5. श्री सत्य प्रकाश

शिकायत–निवारण प्रकोष्ठ

1. श्री यजवेन्द्र कुमार (प्रभारी)
2. श्री पंकज कुमार गुप्ता
3. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
4. डॉ. भुवनेश कुमार
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

भवन निर्माण समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
4. श्री सुनील कुमार गर्ग

महाविद्यालय प्रकाशन समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
2. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
3. श्री लक्ष्मण सिंह
4. डॉ. भुवनेश कुमार
5. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह

चिकित्सा समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. आर. के. अग्रवाल
3. डॉ. घनेन्द्र बंसल
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह
5. श्री देवस्वरूप गौतम

यू. जी. सी. अनुदान परियोजना समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री लक्ष्मण सिंह
6. श्री के. के. श्रीवास्तव

विकास कोष समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

महिला संरक्षण समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह

पुस्तकालय समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री यजवेन्द्र कुमार
3. श्री लक्ष्मण सिंह
4. श्री के. के. श्रीवास्तव

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. श्री लक्ष्मण सिंह
5. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह
6. श्री गुरूदत्त शर्मा
7. डॉ. राधा उपाध्याय

अन्य विभागीय प्रभारी

1. वि. वि. परीक्षा, गृह परीक्षा, विद्युत व्यवस्था एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र	डॉ. आर. के. अग्रवाल
2. नोडल अधिकारी, दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति	डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी. सी.)	श्री यजवेन्द्र कुमार
4. राष्ट्रीय सेवा योजना (एन. एस. एस.)	श्री लक्ष्मण सिंह
5. व्यवसाय परामर्श इकाई	श्री लक्ष्मण सिंह

सफलता के सूत्र (संकलित)

- सफलता का कोई मंत्र नहीं है, यह तो सिर्फ परिश्रम का फल है।
- डर दो पल का होता है, निडरता आपके साथ जिंदगी भर रहती है।
- शिक्षक केवल सफलता का रास्ता बता सकता है, लेकिन उस रास्ते पर चलना आपको ही पड़ेगा।
- अपने मित्रों का चुनाव संभल कर करें क्योंकि यही आपके सुख-दुःख में काम आएंगे।
- लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने रास्ते खुद बनाएं, दूसरों के रास्ते पर न चलें।
- अगर आप किसी को दिखाने के लिए पढ़ रहे हैं, तो आप अपने आपको धोखा दे रहे है।
- जब तक आप किसी कार्य को करना प्रारंभ नहीं करेंगे, वह संपूर्ण नहीं होगा।
- गुरू केवल आपको शिक्षा दे सकता है, उसका उपयोग कैसे करना है यह आपके ऊपर निर्भर करता है।
- पूरा संसार एक मंच है, जहां पर सभी लोग अपनी-अपनी कला दिखा रहे हैं।
- बड़ों का आशीर्वाद लें, क्योंकि अंत तक वही आपके साथ रहता है।
- उबड़-खाबड़ रास्तों से नहीं घबराने वाला ड्राइवर मंजिल तक पहुंच पाता है।
- अगर आप कल अच्छा चाहते हैं, तो आज आपको कठिन परिश्रम करना होगा।
- सत्य कभी छुपता नहीं, यह देर सवेर आंखों के आगे आ ही जाता है।
- असल मायनों में जिंदगी वही है, जो टूट कर भी बिखरती नहीं।
- अच्छे कार्य की शुरूआत करने के लिए किसी मंदिर या मस्जिद में जाने की आवश्यकता नहीं होती।
- हमेशा याद रखें, आप ही अपनी पहचान बना सकते है और आप ही अपनी पहचान बिगाड़ सकते हैं।
- समय पर किया गया हर कार्य सफल होता है।
- किसी ताकतवर को हराने के लिए हमेशा ताकत की नहीं ज्ञान की भी जरूरत होती है।
- अगर आप दूसरों का सम्मान करेंगे, तो आपको भी बिना मांगे सम्मान मिलेगा।
- एक बात हमेशा याद रखें जिंदगी आपको हर दिन एक नया मौका देती है।
- समय के साथ हमेशा चलते रहें, नहीं तो लोहे की तरह आप में भी जंग लग जाएगा।
- शिक्षक से सवाल करना अच्छी बात है क्योंकि यह आपको ज्ञान के मार्ग की ओर ले जाता है।
- अगर आप किसी कार्य को करने का दृढ़ निश्चय कर लें, तो फिर आपको कोई नहीं रोक सकता है।

- शिक्षण एक बहुत ही महान पेशा है जो किसी व्यक्तिके चरित्र, क्षमता, और भविष्य को आकार देता है। अगर लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद रखते हैं, तो मेरे लिए ये सबसे बड़ा सम्मान होगा।
- अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलो।
- विज्ञान मानवता के लिए एक खूबसूरत तोहफा है, हमें इसे बिगाड़ना नहीं चाहिए।
- सपने वो नहीं है जो आप नींद में देखें, सपने वो हैं जो आपको नींद ही नहीं आने दें।
- महान सपने देखने वालों के सपने हमेशा पूर्ण होते हैं।

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय

URGA PRASAD BALJEET SINGH (P.G.)

TAGORE BHAV

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय

ISBN : 978-81-956074-5-7